राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

मूल्य: ₹15/-

उभरता बिहार

सच्चाई, ऊर्जा, सकारात्मक विचार

RNI No. BIHHIN/2007/22741

वर्ष : 13, अंक : 11, मई 2021

www.ubhartabihar.com | Email : ubhartabihar@gmail.com

बंगाल में नहीं गली मोदी-शाह की दाल

दीदी ने चला दी न्यूटन वाली चाल

HAPPY Eid-Ul-Fitter TO YOU AND YOUR FAMILY
LAVANYA
ESTATE PRIVATE LIMITED
Most Trusted & Fastest Growing Real Estate Company
Shop No. 59-60, 1st Floor, Adharsheela Complex, Near R.B.I
South Gandhi Maidan, Patna, Bihar, Mob: 7545066929, 7488100729
Eid
Mubarak
WASIF ALI
Director

बिहारवासियों को ईद की हार्दिक बधाई
मनोज कुमार तिवारी
कमांडेंट बीएसएपी-8
बेगूसराय

बिहारवासियों को ईद की हार्दिक बधाई
उपेन्द्र प्रसाद
अधिवक्ता
पटना उच्च न्यायालय
पटना

बिहारवासियों को ईद की हार्दिक बधाई
प्रभात कुमार चौधरी
समाजसेवी
एवं
संरक्षक
उभरता बिहार

HAPPY EID TO YOU AND YOUR FAMILY
SHIV SHANKAR VIKRANT
Director
KRRISHAY BIOFUELS (KBPL)
KBPL

उभरता बिहार

वर्ष : 13, अंक : 11, मई 2021

RNI No. BIHHIN/2007/22741

संपादक

राजीव रंजन

छायाकार

विनोद राज

विधि सलाहकार

उपेन्द्र प्रसाद

चंद्र नारायण जायसवाल

साज-सज्जा

मयंक शर्मा

प्रशासनिक कार्यालय

सी-49 हाऊसिंग कॉलोनी, लोहियानगर
कंकड़बाग, पटना - 800020
फोन : 7004721818

Email : ubhartabihar@gmail.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक रांजीव रंजन द्वारा कृत्या पब्लिकेशन, लंगरटोली, बिहार से मुद्रित एवं सी-49 हाऊसिंग कॉलोनी, लोहियानगर, कंकड़बाग, पटना - 800020 से प्रकाशित।

संपादकः राजीव रंजन

सभी कानूनी विवाद पटना न्यायिक क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत निपटाये जायेंगे। लेखकों द्वारा व्यक्त विचार उनके अपने है। इसकी जिम्मेदारी उनकी है एवं इसके लिये संपादक, प्रकाशक की सहमति अनिवार्य नही है। सामग्री की वापसी की जिम्मेवारी उभरता बिहार की नहीं होगी। इस अंक में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वोधिकार सुरक्षित है। कुछ छाया चित्र और लेख इंटरनेट, एजेंसी एवं पत्र-पत्रिकाओं से साभार। उपरोक्त सभी पद अस्थायी एवं अवैतनिक है। किसी भी आलेख पर आपत्ति हो तो 15 दिनों के अंदर खंडन करें।

नोट : किसी भी रिपोर्टर द्वारा अनैतिक ढंग से लेन-देन के जिम्मेवार वे स्वयं होंगे।

संरक्षक

डॉ. संतोष कुमार
अखिलेश कुमार जायसवाल
प्रभात कुमार चौधरी
डॉ. राकेश कुमार

राहुल वाली 'गलती' मोदी ने कर दी और बीजेपी के साथ बंगाल में खेला हो गया 09

कुछ बेहतर करने के लिए खुद पर ... 16

सबरीमाला मंदिर : जहां देव ज्योति... 20

मातृछाया ऑर्थो एण्ड हेल्थ केयर

Consultant Trauma & Spinal Surgeon
हड्डी, जोड़, रीढ़, नस एवं गठिया रोग विशेषज्ञ

विशेषता:
1. यहां हड्डी रोग से संबंधित सभी रोगों का इलाज होता है।
2. मशीन के द्वारा टूटे-हड्डी बैठाने की सुविधा उपलब्ध है।

विशेषता:
3. स्पाइन सर्जरी की भी सुविधा है।
4. Total Joint Replacement विशेषज्ञों की टीम के द्वारा सस्ते दरों पर की जाती है।

24 HRS.
ORTHO & SPINAL EMERGENCY

Dr. Rakesh Kumar
M.B.B.S. (Pat), M.S. (Pat), M.Ch, Ortho, Fellowship is Spine Surgery
Indian Spinal Injury Centre, New Delhi

G-43, P.C. Colony, Kankarbagh, Patna-20, Mob. - 7484814448, 9504246216

राजीव रंजन
संपादक
rradvocate@gmail.com

कोरोना संक्रमण की दूसरी लहर के बीच देश के 5 राज्यों पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, असम, केरल, और पुडुचेरी में विधानसभा आम चुनाव सम्पन्न हुआ। इस चुनाव में पश्चिम बंगाल में टीएमसी की वापसी तय मानी जा रही थी और चुनाव परिणाम भी उसी प्रकार रही। पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी ने 10 वर्षों से सरकार चला रही है। यह जीत उनकी तीसरी और हैट्रिक है। टीएमसी ने 215 सीटें जीत कर 1972 से चली आ रही 200 से अधिक जीतने की परम्परा कायम रखी हैं। यह परम्परा वर्ष 2001 में टूटी थी जब लेफ्ट को 194 सीटें आई थी।

टीएमसी की बड़ी जीत होने के बावजूद ममता बनर्जी ने इस बार अपनी सीट नहीं बचा पायी और मात्र 1736 वोटों से हार गई। बीजेपी ने इस बार की चुनाव तमिलनाडु में हार गई है। यहाँ बीजेपी गठबंधन के जगह टीएमसी की जीत हुई है। लेकिन असम में अपनी सरकार बनाने में कामयाब रही है। केरल में भी सत्तारूढ़ पार्टी की जीत हुई है, जबकि पुडुचेरी में एनडीए ने अपनी जीत कायम रखी है।

कोरोना महामारी में सरकार ने 1 मई, 2021 से 18 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों को वैक्सीन देने की मंजूरी दी है। इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च ने बताया है कि कोवैक्सिन डबल म्यूटेंट कोरोना वैरिएंट को भी खत्म कर देती है। इंस्टीट्यूट ने अपनी स्टडी के आधार पर बताया है कि ब्राजील वैरियंट, यूके वैरियंट और साउथ अफ्रीकन वैरियंट पर भी यह वैक्सीन असरदार है और उन्हें भी यह समाप्त कर देती है।वैक्सीन के ट्रायल में स्वदेशी कोवैक्सिन का नतीजा भी काफी बेहतर निकला है। फेज-3 के क्लिनिकल ट्रायल के आखरी नतीजे के अनुसार यह वैक्सीन 81 फिसदी असरदार साबित हुआ है। इस वैक्सीन को सरकार ने जनवरी के पहले सप्ताह में इमरजेंसी अप्रुवल दिया था। देश में टीकाकरण इस वर्ष 16 जनवरी को शुरू हुआ था। उस समय से अब तक लगभग 15 करोड़ लोगों को टीका लगाया जा चुका हैं। दुनियाँ में सबसे तेज टीकाकरण बाले देशों में भारत पहले नम्बर पर है।

बंगाल में नहीं गली मोदी-शाह की दाल

दीदी ने चला दी न्यूटन वाली चाल

भाजपा के बंग का मोह हुआ भंग; ममता खुद हारी, पार्टी को जिताया; पहली बार लेफ्ट-कांग्रेस को एक भी

सीट नहीं; आजादी के बाद पहली बार बंगाल में वामदलों को एक भी नहीं मिली सीट

सबसे बड़ा उलटफेरः पार्टी जीती,मगर ममता खुद नंदीग्राम में 1957 वोटों से हारी,अब जाएंगी कोर्ट

गौतम सुमन गर्जना

3 मई रविवार को 5 राज्यों के चुनावी नतीजे सामने आए, मगर पूरे देश की निगाह सिर्फ पश्चिम बंगाल की रोचक लड़ाई पर टिकी हुई थी.उम्मीदों के अनुरूप बंगाल के नतीजों में भी खेला हो गया.यहां पर दीदी द्वारा चली गई न्यूटन वाली चाल के आगे बंगाल में नरेंद्र मोदी व अमित शाह की दाल नहीं गल पाई और राज्य की 292 सीटों में से ममता दीदी की तृणमूल कांग्रेस ने प्रचंड बहुमत हासिल करते हुए 215 सीटें हासिल कर ली.जबकि पहली बार नरेंद्र मोदी व अमित शाह के बल पर भगवा सरकार का दावा करने वाली भाजपा 77 सीटों पर ही सिमट कर रह गई. मगर इस कहानी का असली ट्वीट रहा नंदीग्राम सीट से खुद ममता बनर्जी का हार जाना. ममता बनर्जी खुद नंदीग्राम में 1957 वोट से भाजपा में गए अपने ही पुराने सिपहसालार शुभेंदु अधिकारी से हार गई. हालांकि इस नतीजे के बाद मीडिया से बातचीत के क्रम में ममता ने कहा कि लोगों का फैसला उन्हें स्वीकार है,लेकिन उनके पास इन नतीजों में गड़बड़ी

> उम्मीदों के अनुरूप बंगाल के नतीजों में भी खेला हो गया.यहां पर दीदी द्वारा चली गई न्यूटन वाली चाल के आगे बंगाल में नरेंद्र मोदी व अमित शाह की दाल नहीं गल पाई और राज्य की 292 सीटों में से ममता दीदी की तृणमूल कांग्रेस ने प्रचंड बहुमत हासिल करते हुए 215 सीटें हासिल कर ली.जबकि पहली बार नरेंद्र मोदी व अमित शाह के बल पर भगवा सरकार का दावा करने वाली भाजपा 77 सीटों पर ही सिमट कर रह गई.

की सूचना है.उन्होंने इस नतीजे के खिलाफ कोर्ट जाने की बात कही.तृणमूल कांग्रेस का प्रदर्शन न सिर्फ 2016 के विधानसभा चुनाव से बेहतर रहा, बल्कि वोट शेयर के मामले में यह पार्टी का अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन साबित हुआ है.2016 में पार्टी को 211 सीटें मिली थी, इस बार 215 मिली है.पार्टी का वोट शेयर 48.02% रहा है, जबकि 2016 में यह 44% ही था.सीटों के मामलों में भाजपा का प्रदर्शन भी 2016 की 3 सीटों के मुकाबले बहुत सुधरा है,मगर पार्टी 2019 के लोकसभा चुनाव के प्रदर्शन की बराबरी भी नहीं कर पाई.2019 में भाजपा ने 121 से ज्यादा सीटों पर बढ़त बनाई थी.

"दो तिहाई बहुमत से जीती तृणमूल : तृणमूल कांग्रेस का अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन, वोट शेयर 2016 के मुकाबले करीब 2.6% बढ़ गया, मुस्लिम बहुल 49 सीटों में से 36 तृणमूल ने जीती,माना जा रहा है कि मुस्लिम वोटों का ध्रुवीकरण हुआ, हिंदू वोटों का नहीं, भाजपा ने 2019 लोकसभा चुनाव में 121 से ज्यादा विधानसभा सीटों पर बढ़त बनाई थी बढ़त, इतनी भी नहीं जीती"

भाजपा को राज्यसभा में भी खास लाभ नहीं

भाजपा को राज्यसभा में बहुमत के लिए 12 सांसद चाहिए.बंगाल में 75 सीटों के बावजूद खास लाभ नहीं है.राज्य के किसी भी राज्य सभा सांसद का कार्यकाल 2023 से पहले खत्म नहीं हो रहा.तब भी 2 सदस्य बढ़ सकते हैं.

मुस्लिम बहुल जिलों में दीदी का ही दबदबा

बंगाल में मालदा-मुर्शिदाबाद उत्तर व दक्षिण दिनाजपुर जिलों को मुस्लिम बहुल माना जाता है.इन 4 जिलों में 49 विधानसभा सीटें आती है, जिनमें 36 तृणमूल कांग्रेस के ही खाते में गई है.संकेत स्पष्ट है कि अल्पसंख्यक दीदी के ही साथ रहे.

कोलकाता जैसे शहरी इलाकों में भाजपा साफ

कोलकाता समेत बंगाल के शहरी इलाकों में भाजपा को एक भी सीट नहीं मिल पाई है.दार्जिलिंग-कूचबिहार, जलपाईगुड़ी आदि में उसे सफलता रुर मिली.ट्रेंड बताते हैं कि शहरी वोटर भाजपा से दूर रहे.

अब इन 4 बातों पर गौर कीजिये कि आखिर बंगाल में ऐसा क्यों हुआ...?

■ राज्यों के चुनाव में क्षेत्रीय अस्मिता सर्वोपरि, दिल्ली के नेताओं ने भीड़ जुटाई ,पर उसे वोट में नहीं बदल पाए : भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व ने चुनाव में पूरी ताकत झोंक दी.खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी,गृहमंत्री अमित शाह और अन्य केंद्रीय मंत्रियों की खूब रैलियां हुई.भीड़ तो जुटी, मगर जमीनी स्तर पर इस भीड़ को भाजपा वोटों में नहीं बदल पाए.यहां की जनता ने केंद्रीय चेहरों के बजाय स्थानीय अस्मिता को चुना.

■ ममता के सामने केंद्रीय नेताओं की फौज उतरी, पर मुख्यमंत्री पद का स्थानीय चेहरा नहीं देना भारी पड़ा : तृणमूल कांग्रेस का पर्याय ममता बनर्जी है.एक जुझारू नेत्री की उनकी छवि इस चुनाव में और भी मजबूती से सामने आई. जबकि भाजपा ने उनके सामने मुख्यमंत्री के तौर पर किसी के नाम की घोषणा ही नहीं की,इसकी वजह से स्थानीय कार्यकर्ता और जनता दोनों ही असमंजस में रहे.

■ मुस्लिम वोटों का ध्रुवीकरण तृणमूल के पक्ष में रहा,ममता पर निजी हमलों के कारण हिंदू वोट भी उनके साथ हो गए: भाजपा ने सांप्रदायिक तुष्टीकरण को मुद्दा बनाया.उनका इरादा था कि इसी बहाने ध्रुवीकरण से हिंदू वोट उनके साथ आ जाएगा पर ध्रुवीकरण मुस्लिम वोटों का हुआ और वह तृणमूल के पक्ष में चला गया. इधर ममता बनर्जी पर पार्टी के निजी हमलों को लोगों ने बंगाली अस्मिता पर हमले की तरह देखा, परिणामस्वरूप हिंदू वोट भी ममता के साथ हो गए.

■ वामदलों और कांग्रेस के कमजोर रहने का नुकसान भी भाजपा को हुआ, ये मजबूत होते तो तृणमूल को घाटा होता : संभवत पहला चुनाव था, जब लेफ्ट पार्टियां पूरे चुनावी नक्शे से ही नदारद दिखे.कांग्रेस ने भी नहीं के बराबर चुनाव प्रचार किया, ये दल यदि राज्य में मजबूती से उतरते तो ममता बनर्जी को नुकसान होता,लेकिन ऐसा नहीं हुआ.नतीजा यह निकला कि वाम दल और कांग्रेस शुन्य पर आ गए, मगर तृणमूल को कोई घाटा नहीं हुआ.

शेष चार राज्यों में क्या हुआ चुनावी परिणाम

■ तमिलनाडु की सत्ता को डीएमके ने अन्नाद्रमुक से छीना : स्टालिन के नेतृत्व में डीएमके+ ने तमिलनाडु में 154 सीटें जीती, इनमें डीएमके ने अकेले 127 सीटों पर परचम लहराया है.सहयोगी कांग्रेस ने 16 सीटें जीती और सत्तारूढ़ अन्नाद्रमुक 80 सीटों पर ही सिमटकर रह गई.

■ केरल में 50 साल बाद एलडीएफ लगातार दूसरी बार सत्ता में रही : पी.विजयन दूसरी बार सत्ता बचाने में सफल रहे हैं.50 साल बाद राज्य में एलडीएफ ने लगातार दूसरी बार सरकार बनाई.

■ असम में भाजपा+को 78 सीटें आई और फिर सोनोवाल की सरकार बनी : 5 राज्यों में भाजपा के लिए सबसे बेहतरीन व सुकून भरे नतीजे असम में ही रहे.यहां सर्वानद सोनोवाल के नेतृत्व में 78 सीटें जीतकर सरकार बनाने में व भाजपा सफल रही हे.

■ पुडुचेरी में एनडीए को मिले निर्णायक वोट : राज्य की 30 में से 29 सीटों के जारी नतीजों में एनडीए को 15 सीटें मिली है, जबकि यूपीए ने 7 सीटें जीती है.वहीं 5 सीटों पर निर्दलीय उम्मीदवारों ने कब्जा जमा लिया.

चुनाव बाद इस तरह के नतीजों को देख बंगाल में जगह-जगह हो रही हिंसा में 11 की मौत,गृह मंत्रालय ने मांगी रिपोर्ट, राज्यपाल ने डीजीपी को किया समन और ममता ने की शांति की अपील

विधानसभा चुनाव 2021 के परिणाम और अप्रत्याशित नतीजों के बाद बंगाल मे हिंसा भड़क चुकी है,जिसे देखकर ऐसा लगता है कि पुरा तंत्र व ताकत लगाने के बाद भी अप्रत्याशित पराजय हाथ लगने से सत्ता काबिज की चाह रखने वाले राजनीतिज्ञों को ममता बनर्जी की जीत हजम नहीं हो रही.इसीलिए महज अपनी कुत्सित राजनीतिक दाल गलाने की फिराक में इस हिंसक वाली घटना का ठीकरा ममता बनर्जी के मत्थे फोड़ रही है.यहां पर सवाल यह उठता है कि विपक्षियों के साम-दाम, दंड-भेद व सारी ताकत एवं नुस्खे अपनाने के बाद भी जब ममता बनर्जी ऐतिहासिक रुप से जीत गई, तो फिर भला वह क्यों इस तरह की हिंसक घटनाओं को अंजाम देंगी या दिलाएंगी...? आखिर वह ऐसा कराकर खूद को बदनामी के कूंओं में गिराकर खूद को अस्थिर क्यों करेंगी.इस तरह की हरकतें तो शायद वही करेंगे, जो इन हरकतों से लाभान्वित होने की इच्छा पाल रखे हों.

बहरहाल, इस हिंसा व आगजनी पर राज्यपाल जगदीप धनखड़ ने डीजीपी को समन कर गृह सचिव

से रिपोर्ट तक मांग ली.ममता बनर्जी ने राज्य के लोगों से शांति की अपील करते हुए किसी तरह की हिंसा नहीं करने को कहा. बावजूद इसके हिंसा का दौर थमने का नाम नहीं ले रहा है.इस हिंसा में विभिन्न हिस्सों में हिंसक घटनाएं घटी और इन घटनाओं में 11 लोगों के मारे जाने की खबर आई. इसपर भाजपा का आरोप है कि इनमें नौ उसके कार्यकर्ता हैं,जबकि ब र्द्धमान में एक टीएमसी और उत्तर 24 परगना में एक आइएसएफ के कार्यकर्ता की जान चली गई. ज्यादातर घटनाओं में आरोप तृणमूल कांग्रेस पर ही लगा.हिंसा की घटनाओं पर केंद्रीय गृह मंत्रालय ने भी बंगाल सरकार से रिपोर्ट मांगी.हिंसा-आगजनी पर राज्यपाल ने भी डीजीपी को समन किया तथा गृह सचिव से रिपोर्ट मांगी.वहीं,भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष दिलीप घोष ने इस हिंसा को लेकर राज्यपाल को ज्ञापन सौंपा.

नंदीग्राम में घरों और दुकानों में तोड़फोड़

पूर्व मेदिनीपुर जिले के नंदीग्राम के कई घरों और दुकानों में घुसकर तोड़फोड़ हुई.भाजपा कार्यालय में भी तोड़फोड़ की कोशिश की गई.भाजपा के पार्टी कार्यालय को भी आग के हवाले कर दिया गया.भाजपा ने टीएमसी के कार्यकताओं पर इसका आरोप लगाया है,जबकि उन्होंने इससे इन्कार किया.

कोलकाता के कई इलाकों में अशांति

कोलकाता के उल्टाडांगा इलाके में एक भाजपा कार्यकर्ता को पीटकर मारे जाने का आरोप लगा,जबकि साल्टलेक,न्यूटाउन, भांगड़ में रात भर अशांति जारी रही.शिवपुर-हावड़ा में भाजपा समर्थक की दुकान में दिन-दहाड़े लूट का मामला भी प्रकाश में आया.कोलकाता के बांगुड़ एवेन्यू, बड़ाबाजार,बेलाघाटा में घटी सभी घटनाओं के आरोप तृणमूल कांग्रेस के कार्यकताओं पर लगाए गए.उत्तर 24 परगना के भाटपाड़ा में क्रूड बम भी बरामद हुए.

केंद्र ने राज्य सरकार से मांगी रिपोर्ट

बंगाल में हिंसा की घटनाओं पर केंद्रीय गृह मंत्रालय ने राज्य सरकार से रिपोर्ट मांगी.गृह मंत्रालय ने कहा कि सरकार विपक्षी दलों के कार्यकताओं पर हुए हमले की पूरी जानकारी दे. खूद पर लगाए जा रहे आरोपों के जवाब में तृणमूल अध्यक्ष ममता बनर्जी ने दुख प्रकट करते हुए केवल इतना कहा कि हम जानते हैं कि भाजपा और केंद्रीय बलों ने इस चुनाव के पूर्व से नतीजे आने तक हमें काफी परेशान किया है, लेकिन हम शांति पप्रहरी हैं इसलिए हमें शांति बनाए रखनी होगी.उन्होंने कहा कि चुनावी नतीजे आ चुके हैं और मौका परस्तों को बंगाल की विवेकशील मतदाताओं ने अपना जवाब दे दिया है,अब तो उन्हें चैन व शांति से रहने दे.उन्होंने राजनीतिज्ञों से आग्रह किया कि वह बंगाल की धरती को राजनीति का अखाड़ा और यहां की भोली-भाली जनता को इस अखाड़े का मोहरा न बनाएं. उन्होंने बताया कि वर्तमान में उन्हें कोविड-19 के खिलाफ लड़ना है.इसके साथ ही उन्होंने गृह सचिव से भी रिपोर्ट मांगी.धनखड़ ने बंगाल के गृह मंत्रालय,बंगाल पुलिस और ममता बनर्जी से शीघ्र कार्रवाई के लिए कही.

हिंसा के बाद पीएम मोदी ने गर्वनर से की बात,एक याचिकाकर्ता ने तो राष्ट्रपति शासन लगाने तक की कर डाली मांग

पश्चिम बंगाल में चुनावी नतीजों के बाद हुई हिंसा को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी गर्वनर जगदीप धनखड़ से बात की। इस बारे में श्री धनखड़ ने बताया कि, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उन्हें फोन किया और बंगाल में कानून-व्यवस्था की स्थिति पर उन्होंने क्षोभ जाहिर किया।इधर एक याचिकाकर्ता ने तो सुप्रीम कोर्ट में अपील करके बंगाल राज्य में आर्टिकल 356 के तहत राष्ट्रपति शासन लगाने तक की मांग कर डाली.इस हिंसा की घटना पर भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी.नड्डा तक बंगाल दौरा कर खुद भी धरना पर बैठे और इसे लेकर अपने भाजपा कार्यकताओं से देशव्यापी धरना का आयोजन करवाए.

इससे पहले,भाजपा ने आरोप लगाया कि प्रायोजित हिंसा के कारण पश्चिम बंगाल आज जल रहा है.तृणमूल कांग्रेस की तुलना नाजियों से करते हुए भाजपा ने पश्चिम बंगाल सरकार को फासीवादी तक का करार दे दिया.भाजपा ने इससे पहले आरोप लगाया था कि चुनाव परिणाम आने के बाद पश्चिम बंगाल में उसके चार कार्यकताओं की हत्या कर दी गई. तत्पश्चात बंगाल से हिन्दुओं को खदेड़े जाने की कोरी अफवाहों पर खूब कुत्सित राजनीति हुई.पढ़े-लिखे व बुद्धिजीवी व देश के शांति प्रहरी अब यह सोचने पर विवश हैं कि पूरी दुनिया कहां से कहां

पहूंच चुकी है, पर हमारा देश इस हिन्दू-मूस्लिम वाले कबड्डी के खेल से बाहर कब निकलेगा...? इस हिन्दू-मूस्लिम वाली खेल खेलकर एक पार्टी ने तो देश की सत्ता पर काबिज होकर आज देश पर हुकूमत कर रहे हैं.आखिर अब क्या पाना चाहते हैं वे... पता नहीं.इन बुद्धिजीवियों का कहना है हिन्दू-मूस्लिम की इस कबड्डी वाली खेल अब खत्म होना चाहिए. बंगाल वाले मामले में सोचने वाली बात यह है कि जब वहां पर लोकतंत्र ने इस कबड्डी वाले माहिर खिलाड़ी को मात देकर ऐतिहासिक विजय प्राप्त कर लिया है तो भला वो इस तरह के हिंसा व उन्माद क्यों फैलाएंगे, जिससे विपक्षियों को ऐसी राजनीति करने का अवसर मिले, जिससे उनके अस्थिरता की संभावनाएं पैदा हो सकती है...और भला कोई दल या व्यक्ति अपना ही नुक्सान क्यों चाहेगा, वो भी तब,जब सामने वाला शातिर व ताकतवर हो...? आज कोरोना महामारी ऐसे तांडव से जब पुरे देश में लाशों के ढेर के बीच लोग त्राहिमाम कर रहे हैं, तब देश में राष्ट्रपति शासन लगाने की मांग के बजाय बंगाल में क्यों की जा रही है.चुनावी मैदान में हार-जीत तो होती रहती है, पर लोगों को यह समझ में नहीं आ रहा है कि भाजपा हार या पराजय को पचाने की बजाय इतनी बेचैन होकर हाय-तोबा क्यों करने लग जाती है?

ये पब्लिक है सब जानती है साहब! बंद कीजिये इस कबड्डी वाले खेल को और वर्तमान में तांडव मचा रहे इस कुदरती मार से डरिये.यह सर्वाविदित है कि सत्ता काबिज हेतु भाजपा किसी भी हद तक गिर सकती है.हेड हो या टेल,सेहरा आप बांधना चाहते हैं और इससे पहले भी आपने ऐसा कर जबरदस्ती सेहरे को हासिल किया है.इस खेल को अब यहीं पर विराम दे दीजिए साहब क्यों कि इस बार आपका पाला किसी ऐरु-गैरु नेता से नहीं बल्कि दुर्गा रूपी नेत्री से पड़ा है.

ममता बनर्जी ने तीसरी बार सीएम पद की शपथ ली, पीएम मोदी ने भी दी बधाई

बहरहाल,इन तमाम अटकलों के बीच तृणमूल कांग्रेस की सुप्रीमो ममता बनर्जी ने तीसरी बार पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ले ली. राज्यपाल जगदीप धनखड़ ने कोविड के बढ़ते प्रकोप के बीच राजभवन में आयोजित साधारण समारोह में उन्हें पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई. अब तमाम नेता उन्हें बधाई भी देने लग गए हैं. खूद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी ममता बनर्जी को पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने पर बधाई दी.पीएम मोदी ने ममता को टैग करते हुए ट्वीट में लिखा कि,"पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेने पर ममता दीदी को बधाई."

पार्थ चटर्जी और सुब्रत मुखर्जी जैसे टीएमसी नेताओं के अलावा, टीएमसी की जीत में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले चुनाव रणनीतिकार प्रशांत किशोर, अभिषेक बनर्जी इस शपथ ग्रहण समारोह में मौजूद थे. बतौर सीएम ममता बनर्जी ने कहा कि उनकी पहली प्राथमिकता कोविड स्थिति से निपटने की होगी.

ममता बनर्जी ने शांति बनाए रखने की अपील की

मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने शपथ लेने के तुरंद बाद सभी राजनीतिक दलों से शांति सुनिश्चित करने की अपील की और कहा कि,बंगाल को हिंसा पसंद नहीं है. मैं व्यक्तिगत रूप से कानून और व्यवस्था के मुद्दों को देखूंगी और सुनिश्चित करूंगी कि राज्य में शांति कायम हो.मैं सभी से शांति बनाए रखने की अपील करती हूं. अगर किसी भी दल के व्यक्ति ने हिंसा की, तो उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी. मैं शांति के पक्ष में हूं और रहूंगी.'

दिल्ली में रामराज्य की परिकल्पना साकार करने पर उतारू हो आए अरविंद केजरीवाल

दिल्ली में रामराज्य की परिकल्पना साकार करने पर उतारू हो आए मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने लगता है रामायण सलीके से पढ़ी ही नहीं है। मुमकिन है कल को वे इस बात की हिमायत करने लगें कि धर्मकर्म करने वाले शंबूक की तरह दलितवध पाप नहीं है, बाली जैसे निर्दोष बंदर को धोखे से मारना क्षत्रिय धर्म है और चरित्र पर शंका होने पर जनता की मांग पर गर्भवती पत्नी का त्याग भी रामराज्य की परिकल्पना का ही बिंदु है।

अकसर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की डिग्रियों पर शक जताने वाले अरविंद की डिग्रियों के औचित्य पर शक हो आना कुदरती बात है कि दोनों में फर्क क्या। बूढ़ों को जनता के पैसे से अयोध्या का तीर्थ करवाने वाले अरविंद खुद अपनी लोकप्रियता को मिट्टी में मिलाने पर उतारू हो आए हैं। बेहतर यह होगा कि वे इस धार्मिक अभियान में अपने भूतपूर्व कवि दोस्त कुमार विश्वास को साथ ले लें जो इन दिनों रामकथा बांचते लग्जरी जिंदगी जी रहे हैं।

कसकता दोस्ताना

पिछले साल तक भाजपाई ज्योतिरादित्य सिंधिया और उन के खानदान को गद्दार कहते रहते थे, अब उन के भाजपा में जाने के बाद यही बात राहुल गांधी इशारों में कह रहे हैं कि भाजपा उन्हें वफादारी का इनाम देते मध्य प्रदेश का मुख्यमंत्री नहीं बनाएगी। कभी ज्योतिरादित्य की दादी राजमाता सिंधिया ने भी राहुल की दादी इंदिरा गांधी के साथ ऐसी ही गद्दारी की थी, तब भी कांग्रेस को सत्ता गंवानी पड़ी थी। यानी कलंक का टीका स्थायी रूप से सिंधियाओं के माथे पर चिपका रहा है। लेकिन यहां बात टीन एज की दोस्ती की है जो राहुल को ज्यादा साल रही है। इसे गिल्ट भी कहा जा सकता है और खीझ भी। रही बात सिंधिया की, तो वे, दरअसल, दिलोदिमाग से सनातनी हैं जो मजबूरी में कांग्रेस व राहुल से चिपके थे। राजघरानों के सपूतों को दोस्ती जैसे पाक जज्बे से ज्यादा सत्ता प्यारी होती है, यह उन्होंने साबित भी कर दिया।

बेशक मंदिर-मसजिद तोड़ी

आम भारतीय टोल नाके पर तो पैसा देने में कलपता है लेकिन सड़क किनारे अतिक्रमण की जमीन पर बने धर्मस्थल देखते ही जेब ढीली कर देता है। ऊपर वाले का न लिया कर्ज वह जिंदगीभर किस्तों में चुकातेचुकाते एक दिन खुद ऊपर चला जाता है, पीछे छोड़ जाता है तो एक निरा अंधविश्वास। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हाईकोर्ट के आदेश पर फरमान जारी करते तुक की बात यह कही है कि ऐसे अवैध मंदिरमसजिद तुरंत हटाए जाएं।

यह बात योगीजी के संस्कारों से मेल खाती नहीं है। शायद उन का सोचना यह रहा होगा कि जब अयोध्या में सब से बड़ा मौल बन गया है तो दरिद्रता फैलाती इन छोटीमोटी गुमटियों की जरूरत क्या। इस से कई पंडेपुजारियों का रोजगार छिन जाएगा। उत्तर प्रदेश में वैसे ही ब्राह्मण उन से नाराज हैं, अब देखना दिलचस्प होगा कि यह नया हुक्म क्या गुल खिलाएगा।

गडकरी की घूसखोरी

आंखों और मूंछों से मुसकराते रहने वाले केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी की होली बदरंग भी हो सकती है बशर्ते उन पर लग रहा घूसखोरी का इलजाम परवान चढ़ पाए। किस्सा कुछकुछ चंद्रकांता संतति जैसा है। स्केनिया स्वीडन की कार कंपनी वौक्स्वैगन की ब्रांच है जो हैवी व्हीकल बनाती है। स्वीडन के मीडिया स्वेरगेस, जिस का प्रचलित नाम एसवीटी है, ने बीती 10 मार्च को एक रिपोर्ट में कहा है कि स्केनिया भारत में अपना कारोबार बिना किसी अड़ंगे के कर सके, इस बाबत नितिन गडकरी को एक लग्जरी बस तोहफे में दी गई जो 4 दिसंबर, 2016 को उन की बेटी केतकी की शादी में इस्तेमाल भी की गई थी। यह बात आम जनता में नहीं आई। लेकिन अंदरूनी बवंडर मचा तो स्केनिया की तरफ से सफाई आई

कि यह बस एक प्राइवेट डीलर ने खरीदी थी, फिर इस का क्या हुआ, उसे पता नहीं। अब सच जो भी हो, कभी सामने आ पाएगा, इस में शक है लेकिन गडकरी की चुनरी में दाग तो लग ही गया है।

आम भारतीय टोल नाके पर तो पैसा देने में कलपता है लेकिन सड़क किनारे अतिक्रमण की जमीन पर बने धर्मस्थल देखते ही जेब ढीली कर देता है। ऊपर वाले का न लिया कर्ज वह जिंदगीभर किस्तों में चुकातेचुकाते एक दिन खुद ऊपर चला जाता है, पीछे छोड़ जाता है तो एक निरा अंधविश्वास। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हाईकोर्ट के आदेश पर फरमान जारी करते तुक की बात यह कही है कि ऐसे अवैध मंदिरमसजिद तुरंत हटाए जाएं।

राहुल वाली 'गलती' मोदी ने कर दी और बीजेपी के साथ बंगाल में खेला हो गया

ममता बनर्जी पर करते गए निजी हमले, ममता को बना दिया सबसे बड़ा चुनावी मुद्दा

गौतम सुमन गर्जना

आखिरकार बंगाल विधानसभा चुनाव के नतीजे सामने आ ही गए हैं. ममता बनर्जी ने फिर जीत का परचम लहरा दिया है. जीत भी ऐसी मिली है कि साफ हो गया है कि बंगाल की धरती पर ममता का दबदबा है और चुनाव के समय भी सिर्फ वहीं 'खेला' कर रही थीं. खेला होबे का नारा जरूर बीजेपी को चुनौती देने के लिए दिया गया,लेकिन असल में सारा खेल ममता बनर्जी ने पहले ही सेट कर दिया था. पहले से एक ऐसी सधी हुई रणनीति तैयार थी, जिसमें बीजेपी फंसती गई और देखते ही देखते तृणमूल ने फिर अपनी सरकार बना ली.

राहुल गांधी वाली 'गलती' पीएम मोदी ने कर दी : बीजेपी की इस करारी हार के कई कारण हो सकते हैं. आंकड़े बताते हैं कि सभी मुसलमानों ने ममता को वोट दिया था, ये भी पता चला है कि हिंदुओं का भी सारा वोट बीजेपी को नहीं मिला. लेकिन ये तो चुनावी समीकरण हैं जो हर चरण के साथ बदलते गए और ममता बनर्जी की स्थिति मजबूत हो गई. सवाल तो ये है कि बीजेपी ने क्या गलती कर दी? 200 पार का सपना देखने वाली पार्टी 100 से नीचे से कैसे आ गई? जवाब काफी सरल है. बंगाल के चुनाव में बीजेपी के सबसे बड़े स्टार प्रचारक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक बड़ी चूक कर दी. ये एक ऐसी चूक है जो लंबे टाइम से लगातार कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी करते आ रहे हैं- किसी बड़े नेता पर निजी हमले करने वाली गलती.

बंगाल चुनाव में बीजेपी के प्रचार पर एक नजर डालिए,तब समझ में आ

> “ राहुल गांधी वाली 'गलती' पीएम मोदी ने कर दी : बीजेपी की इस करारी हार के कई कारण हो सकते हैं. आंकड़े बताते हैं कि सभी मुसलमानों ने ममता को वोट दिया था, ये भी पता चला है कि हिंदुओं का भी सारा वोट बीजेपी को नहीं मिला. लेकिन ये तो चुनावी समीकरण हैं जो हर चरण के साथ बदलते गए और ममता बनर्जी की स्थिति मजबूत हो गई.

जाएगा कि उनके लिए सारा खेल कहां बिगड़ गया. आप किसी नेता को एक बार अपने निशाने पर ले सकते हैं, दो बार ले सकते हैं, लेकिन पूरे भाषण में सिर्फ उन्हीं पर अपना फोकस रखना एक बड़ी गलती है. बीजेपी ने यहीं किया और ममता की लहर ने उन्हें साफ कर दिया.

जब-जब राहुल गांधी का निजी हमला, पीएम मोदी को फायदा : अब पीएम मोदी के लिए ये राहुल गांधी वाली गलती इसलिए है क्योंकि अभी तक कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष भी ये नहीं समझ पाए हैं कि मोदी पर सीधा हमला करना कई मामलों में उनकी पार्टी के लिए ही घातक साबित होता है. 2019 के लोकसभा चुनाव का ही उदाहरण ले लीजिए, राहुल गांधी ने लगातार बोला- चौकीदार चोर है. हर रैली में इस नारे का इस्तेमाल किया, वहां खड़ी भीड़ से यहीं बुलवाया. लेकिन असर क्या हुआ, भारत का एक बड़ा तबका नाराज हुआ, उन्हें लगा कि बीजेपी गलती कर सकती है, लेकिन सीधे मोदी को चोर कहना ठीक नहीं है. ऐसे में राहुल ने जितनी बार चोर बोला, उतनी ही बार मोदी और बीजेपी के पक्ष में माहौल बनता रहा और कांग्रेस को मुंह की खानी पड़ गई.

2019 से थोड़ा आगे बढ़ें तो राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली का विधानसभा चुनाव याद आता है. वहां पर वैसे तो दोनों बीजेपी और कांग्रेस का सूपड़ा साफ हुआ, लेकिन राहुल गांधी ने अपना अंदाज नहीं बदला. चुनाव विधानसभा का था लेकिन निशाना सिर्फ मोदी पर था. एक रैली में तो राहुल कह गए- 6 महीने बाद देश के युवा रोजगार को लेकर मोदी को डंडे से मारेंगे.' देश के प्रधानमंत्री को लेकर ये बयान दिया गया. अजीब लग सकता है लेकिन हैरानी नहीं, राहुल गांधी ने मोदी विरोध को ही अपनी राजनीति बना लिया है.

पीएम मोदी ने सिर्फ ममता को चुनावी मुद्दा बनाया...? : राहुल की इस राजनीति पर बीजेपी ने कई बार चुटकी ली है, खुद मोदी ने इसका चुनाव के दौरान काफी फायदा उठाया है. लेकिन बंगाल चुनाव में सब उल्टा पड़ गया. राहुल गांधी वाला स्टाइल पीएम मोदी और गृहमंत्री अमित शाह ने अपनाया और 'दीदी' पर खूब हमले किए. ये हमले भी इतने तीखे थे कि किसी कट्टर टीएमसी समर्थक को आग बबूला कर जाएं. अब यहां पर जरा इस स्टाइल के कुछ सबूत दिखाते हैं आप सुधि पाठकगण को...

सबूत नंबर 1- कोच बिहार में एक रैली को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा- दीदी आपका गुस्सा, आपनी वाणी देख तो एक बच्चा भी कह सकता है कि आप चुनाव हार गई हैं. हालत ये हो गई है कि आपको खुद ही कहना पड़ता है कि आप नंदीग्राम जीत रही हैं. लेकिन जब से आपने नंदीग्राम में खेला किया है, पूरा देश मान चुका है कि ये चुनाव तो आपके हाथ से निकल लिया. भगवान से पूछने की कोई जरूरत नहीं.

सबूत नंबर 2- बंगाल के बारासात में सीधे ममता बनर्जी पर हमला करते हुए पीएम कह गए- दीदी ने कभी एक बार भी कहा कि वो हिंसा करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करेंगी. दीदी को तो बस हर कीमत पर सत्ता में आना है. अब वो तो अपने समर्थकों को भड़का रही हैं. कोई भी मुख्यमंत्री ऐसी भाषा कैसे बोल सकता है. वो यहां पर हिंसा और अशांति फैलाना चाहती हैं.दीदी आपकी साजिश जनता समझ चुकी है.

सबूत नंबर 3- कोलकाता के ब्रिगेड ग्राउंड में ममता पर तंज कसते हुए पीएम ने बोला था- मैं दीदी को बरसों से जानता हूं. आज वो पुरानी वाली दीदी नहीं रह गई हैं. उनका खुद पर कोई बस नहीं. उनका रिमोट कंट्रोल तो किसी और के हाथ में है. आपको दीदी के रूप चुना लेकिन आप भतीजे की बुआ बन रह गईं. उसी का लालाच पूरा करने में रहीं.अब ये तो बस कुछ उदाहरण हैं,जहां पर चुनावी मुद्दों को छोड़ सीधे ममता बनर्जी पर निशाना साधा गया, वो लिस्ट तो काफी लंबी है जहां पर बीजेपी के तमाम नेताओं ने सिर्फ ममता के खिलाफ बोला और उन्हें ही सबसे बड़ा चुनावी मुद्दा बनाने की कोशिश की. 2014 में राहुल गांधी के लिए पीएम मोदी का शहजादा बोलना कनेक्ट कर गया, बाद में 'राहुल बाबा' भी खूब ट्रेंड किया, लेकिन ममता के लिए 'दीदी...ओ दीदी' बोलना उल्टा पड़ गया. टीएमसी ने तो इसे मुद्दा बनाया ही, साथ ही साथ महिलाओं का भी अपमान बता दिया. नतीजा ये रहा कि बड़ी संख्या में महिला वोटरों ने दीदी को वोट कर दिया. दीदी' की लोकप्रियता को कम आंक गए मोदी : यहां पर समझने वाली बात ये थी कि ममता बनर्जी एक मजबूत और स्थानीय नेता हैं, दो बार एक राज्य की सीएम रह चुकी हैं और तीसरी बार भी बनने जा रही हैं. जबकि उनके लिए कहा जाता है कि वे जमीन से जुड़ी हुई नेता हैं. उन्हें हर कोई 'फाइटर' के रूप में जानता है. ऐसे में उनको लेकर निजी हमला करना उनकी लोकप्रियता का मजाक बनाने जैसा है और जब-जब ऐसा होता है बंगाल की जनता दीदी के पीछे मजबूती से खड़ी हो जाती है और वो लहर हर विरोधी को धूल चटाने के लिए काफी रहती है. इस बार बीजेपी के साथ भी यहीं खेला हुआ और इसी खेल-खेल में तीसरी बार ममता दीदी सीएम बन गई.

> “ पीएम मोदी ने सिर्फ ममता को चुनावी मुद्दा बनाया...? : राहुल की इस राजनीति पर बीजेपी ने कई बार चुटकी ली है, खुद मोदी ने इसका चुनाव के दौरान काफी फायदा उठाया है. लेकिन बंगाल चुनाव में सब उल्टा पड़ गया. राहुल गांधी वाला स्टाइल पीएम मोदी और गृहमंत्री अमित शाह ने अपनाया और 'दीदी' पर खूब हमले किए. ये हमले भी इतने तीखे थे कि किसी कट्टर टीएमसी समर्थक को आग बबूला कर जाएं.

ऑनलाइन क्लासेज बच्चों के लिए बनीं मुसीबत

जब से कोरोना आया बच्चों के स्कूलों पर भी पहरा लग गया है, पिछले पांच माह से स्कूलों में ताले पड़े हैं और स्कूलों का स्थान ऑनलाइन क्लासेज ने ले लिया है। ऑनलाइन क्लासेस में बच्चों को स्कूल नहीं जाना पड़ रहा है और कोरोना के इस कठिन दौर में अभिभावक भी अपने लाडलों को अपनी आंखों सामने देखकर सन्तुष्ट हैं। बच्चों के लिए मोबाइल और लेपटॉप की व्यवस्था करने के प्रयास में कुछ घरों की आर्थिक अवस्था भी चरमराने लगी है ।ऑनलाइन क्लासेज में अभिभावकों की अपनी समस्याएं हैं तो बच्चों की भी कुछ समस्याएं कुछ कम नहीं हैं। टीनेजर हेल्पलाइन उमंग के अनुसार मार्च से लेकर अगस्त तक हेल्पलाइन में 4,965 फोन कॉल्स 6 वीं से लेकर 12 वीं तक के बच्चों के आये जिसमें उन्होंने उमंग हेल्पलाइन की काउंसलर माया बोहरा को अपनी समस्याएं बताई जिनसे लग रहा था कि ऑनलाइन क्लासेज में वे कैसी कैसी समस्याओं का सामना कर रहे हैं-

सातवीं कक्षा का अक्षत कहता है मैं अपने घर में नहीं रहना चाहता, यहां सब मेरी ऑनलाइन क्लास को लेकर मुझे परेशान करते हैं, मेरा मजाक उड़ाते हैं इसलिए मेरा मन करता है कि मैं यहां से भाग जाऊँ।

आठवी कक्षा की तनीशा काउंसलर के सामने फूट फूट कर रो पड़ती है और कहती है, मेम क्लास के दौरान मेरी मम्मी मेरे साथ ही बैठती हैं और जब मुझे किसी प्रश्न का उत्तर नहीं आता और दूसरा छात्र बता देता है तो मेरी मम्मी मुझे डांटती है कि तुझे इतना तक नहीं पता इसके अलावा पूरे दिन मुझे दूसरे बच्चों से कंपेयर करती रहतीं हैं, इससे अच्छा तो स्कूल था जहां से मम्मी को कुछ ज्यादा पता तो नहीं चलता था।

10 वीं के छात्र रिदम की अलग ही परेशानी है वह कहता है कि दो कमरों के हमारे फ्लैट में जब मेरी ऑनलाइन क्लास चल रही होती है उसी समय मम्मी पापा में झगड़ा प्रारम्भ हो जाता है मैं कितने भी इशारे करूँ वे लोग समझते ही नहीं जिससे पूरी क्लास के बच्चों और टीचर्स के सामने मेरी स्थिति खराब हो जाती है,

कक्षा 5 की छात्रा पायल कहती है ऑनलाइन क्लास के दौरान पूरे समय मुझे

> “ऑनलाइन क्लासेस में बच्चों को स्कूल नहीं जाना पड़ रहा है और कोरोना के इस कठिन दौर में अभिभावक भी अपने लाडलों को अपनी आंखों सामने देखकर सन्तुष्ट हैं। बच्चों के लिए मोबाइल और लेपटॉप की व्यवस्था करने के प्रयास में कुछ घरों की आर्थिक अवस्था भी चरमराने लगी है ।ऑनलाइन क्लासेज में अभिभावकों की अपनी समस्याएं हैं ।

डर लगा रहता है कि कहीं टीचर मुझे डांट न दे वरना क्लास के बाद मेरे भाई बहन मिलकर मेरी खिल्ली उड़ाएंगे।

11 वीं कक्षा का आयुष रोते हुए कहता है, अपने पांच भाई बहनों में मैं सबसे छोटा हूँ। ऑनलाइन क्लास के दौरान मेरे भाई बहन आपस में जोर जोर से बात करते है, हंसते हैं, दरवाजे के पीछे से मेरे टीचर्स को देखते हैं फिर बाद में उनके पढ़ाने के अंदाज को जज करते हैं

उनकी नकल उतारते हैं जिससे मैं अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित ही नहीं कर पाता

ऑनलाइन पढ़ाई में इस प्रकार की समस्याएं अनेकों बच्चों को आ रही हैं जिससे बच्चों का मानसिक स्वास्थ्य गड़बड़ाने लगा है, वे चिड़चिड़े और परेशान रहने लगे हैं। माता पिता के अनावश्यक हस्तक्षेप उनके लिए मुसीबत बन गया है। यहां तक कि कई बच्चे डिप्रेशन के शिकार भी होने लगे हैं। फिलहाल तो स्कूलों के खुलने के भी आसार नजर नहीं आते, ऐसे में बच्चों की पढ़ाई के लिए ऑनलाइन क्लास ही एकमात्र विकल्प है। उमंग हेल्पलाइन की काउंसलर माया बोहरा परिजनों को कुछ सलाह देती हुई कहतीं हैं-

ऑनलाइन क्लास के समय बच्चों के पास या बगल में बैठने के स्थान पर अप्रत्यक्ष रूप से नजर रखें।

■ बच्चों का मनोविज्ञान बहुत जटिल होता है। बड़ों की अपेक्षा उनके सोचने का तरीका भिन्न होता है। अतः उनके साथ इस समय बेहद नरमी और प्यार से पेश आएं। छोटी से छोटी बात भी उन्हें बहुत आहत कर देती है।

■ ऑनलाइन क्लास के दौरान उन्हें पर्याप्त स्पेस दें। सम्भव हो तो उस दौरान उनके कमरे से बाहर रहें ताकि वे अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित कर सकें।

■ क्लास के बाद उनकी टीचर्स का न ही मजाक बनाएं और न ही नकल करें।

■ इस समय उन्हें बिल्कुल वैसे ही सरल सहज रहने को कहें जैसे वे स्कूल में रहते हैं क्योंकि ऑनलाइन क्लास का कॉन्सेप्ट उनके लिए भी एकदम नया है।

■ क्लास समाप्त होने के बाद उनसे प्यार से बातचीत करें परन्तु किसी प्रकार का कटाक्ष और हंसी उड़ाने से बचें।

■ बच्चे की ऑनलाइन क्लास के दौरान घर में शांति बनाए रखने का प्रयास करें। जिस कमरे में बच्चा क्लास अटैंड कर रहा है उसकी साफ सफाई या तो क्लास से पहले कर लें अथवा क्लास के बाद करें।

■ बच्चे की क्लास प्रारम्भ होने से पूर्व बच्चे को समय से उठाकर ब्रेकफास्ट करवाएं ताकि बच्चा अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित कर सके।

इस वैश्विक आपदा में समाज के प्रत्येक वर्ग की ही भांति बच्चे भी प्रभावित हुए हैं। भले ही ऑनलाइन क्लास का कॉन्सेप्ट बच्चों और अभिभावकों दोनों के लिए एकदम नया है परंतु अभिभावक अपनी समझदारी से इसे बच्चों के लिए उपयोगी और आदर्श बना सकते हैं क्योंकि बच्चे बहुत भोले और नादान होते हैं टीचर्स और कक्षा के अन्य बच्चों के समक्ष वे अपने परिवार की एक आदर्श तस्वीर बनाकर रखते हैं और हम अभिभावकों का दायित्व है कि हम उस तस्वीर की गरिमा को बरकरार रखें साथ ही उनके टीचर्स का भी सम्मान करें।

“ऑनलाइन पढ़ाई में इस प्रकार की समस्याएं अनेकों बच्चों को आ रही हैं जिससे बच्चों का मानसिक स्वास्थ्य गड़बड़ाने लगा है, वे चिड़चिड़े और परेशान रहने लगे हैं। माता पिता के अनावश्यक हस्तक्षेप उनके लिए मुसीबत बन गया है। यहां तक कि कई बच्चे डिप्रेशन के शिकार भी होने लगे हैं। फिलहाल तो स्कूलों के खुलने के भी आसार नजर नहीं आते, ऐसे में बच्चों की पढ़ाई के लिए ऑनलाइन क्लास ही एकमात्र विकल्प है।

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव 2021

ममता दीदी के बंगाल में मौत का 'खूनी खेला होबे'

सुरेश गांधी

बंगाल में चुनाव के बाद हिंसा का तांडव थमने का नाम नहीं ले रहा है। अब तक 12 जाने जा चुकी है। हालात इतना बिगड़ चुके है कि प्रधानमंत्री, गृहमंत्री व वहां बैठे राज्यपाल की भी नहीं सुनी जा रही है। सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर कर केंद्रीय सुरक्षा बलों की तैनाती की मांग की जा रही है। लेकिन दीदी है कि हिंसा के दौर में 5 मई को शपथ लेने जा रही है। सवाल यही है क्या दीदी का ह्यखेला होबेह्ल का नारा अब ह्यखूनी खेला होबेह्ल हो गया है? क्या मोदी, शाह व राज्यपाल के बीच हालात के रिपोर्टों का ही आदान-प्रदान होगा या आतंक की आग में झुलसने से पहले बंगाल बचाने के लिए लगेगा राष्ट्रपति शासन?

फिरहाल, लगता है बंगाल के भाग्य में अब आगे सिसकना ही लिखा है। एक समय गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर और नेताजी सुभाषचंद्र बोस जैसे अनेकों विद्वान

> पश्चिम बंगाल के विधानसभा चुनाव के नतीजों के बाद सियासी हिंसा ने एक बार फिर जोर पकड़ लिया है। खुलेआम लोगों के घर में घूस कर चाकूओं से सीना छलनी किया जा रहा है। मासूम बच्चों को पटक-पटक रेता जा रहा है। महिलाओं के संग सामूहिक बलात्कार हो रहे है। भाजपा आरोप लगा रही है कि जीत के बाद तृणमूल कांग्रेस अतिउत्साह में भाजपा कार्यकताओं को निशाना बना रहे हैं।

और देशभक्त की धरा अब बस राजनितिक और मजहबी गुंडों की भूमि बनकर रह गयी। पश्चिम बंगाल के विधानसभा चुनाव के नतीजों के बाद सियासी हिंसा ने एक बार फिर जोर पकड़ लिया है। खुलेआम लोगों के घर में घूस कर चाकूओं से सीना छलनी किया जा रहा है। मासूम बच्चों को पटक-पटक रेता जा रहा है। महिलाओं के संग सामूहिक बलात्कार हो रहे है। भाजपा आरोप लगा रही है कि जीत के बाद तृणमूल कांग्रेस अतिउत्साह में भाजपा कार्यकताओं को निशाना बना रहे हैं। पार्टी कार्यालयों में तोड़फोड़ और आगजनी से हर जगह दहशत का माहौल है। यह सब तांडव टीएमसी समर्थक कर रहे है। अब तक 6 जिलों से हिंसा की खबरें आई हैं और दो दिन में करीब 11 लोगों के मारे जाने की खबर है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राज्यपाल जगदीश धनखड़ को फोन किया और बंगाल में आगजनी और हत्याओं पर चिंता जाहिर की है। दूसरी तरफ, इस बीच, सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका दायर की गई। इसमें मांग की गई है कि सुप्रीम कोर्ट केंद्र सरकार को बंगाल में राजनीतिक हिंसा रोकने के लिए केंद्रीय सुरक्षाबल तैनात करने का आदेश दे, ताकि राज्य में कानून-व्यवस्था बहाल की जा सके। लेकिन सवाल तो यही है कि आखिर ये सब क्यों और कौन करा रहा है? क्या बंगाल को घाटी के तर्ज पर आतंकवाद में झोकने की साजिश रची जा रही है? या खूनी हिंसा से लाल हो रहे बंगाल को साम्प्रदायिक आग में झोकने की तैयारी है?

बता दें, आए दिन हिंसक झड़प और हत्या की खबरें बंगाल को वो जगह बना रही है जहां पर राजनीति और सत्ता की गद्दी के लिए कुछ भी जायज है। चुनाव खत्म हो गए, नई सरकार बन गई, देश एक नई दिशा में आगे बढ़ने लगा। लेकिन, एक चीज अब भी वहीं की वहीं है और वो है पश्चिम बंगाल में हो रही हिंसा। चुनावों के वक्त सातों चरण के मतदान में बंगाल में कुछ ना कुछ हिंसक गतिविधि होती रही। चुनाव नतीजों के बाद दीदी की प्रचंड जीत और बीजेपी को हुए नुकसान के बाद तो जैसे बंगाल हिंसा का गढ़ ही बन गया है। बीरभूमि, बांकुरा, कूचबिहार, हुगली, पूर्वी बर्धवान और अब बशीरहाट सहित पूरे बंगाल में हिंसा ने अपना डेरा जमा लिया है। बीजेपी का कहना है कि उनके 6 कार्यकताओं की हत्या हुई है तो टीएमसी ने भी कहा है कि उनके 5 कार्यकर्ता मारे गए हैं। दोनों ही पार्टियों ने एक दूसरे पर हिंसा का आरोप लगाया है।

देखा जाय तो बंगाल की राजनीति में हिंसा का इतिहास काफी पुराना है। लेकिन, चुनाव परिणाम आने के बाद से पहले और पहले हिंसा का जो दौर चला है, वह तृणमूल कांग्रेस के लिए घातक हो सकती है। सोचने वाली बात है कि बंगाल के पुलिस वाले इतना लापरवाह रवैया क्यों अपनाए हुए हैं? वे आंख मींचकर ममता सरकार के इशारों पर क्यों थिरक रहे हैं? क्योंकि, वे जानते हैं कि यह सरकार इस तरह के राजनीतिक हमलों और उनसे होनेवाली हत्याओं की अनदेखी करती रहती है। मतलब साफ है विरोधियों की हत्याओं के दम पर तृणमूल के नेता कब तक चुने जाते रहेंगे। जबकि खुद तृणमूल कांग्रेस कम्युनिस्ट-राज में ऐसी हत्याओं की शिकार हुई थी। कांग्रेस-राज में कम्युनिस्टों ने भी हिंसा का दौर देखा है। जिन्ना के आान पर 1946 में भारत विभाजन के नाम पर 4000 लोगों का खून बहा था। पिछले दो साल में भाजपा के लगभग 3 सौ कार्यकर्ता मारे गए हैं, जिनमें एक विधायक भी है। क्या ममता यह नहीं सोचतीं कि ये राजनीतिक हत्याएं उनकी छवि को चैपट करके रख देंगी? यदि अपनी सत्ता और उसके भविष्य के प्रति उनका विश्वास सुदृढ़ है तो फिर वे एक जिम्मेदार लोकतांत्रिक नेता के तौर पर इस हिंसा की निंदा क्यों नहीं करतीं?

आखिर बंगाल में हो क्या रहा है? सोशल मीडिया पर हिंसा की कई ऐसी तस्वीरें और वीडियो हैं, जो दिल दहला देने वाली है? भाजपा इसे संयोग नहीं, प्रयोग है, प्रायोजित है बता रही है। क्योंकि दीदी ने चुनाव से पहले भाषण देते हुए कहा था कि चुनाव समाप्त होने के बाद सीआरपीएफ तो वापस चली जाएगी, उसके बाद का समय टीएमसी का होगा, हम भी देखेंगे। आज पूरा हिंदुस्तान और विश्व देख रहा है कि बंगाल में क्या हो रहा है। खासकर ग्रामीण इलाकों में आतंक का माहौल पैदा हो गया है। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने इस हिंसा

> “आए दिन हिंसक झड़प और हत्या की खबरें बंगाल को वो जगह बना रही है जहां पर राजनीति और सत्ता की गद्दी के लिए कुछ भी जायज है। चुनाव खत्म हो गए, नई सरकार बन गई, देश एक नई दिशा में आगे बढ़ने लगा। लेकिन, एक चीज अब भी वहीं की वहीं है और वो है पश्चिम बंगाल में हो रही हिंसा। चुनावों के वक्त सातों चरण के मतदान में बंगाल में कुछ ना कुछ हिंसक गतिविधि होती रही।

पर गहरी चिंता जताते हुए राज्य सरकार से इस मामले पर रिपोर्ट माँगी है। राज्यपाल जगदीप धनखड़ ने भी अपने एक ट्वीट में चिंता जताते हुए पुलिस प्रशासन से इस पर अंकुश लगाने को कहा है। पुलिस के सामने ही हमले हो रहे हैं। लेकिन वह मूकदर्शक बनी है। अगर मुख्यमंत्री इसकी जिम्मेदारी नहीं लेतीं, तो कौन लेगा? टीएमसी ने भी अपने चार लोगों की मौत होने का दावा किया है, जबकि एक व्यक्ति को इंडियन सेक्यूलर फ्रंट का समर्थक बताया गया है। इसके अलावा कई इलाकों में पार्टी दफ़्तरों में आग और घरों में तोड़-फोड़ की खबरें भी सामने आई हैं। हिंसा के आरोप में पुलिस ने राज्य के विभिन्न इलाकों से अब तक 26 लोगों को गिरफ़्तार किया है।

वैसे, पूर्व बर्दवान जिले में भड़की हिंसा में जिन चार लोगों की मौत हुई है, उनमें एक महिला शामिल है। उस महिला के बीजेपी समर्थक की माँ होने का दावा किया जा रहा है। वहाँ मृत गणेश मल्लिक (60) के पुत्र मनोज बताते हैं, मेरे पिता टीएमसी के कार्यकर्ता थे। बीजेपी के लोगों ने उनके साथ काफी मारपीट की। बाद में उन्होंने बर्दवान मेडिकल कॉलेज अस्पताल में दम तोड़ दिया। हिंसा की खबरें राज्य के विभिन्न हिस्सों से आ रही हैं। इनमें नदिया और बर्दवान के अलावा हुगली और मेदिनीपुर जैसे जिले भी शामिल हैं। कूचबिहार जिले के शीतलकुची इलाके में मानिक मैत्र (20) नामक एक युवक की गोली लगने से मौत के बाद टीएमसी और बीजेपी के नेता उसके अपना समर्थक होने का दावा करते रहे। लेकिन मृतक के चाचा कार्तिक मैत्र ने कहा, मानिक किसी भी राजनीतिक पार्टी से नहीं जुड़ा था। उत्तर 24-परगना जिले के कदमगाछी इलाके में हसनूर जमान नामक एक आईएसएफ कार्यकर्ता की हत्या हो गई है। लेकिन अब तक किसी की गिरफ़्तारी नहीं हुई है। राज्य में हालांकि अब भी केंद्रीय बलों की 200 से ज्यादा कंपनियाँ तैनात हैं। बावजूद इसके हिंसा होना चिंता का विषय है। इसके लिए अब आरोप-प्रत्यारोप की बजाय तमाम दलों को मिलकर शांति बहाली की दिशा में ठोस पहल करनी चाहिए।

लेकिन अफसोस है कि ये नाकामी का बोझ एक बार राजनितिक भाड़े के हत्यारे के सर पर रख दिया जायेगा? हालाँकि एक बार फिर दिखावे के लिए कुछ धरपकड़ तो होगी ताकि आम लोगों के अन्दर कानून का डर बना रहे लेकिन सजा के नाम पर अंत वही ढाक के तीन-पात वाली कहावत होगी। क्योंकि बंगाल में जब पहले वामपंथी सरकार थी तब विपक्ष में खड़े होना चुनाव लड़ना यानि मौत को दावत देना था आज वही कार्यकर्ता ममता बनर्जी के खेमे में आ गये तो आज अन्य दलों के लिए वही स्थिति बनी हुई है। राजनितिक और धार्मिक हिंसा के इस रक्तरंजित इतिहास को लेकर यदि थोड़ा पीछे जाये तो नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो ;एन.सी.आर.बी.द्ध के आंकड़े इसकी गवाही देते हैं। आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2016 में बंगाल में राजनीतिक कारणों से झड़प की 91 घटनाएं हुई और 205 लोग हिंसा के शिकार हुए। इससे पहले यानी वर्ष 2015 में राजनीतिक झड़प की कुल 131 घटनाएं दर्ज की गई थी और 184 लोग इसके शिकार हुए थे। वर्ष 2013 में बंगाल में राजनीतिक कारणों से 26 लोगों की हत्या हुई थी, जो किसी भी राज्य से अधिक थी। बताया जा रहा है कि 1997 में वामदल की सरकार में गृहमंत्री रहे बुद्ध देव भट्टाचार्य ने विधानसभा में जानकारी दी थी कि वर्ष 1977 से 1996 तक पश्चिम बंगाल में 28,000 लोग राजनीतिक हिंसा में मारे गये थे। ये आंकड़े राजनीतिक हिंसा की भयावह तस्वीर पेश करते हैं।

समझ नहीं आता एक राज्य में सत्ता पाने की इस लड़ाई को हिंसा कहें या फिर मौत के आंकड़े देखकर मध्यकाल का कोई युद्ध कहें! सत्ताधारी पार्टी जो कर रही है, उससे साफ है कि वह विपक्षी पार्टियों से खौफ खा रही है। लेकिन, राजनीतिक लड़ाइयां लोकतांत्रिक तरीके से लड़ी जानी चाहिए। राज्य में राजनीतिक हिंसा भले ही नई बात न हो, लेकिन तृणमूल कांग्रेस विरोधी पार्टियों पर जिस तरह हमले कर रही है, वह बंगाल के लिए एकदम नया है। पहले यह सब छिप-छिपाकर होता था, लेकिन अब खुलेआम हो रहा है। ममता बनर्जी तानाशाह बनकर एक तरफ विपक्षी पार्टियों पर हमले करवा रही है और दूसरी तरफ नरेंद्र मोदी के खिलाफ लोकतांत्रिक मोर्चा भी तैयार करना चाहती है। ऐसे में उन पर यह सवाल उठेगा कि लोकतांत्रिक मोर्चा बनाने वाली ममता बनर्जी खुद कितनी लोकतांत्रिक हैं। हालाँकि यह दुर्भाग्यपूर्ण है। किन्तु यह हिंसक घटना पश्चिम बंगाल में न तो पहली बार है और न आखिरी। कभी मजहबी उबाल तो कभी राजनितिक उफान चलता रहेगा।

“ पूर्व बर्दवान जिले में भड़की हिंसा में जिन चार लोगों की मौत हुई है, उनमें एक महिला शामिल है। उस महिला के बीजेपी समर्थक की माँ होने का दावा किया जा रहा है। वहाँ मृत गणेश मल्लिक (60) के पुत्र मनोज बताते हैं, मेरे पिता टीएमसी के कार्यकर्ता थे। बीजेपी के लोगों ने उनके साथ काफी मारपीट की। बाद में उन्होंने बर्दवान मेडिकल कॉलेज अस्पताल में दम तोड़ दिया।

कुछ बेहतर करने के लिए खुद पर अत्याचार करना पड़ता है...

जी हां, टीवी चैनलों के युवा पत्रकार रोहित सरदाना के असामयिक निधन कुछ ऐसा ही संदेश दे रहा है। वो चाहे जी न्यूज का टॉप शो ताल ठोक के हो या आज तक दंगल, जहां भी रहे अपनी बेबाक बोलने की शैली व उनकी राष्ट्रवादी सोच कुछ इस कदर आवाम को दीवाना बना दिया था कि उन्होंने कोरोना जैसी जानलेवा को भी नजरअंदाज कर अपने काम पर ही जुटे रहे। यह अलग बात है कि जब कोरोना ने जकड़ा तो उन्हें इलाज का भी मौका नहीं दिया

सुरेश गांधी

फिरहाल, रोहित सरदाना के असामयिक निधन से कुछ वामपंथी विचारधारा से जुड़े लोगों को छोड़ पूरा देश हतप्रभ, स्तब्ध व शोकाकुल है। उनकी बेबाक बोल, निर्भिकता, टिप्पणी सहित कामों को लोग हमेशा याद रखेंगे। सच कहा जाय तो आज के युग की पत्रकारिता में उन्हें एक आदर्श के रूप में जाना जायेगा। उनकी गिनती एंकरिंग की दुनिया में दिग्गज पत्रकारों में होती है। प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले रोहित ने जो यादें छोड़ी है वह आने वाले पत्रकारों के लिए सबक होगी। उनकी खासियत थी कि वे जहां-जहां रहे, वहां उन्होंने न केवल चैनल की साख बढ़ाई, बल्कि पत्रकार के तौर पर अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए समाज में विद्रोह फैलाने वालों को लगातार आड़े हाथ लिया। वे अग्निधर्मा पत्रकार थे। उनके बोल एंकरिंग के नये क्षितिज छुए और जनमानस को उद्वेलित किया। उनके एक एक शब्द राष्ट्रवाद से ओतप्रोत थे।

> “टिप्पणी सहित कामों को लोग हमेशा याद रखेंगे। सच कहा जाय तो आज के युग की पत्रकारिता में उन्हें एक आदर्श के रूप में जाना जायेगा। उनकी गिनती एंकरिंग की दुनिया में दिग्गज पत्रकारों में होती है। प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले रोहित ने जो यादें छोड़ी है वह आने वाले पत्रकारों के लिए सबक होगी। उनकी खासियत थी कि वे जहां-जहां रहे।

बता दें, मशहूर न्यूज एंकर रोहित सरदाना की शुक्रवार को मौत हो गई है। रोजाना शाम को अपने न्यूज शो दंगल के जरिए देश के महत्वपूर्ण मुद्दों पर डिबेट करने वाले तेजतर्रार पत्रकार रोहित सरदाना देश के एक प्रसिद्ध और लोकप्रिय पत्रकार थे। न्यूज की दुनिया में रोहित सरदाना एक जाना-पहचाना नाम है। पत्रकारिता की जगत में काम करने की चाहत रखने वाले लाखों लोगों के लिए रोहित सरदाना एक आदर्श है।

लंबे समय तक जी न्यूज में एंकर रहे रोहित सरदाना इन दिनों आज तक न्यूज चैनल में एंकर के तौर पर काम कर रहे थे। उन्हें सुबह हार्ट अटैक आया, जिसमें उनकी मौत हो गई। वह कोरोना वायरस से भी संक्रमित थे। कुछ दिन पहले उनकी रिपोर्ट निगेटिव आई थी, लेकिन सीटी स्कैन में पॉजिटीव पाएं गए थे। इसके बाद से उनका इलाज चल रहा था। गुरुवार को तबियत बिगड़ने पर अस्पताल पहुंचाया गया, जहां हार्ट अटैक के बाद उन्हें वेंटिलेटर पर रखा गया था, लेकिन बचाया नहीं जा सका। 2018 में ही रोहित सरदाना को गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार से नवाजा गया था। खास यह है कि भले ही कोरोना और दिल का दौरा पड़ने से वह दुनिया छोड़कर चले गए, लेकिन एक दिन पहले तक वह लोगों की मदद के लिए सक्रिय थे। कोरोना का शिकार हुए लोगों के इलाज के लिए रेमडेसिविर इंजेक्शन, ऑक्सीजन, बेड आदि तक की व्यवस्था के लिए वह लगातार सोशल मीडिया पर एक्टिव थे और लोगों से सहयोग की अपील कर रहे थे। यहां तक कि अपनी मौत से ठीक एक दिन पहले 29 अप्रैल को भी रात 8.45 पर उन्होंने एक ट्वीट किया था। जिसमें कानपुर में भर्ती करुणा श्रीवास्तव नाम के मरीज के लिए रेमडेसिविर इंजेक्शनों की व्यवस्था करने की अपील की थी। इससे पहले 28 अप्रैल को उन्होंने लोगों से प्लाज्मा डोनेट करने की भी अपील की थी।

उनकी लोकप्रियता का अंदाजा इसी से बात से लगाया जा सकता है कि पीएम मोदी ने भी ट्वीट कर रोहित सरदाना के निधन पर शोक जताया है- कहा ह्लरोहित सरदाना ने हमें बहुत जल्द छोड़ दिया। ऊर्जा से भरपूर...। उनके असामयिक निधन ने मीडिया जगत में एक बहुत बड़ा शून्य छोड़ दिया है। उनके परिवार, दोस्तों और प्रशंसकों के प्रति संवेदना। शांति।ह्ल केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह व रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने देश ने कहा, एक बहादुर पत्रकार खो दिया है, जो हमेशा निष्पक्ष और निष्पक्ष रिपोर्टिंग करता था। भगवान उनके परिवार को यह दुख सहन करने की शक्ति दे। उनके परिवार और चाहने वालों के प्रति मेरी गहरी संवेदना।

सीएम अरविंद केजरीवाल भी ट्वीट किया है- कहा, ह्लवरिष्ठ टीवी पत्रकार रोहित सरदाना जी के निधन की दुखद खबर स्तब्ध कर देने वाली है। ईश्वर उनकी आत्मा को अपने चरणों में स्थान दें और परिवार को ये दुख सहने का साहस दें। इसके अलावा उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी शोक जताया है। सीएम योगी ने अपने शोक संदेश में लिखा है- वरिष्ठ पत्रकार रोहित सरदाना जी का निधन अत्यंत दुःखद है। वह जनपक्षीय पत्रकारिता के अप्रतिम हस्ताक्षर थे। प्रभु श्री राम से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति व शोकाकुल परिजनों को यह अथाह दुःख सहने की शक्ति प्रदान करें।

रोहित का जन्म 22 सितंबर को हरियाणा के कुरुक्षेत्र में हुआ था। स्कूली पढ़ाई पूरी करने के बाद वो हिसार चले गए और गुरु जम्बेश्वर विश्वविद्यालय विज्ञान प्रौद्योगिकी में एडमिशन लिया। पहले उन्होंने मनोविज्ञान में स्नातक की डिग्री हासिल की, उसके बाद उसी यूनिवर्सिटी से मास कम्युनिकेशन में मास्टर्स किया। रोहित सरदाना की पत्नी का नाम प्रमिला दीक्षित है। रोहित और प्रमिला की दो बेटियां भी है। रोहित सरदाना ने अपने करियर की शुरूआत रेडियो स्टेशन में नौकरी करके की।

इसके बाद रोहित सरदाना के सिटी केबल में काम करने लगे। रोहित सरदाना ने करीब डेढ़ साल तक सिटी केबल में काम किया, लेकिन वह कुछ बड़ा करना चाहते थे। ऐसे में वह हरियाणा छोड़कर दिल्ली आ गए। दिल्ली में रोहित सरदाना को सबसे पहले ई-ज्ट नेटवर्क के साथ इंटर्न के रूप में काम करने का मौका मिला। फिर वह ई-ज्ट नेटवर्क में ही बतौर पत्रकार काम करने लगे। इस दौरान रोहित सरदाना का ट्रांसफर हैदराबाद में कर दिया गया। हैदराबाद में रोहित सरदाना ने इतना अच्छा काम किया कि उन्हें ज्ट पर एंकरिंग करने का मौका मिला। बस यही से रोहित सरदाना का करियर ज्ट एंकर के रूप में शुरू हुआ। रोहित सरदाना अक्सर सोशल मीडिया पर अपनी बेटियों के साथ तस्वीरें साझा करते हैं। मौजूदा वक्त में रोहित नोएडा में स्थित न्यूज चैनल आज तक में काम कर रहे थे। इससे पहले उन्होंने सहारा, जी न्यूज जैसे संस्थानों में सेवाएं दी थी। 2018 में ही रोहित सरदाना को गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार से नवाजा गया था।

> “उनकी लोकप्रियता का अंदाजा इसी से बात से लगाया जा सकता है कि पीएम मोदी ने भी ट्वीट कर रोहित सरदाना के निधन पर शोक जताया है- कहा ह्लरोहित सरदाना ने हमें बहुत जल्द छोड़ दिया। ऊर्जा से भरपूर...। उनके असामयिक निधन ने मीडिया जगत में एक बहुत बड़ा शून्य छोड़ दिया है। उनके परिवार, दोस्तों और प्रशंसकों के प्रति संवेदना। शांति।ह्ल केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह व रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने देश ने कहा, एक बहादुर पत्रकार खो दिया है।

कोरोना अवतार : मौत से प्यार नहीं , मौत तो हमारा स्वाद है

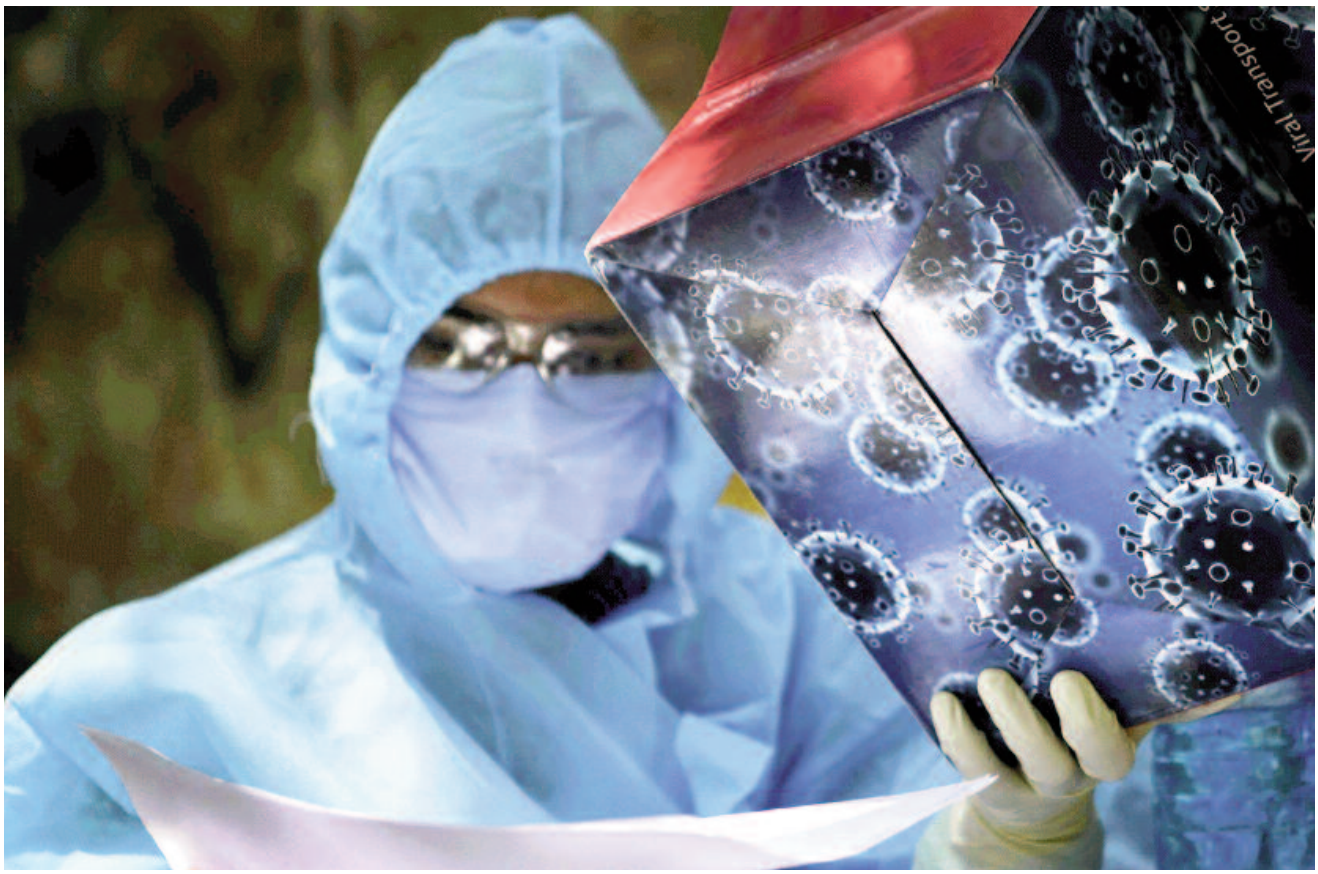

कुमुद रंजन सिंह, वरिष्ठ पत्रकार

बकरे का, पाए का, तीतर का, मुर्गे का, हलाल का, बिना हलाल का, ताजा बच्चे का, भुना हुआ,छोटी मछली, बड़ी मछली, हल्की आंच पर सिक हुआ । न जाने कितने बल्कि अनगिनत स्वाद हैं मौत के ।

क्योंकि मौत किसी और की, ओर स्वाद हमारा ।

स्वाद से कारोबार बन गई मौत ।

मुर्गी पालन, मछली पालन, बकरी पालन, पोल्ट्री फार्म्स ।

नाम पालन और मकसद हत्या । स्लाटर हाउस तक खोल दिये । वो भी ऑफिशियल । गली गली में खुले नान वेज रेस्टॉरेंट मौत का कारोबार नहीं तो और क्या हैं ? मौत से प्यार और उसका कारोबार इसलिए क्योंकि मौत हमारी नही है । जो हमारी तरह बोल नही सकते, अभिव्यक्त नही कर सकते, अपनी सुरक्षा स्वयं करने में समर्थ नहीं हैं, उनकी असहायता को हमने अपना बल कैसे मान लिया ? कैसे मान लिया कि उनमें भावनाएं नहीं होतीं ? या उनकी आहें नहीं निकलतीं ? डाइनिंग टेबल पर हड्डियां नोचते बाप बच्चों को सीख देते है, बेटा कभी किसी का दिल नही दुखाना ! किसी की आहें मत लेना ! किसी की आंख में तुम्हारी वजह से आंसू नहीं आना चाहिए !

बच्चों में झुठे संस्कार डालते बाप को, अपने हाथ मे वो हडडी दिखाई नही देती, जो इससे पहले एक शरीर थी , जिसके अंदर इससे पहले एक आत्मा थी, उसकी भी एक मां थी ...?? जिसे काटा गया होगा ? जो कराहा होगा ? जो तड़पा होगा ? जिसकी आहें निकली होंगी ? जिसने बद्दुआ भी दी होगी ?

कैसे मान लिया ? कि भगवान तुम इंसानों द्वारा की गई रचना है ? कैसे मान लिया कि जब जब धरती पर अत्याचार बढ़ेंगे तो भगवान सिर्फ तुम इंसानों की

“ नाम पालन और मकसद हत्या । स्लाटर हाउस तक खोल दिये । वो भी ऑफिशियल । गली गली में खुले नान वेज रेस्टॉरेंट मौत का कारोबार नहीं तो और क्या हैं ? मौत से प्यार और उसका कारोबार इसलिए क्योंकि मौत हमारी नही है । जो हमारी तरह बोल नही सकते, अभिव्यक्त नही कर सकते, अपनी सुरक्षा स्वयं करने में समर्थ नहीं हैं, उनकी असहायता को हमने अपना बल कैसे मान लिया ? कैसे मान लिया कि उनमें भावनाएं नहीं होतीं ?

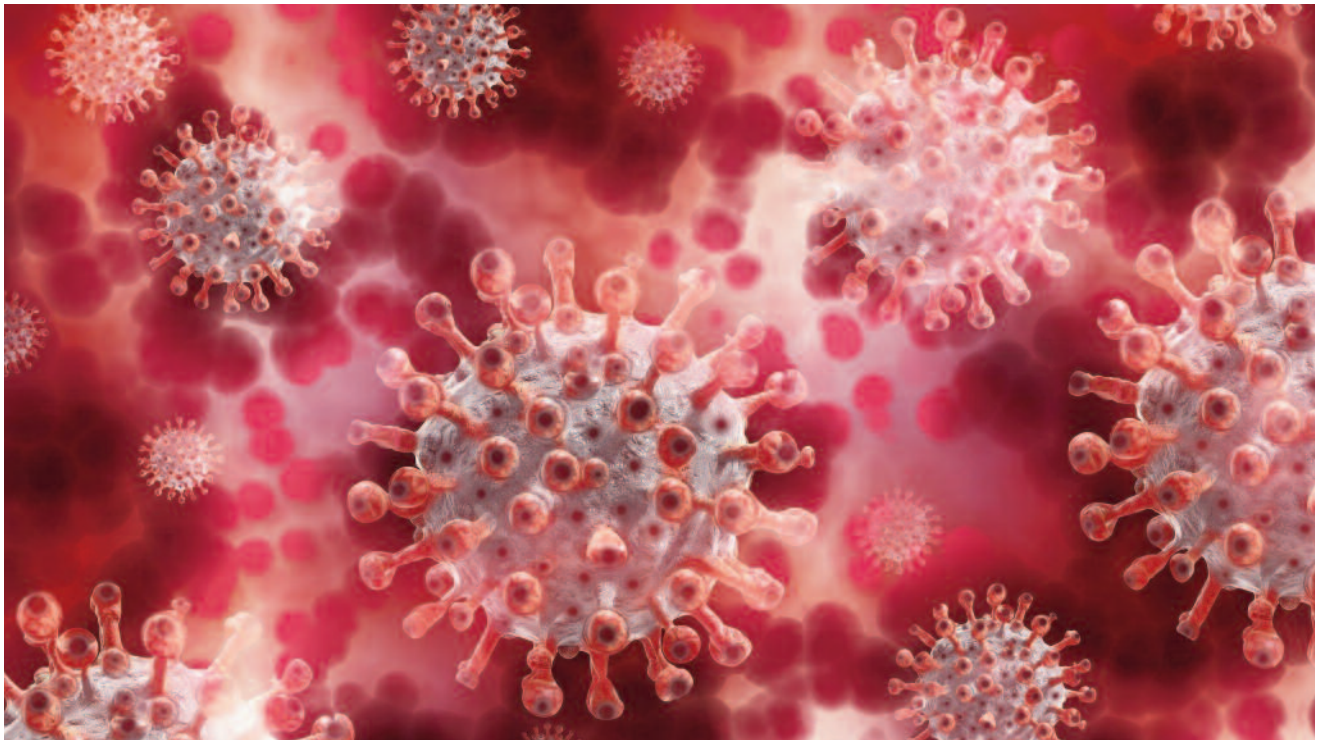

रक्षा के लिए अवतार लेंगे ?

क्या मूक जानवर उस परमपिता परमेश्वर की संतान नहीं हैं ?

क्या उस इश्वर को उनकी रक्षा की चिंता नहीं है ?

आज कोरोना वायरस उन जानवरों के लिए, ईश्वर के अवतार से कम नहीं है । भगवत गीता के चतुर्थ अध्याय के सातवें और आठवें श्लोक में भगवान ने स्वयं अवतार का प्रयोजन बताते हुए कहा है। जब-जब धर्म की हानि और अधर्म का उत्थान होता है, तब दुष्टों के विनाश के लिए मैं विभिन्न युगों में, माया का आश्रय लेकर उत्पन्न होता हूं। इसके अलावा भागवत महापुराण में भी कहा गया है कि भगवान तो प्रकृति संबंधी वृद्धि-विनाश आदि से परे अचिन्त्य, अनन्त, निर्गुण हैं। तो अगर वे इन अवतार रूप में अपनी लीला को प्रकट नहीं करते तो जीव उनके अशेष गुणों को कैसे समझते?

अतः प्रेरणा देने और मानव कल्याण के लिए उन्होंने अवतार रूप में अपने आप को प्रकट किया।

जब से इस वायरस का कहर बरपा है, जानवर स्वच्छंद घूम रहे है । पक्षी चहचहा रहे हैं । उन्हें पहली बार इस धरती पर अपना भी कुछ अधिकार सा नजर आया है । पेड़ पौधे ऐसे लहलहा रहे हैं, जैसे उन्हें नई जिंदगी मिली हो । धरती को भी जैसे सांस लेना आसान हो गया हो ।

सृष्टि के निमार्ता द्वारा रचित करोडो करोड़ योनियों में से एक कोरोना ने तुम्हे तुम्हारी ओकात बता दी । घर में घुस के मारा तुम्हे । और मार रहा है । ओर उसका तुम कुछ नही बिगाड़ सकते । अब घंटियां बजा रहे हो, इबादत कर रहे हो, प्रेयर कर रहे हो और भीख मांग रहे हो उससे की हमें बचा ले ।

धर्म की आड़ में उस परमपिता के नाम पर अपने स्वाद के लिए कभी ईद पर बकरे काटते हो, कभी दुर्गा मां या भैरव बाबा के सामने बकरे की बली चढ़ाते हो ।

कहीं तुम अपने स्वाद के लिए मछली का भोग लगाते हो ।

कभी सोचा.....!!!

....क्या ईश्वर का स्वाद होता है ? ....क्या है उनका भोजन ?

किसे ठग रहे हो ? भगवान को ? अल्लाह को ? या खुद को ? तुमने तो उस एक मात्र परमपिता के भी बंटवारे कर लिए ।

मंगलवार को नानवेज नही खाता ...!!!

आज शनिवार है इसलिए नहीं...!!!

अभी रोजे चल रहे हैं ....!!!

नौ दुर्गों में तो सवाल ही नही उठता....!!!

झूठ पर झूठ....

....झूठ पर झूठ

....झूठ पर झूठ...!!

फिर कुतर्क सुनो.....फल सब्जीयों में भी तो जान होती है ...? .....तो सुनो फल सब्जियाँ संसर्ग नहीं करतीं , ना ही वो किसी प्राण को जन्मती हैं । इसी लिए उनका भोजन उचित है ।

ईश्वर ने बुद्धि सिर्फ तुम्हे दी । ताकि तमाम योनियों में भटकने के बाद मानव योनि में तुम जन्म मृत्यु के चक्र से निकलने का रास्ता ढूँढ सको । लेकिन तुमने इस मानव योनि को पाते ही स्वयं को भगवान समझ लिया ।

आज कोरोना के रूप में मौत हमारे सामने खड़ी है ।

अब घरों में दुबकना क्यों ? डरना क्यों ? हम तो भगवान के रचयता है ? आगे बढ़ो ? क्यों रुके हो ?

मौत से प्यार है ना ? मौत तो स्वाद है ना ?

तुम्ही कहते थे, की हम जो प्रकति को देंगे, वही प्रकृति हमे लौटायेगी । मौते दीं हैं प्रकृति को तो मौतें ही लौट रही हैं ।

बढो...!!!

आलिंगन करो मौत का....!!! यह संकेत है ईश्वर का ।

प्रकृति के साथ रहो । प्रकृति के होकर रहो ।

वर्ना..... ईश्वर अपनी ही बनाई कई योनियो को धरती से हमेशा के लिए विलुप्त कर चुके हैं । उन्हें एक क्षण भी नही लगेगा ।

चिंता नही -चिंतन करें

“ जब से इस वायरस का कहर बरपा है, जानवर स्वच्छंद घूम रहे है । पक्षी चहचहा रहे हैं । उन्हें पहली बार इस धरती पर अपना भी कुछ अधिकार सा नजर आया है । पेड़ पौधे ऐसे लहलहा रहे हैं, जैसे उन्हें नई जिंदगी मिली हो । धरती को भी जैसे सांस लेना आसान हो गया हो । सृष्टि के निमार्ता द्वारा रचित करोडो करोड़ योनियों में से एक कोरोना ने तुम्हे तुम्हारी ओकात बता दी । घर में घुस के मारा तुम्हे । और मार रहा है ।

सबरीमाला मंदिर : जहां देव ज्योति खुद जलाते है भगवान

भारत के प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है सबरीमाला का मंदिर। यहां हर दिन लाखों लोग दर्शन करने के लिए आते हैं। इस मंदिर को मक्का-मदीना की तरह विश्व के सबसे बड़े तीर्थ स्थानों में से एक माना जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार श्री अयप्पा को भगवान विष्णु और शिव का पुत्र कहा जाता है। यही वजह है कि अय्यप्पा स्वामी मंदिर करोड़ों हिंदुओं की आस्था का प्रतीक है। दक्षिण भारत के केरल में सबरीमाला में अय्यप्पा स्वामी मंदिर है। सबरीमाला का नाम शबरी के नाम पर है, जिनका जिक्र रामायण में है। मान्यता है कि यही पर शबरी के जुठे बेर श्रीराम ने खाएं थे। ये मंदिर 18 पहाड़ियों के बीच में बसा है। यहां एक धाम में है, जिसे सबरीमला श्रीधर्मषष्ठ मंदिर कहा जाता है

सुरेश गांधी

केरल स्थित सबरीमाला में अय्यप्पा स्वामी मंदिर हिंदुओं की आस्था का प्रतीक है। इस मंदिर के पास मकर संक्रांति की रात घने अंधेरे में एक ज्योति दिखती है। इस ज्योति के दर्शन के लिए दुनियाभर से करोड़ों श्रद्धालु हर साल आते हैं। बताया जाता है कि जब-जब ये रोशनी दिखती है इसके साथ शोर भी सुनाई देता है। भक्त मानते हैं कि ये देव ज्योति है और भगवान इसे खुद जलाते हैं। इसे मकर ज्योति का नाम दिया गया है। इस मंदिर में महिलाओं का आना वर्जित है। इसके पीछे मान्यता ये है कि यहां जिस भगवान की पूजा होती है (श्री अयप्पा), वे ब्रह्माचारी थे। इसलिए यहां 10 से 50 साल तक की लड़कियां और महिलाएं नहीं प्रवेश कर सकतीं। इस मंदिर में ऐसी छोटी बच्चियां आ सकती हैं, जिनको मासिक धर्म शुरू ना हुआ हो या ऐसी बूढ़ी औरतें, जो मासिकधर्म से मुक्त हो चुकी हों। यहां जिन श्री अयप्पा की पूजा होती है उन्हें ह्लहरिहरपुत्रह्ल कहा जाता है यानी विष्णु और शिव के पुत्र। यहां दर्शन करने वाले भक्तों को दो महीने पहले से ही मांस-मछली का सेवन त्यागना होता है। मान्यता है कि अगर भक्त तुलसी या फिर रुद्राक्ष की माला पहनकर और व्रत रखकर यहां पहुंचकर दर्शन करे तो उसकी सभी मनोकामना पूर्ण होती है।

मंदिर के पुजारी की मानें तो ये मकर ज्योति है। इसी ज्योति के दर्शन के लिए

> “इस मंदिर में महिलाओं का आना वर्जित है। इसके पीछे मान्यता ये है कि यहां जिस भगवान की पूजा होती है (श्री अयप्पा), वे ब्रह्माचारी थे। इसलिए यहां 10 से 50 साल तक की लड़कियां और महिलाएं नहीं प्रवेश कर सकतीं। इस मंदिर में ऐसी छोटी बच्चियां आ सकती हैं, जिनको मासिक धर्म शुरू ना हुआ हो या ऐसी बूढ़ी औरतें, जो मासिकधर्म से मुक्त हो चुकी हों।

करोड़ों भक्त अय्यप्पा स्वामी के दर्शन को आते हैं। आस्था के सागर में गोते लगाने वाले भक्त इसे मकर ज्योति मानते हैं। मंदिर के पुजारियों के मुताबिक मकर माह के पहले दिन आकाश में दिखने वाले एक खास तारा मकर ज्योति है। कई शताब्दियों से सबरीमाला तीर्थस्थल पूरे भारत खासतौर से दक्षिण भारत के राज्यों के लाखों लोगों को आकर्षित करता रहा है। यहां सबसे पहले भगवान अय्यप्पा के दर्शन होते हैं, जिन्हें धर्म सृष्टा के रूप में भी जाना जाता है। इन्हें वैष्णवों और शैवों के बीच एकता के प्रतीके के रूप में देखा जाता है। ऐसा माना जाता है कि इन्होंने अपने लक्ष्य को पूरा किया था और सबरीमाल में इन्हें दिव्य ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। यहां विराजते हैं भगवान अय्यप्पा। इनकी कहानी भी बहुत अनूठी है। अय्यप्पा का एक नाम ह्यहरिहरपुत्रह्न है हरि यानी विष्णु और हर यानी शिव के पुत्र। हरि के मोहनी रूप को ही अय्यप्पा की मां माना जाता है। सबरीमाला का नाम शबरी के नाम पर पड़ा है। जी हां, वही रामायण वाली शबरी जिसने भगवान राम को जूठे फल खिलाए थे और राम ने उसे नवधा-भक्ति का उपदेश दिया था। मान्यता है कि पंडालम के राजा राजशेखर ने अय्यप्पा को पुत्र के रूप में गोद लिया। लेकिन भगवान अय्यप्पा को ये सब अच्छा नहीं लगा और वो महल छोड़कर चले गए। आज भी यह प्रथा है कि हर साल मकर संक्रांति के अवसर पर पंडालम राजमहल से अय्यप्पा के आभूषणों को संदूकों में रखकर एक भव्य शोभायात्रा निकाली जाती है। जो नब्बे किलोमीटर की यात्रा तय करके तीन दिन में सबरीमाला पहुंचती है। कहा जाता है इसी दिन यहां एक निराली घटना होती है। पहाड़ी की कांतामाला चोटी पर असाधारण चमक वाली ज्योति दिखलाई देती है।

सबरीमाला के प्रमुख उत्सव

पंद्रह नवंबर का मंडलम और चैदह जनवरी की मकर विलक्कू, ये सबरीमाला के प्रमुख उत्सव हैं। मलयालम पंचांग के पहले पांच दिनों और विशु माह यानी अप्रैल में ही इस मंदिर के पट खोले जाते हैं। उत्सव के दौरान भक्त घी से प्रभु अय्यप्पा की मूर्ति का अभिषेक करते हैं। यहां आने वाले श्रद्धालुओं को ह्यस्वामी तत्वमसीह्न के नाम से संबोधित किया जाता है।

करोड़ों का आता है चढ़ावा

भगवान अय्यप्पा मंदिर की मध्य नवंबर से तीर्थयात्रा शुरू हो जाती है। औसतन नवंबर से जनवरी के बीच करीब चार करोड़ भक्त मंदिर में भगवान के दर्शन करने आते हैं और इस दौरान यहां करोड़ों रुपये का चढ़ावा आता है। ये आमदनी ह्यअरवानाह्न प्रसाद यानी गुड़ का प्रसाद बेचने से, ह्यअप्पमह्न और कनिक्का से होती है। सबरीमाला में स्थित इस मंदिर प्रबंधन का कार्य इस समय त्रावणकोर देवास्वोम बोर्ड देखती है। कुछ समय पहले केरल हाई कोर्ट ने सबरीमाला में भगवान अय्यप्पा मंदिर का प्रबंधन देखने वाले त्रावणकोर देवास्वोम बोर्ड को प्रसाद की दरें संशोधित करने की मंजूरी प्रदान कर दी। समय-समय पर प्रसाद की दरों में संशोधन किया जाता है। दरअसल महंगाई को देखते हुए टी.डी.बी ने प्रसाद की दरों को बढाने के लिए हाई कोर्ट से संपर्क किया था।

चिंगम (मलयालम माह) में खुलता है अय्यप्पा मंदिर का गर्भगृह

प्रत्येक साल चौदह जनवरी को संक्राममं (सूर्य का दक्षिणायन से उत्तरायण की ओर जाना) मंदिर का सबसे प्रमुख उत्सव है। इस प्रमुख दिन पर लाखों की संख्या में अय्यप्पा मंदिर में लोग पूजा-अर्चना के लिए इकट्ठा होते हैं। यहां लोगों को इस दौरान माकारा विलाकू के दर्शन होते हैं जिसमें रोशनी का इस तरह से रखा जाता है जिससे ईश्वर के होने का आभास होता है। सबरीमाला मंदिर के करीब वावर नामक पुण्यस्थल है और ऐसा माना जाता है कि यह किसी मुस्लिम विद्वान का है, जो श्री अय्यप्पा के काफी करीब थे। यहां लोग सबरीमाला मंदिर में पूजा-अर्चना करते हैं और साथ ही वावर में भी माथा टेकते हैं, जो केरल में वर्षों से चली आ रही धार्मिक भाईचारे का अद्भुत उदाहरण है।

पट खुलने के बाद हाता है पूजा पाठ

मकरसंक्रांति पर मानव मंदिर स्थित भगवान अय्यप्पा का मंदिर मकर ज्योति की तरह जगमगा जाता है। मकर संक्रांति पर पट खुलने के बाद प्रातः भगवान अय्यप्पा का रुद्राभिषेक होता है। इसके बाद सबसे पहले सुबह श्री गणपति पूजा, फिर उषा पूजा, इसके बाद रुद्राभिषेक एवं अय्यप्पा पूजा की जाती है। दोपहर में मध्यान्ह पूजा होगी। शाम को एन.टी.सी मुक्तेश्वर महादेव मंदिर से थालापोली कार्यक्रम में गजराज पर भगवान अय्यप्पा की सवारी प्रारंभ की जाती है जो शोभायात्रा मानव मंदिर पहुंचती है। यहां पर मानव मंदिर में मकररावलिक्कु अय्यप्पा मंदिर में पूजा आयोजित की जाती है। रात के समय दीप-आराधना, प्रसाद वितरण, आतिशबाजी प्रदर्शन और फिर अंत में दस बजे के आसपास आरती की जाती है।

पौराणिक मान्यताएं

यह मंदिर पश्चिमी घाटी में पहाडियों की श्रृंखला सह्याद्रि के अंदरूनी हिस्से पर स्थित है। यहां आने वाले तीर्थयात्री घने जंगलों, ऊंची पहाड़ियों और तरह-तरह के जानवरों के कारण यहां अधिक दिनों तक नहीं ठहर सकते। सबरीमाला में साल के हर मौसम में आना संभव नहीं क्योंकि यहां आने का एक खास मौसम और समय होता है। जो लोग यहां तीर्थयात्रा के उद्देश्य से आते हैं उन्हें इकतालीस दिनों का कठिन वृहताम का पालन करना होता है, जिसके तहत उन्हें सुबह शाम की कठिन प्रार्थना से होकर गुजरना पड़ता है। सरनामविली और भगवान अय्यप्पा की शरण में मस्तक झुकाना पूजा का मुख्य हिस्सा है। केरल का प्रसिद्ध सबरीमाला मंदिर की वार्षिक तीर्थयात्रा दो महीने तक चलती है जो काफी अहम मानी जाती है। आपको ये जानकर हैरानी होगी कि तीर्थयात्रा में श्रद्धालुओं को आक्सीजन से लेकर प्रसाद के प्रीपेड कूपन तक उपलब्ध कराए जाते हैं। दरअसल, मंदिर नौ सौ चैदह मीटर की ऊंचाई पर है और केवल पैदल ही वहां पहुंचा जा सकता है। मंदिर का प्रबंधन करने वाले त्रावणकोर देवस्वम बोर्ड ने सांस की तकलीफ से परेशान तीर्थयात्रियों के लिए आक्सीजन की व्यवस्था करता है। केरल के प्रसिद्ध पहाडी मंदिर सबरीमाला में भगवान अय्यप्पा के दर्शन को लेकर लगी कतारों और मौसम के अलावा मंदिर से जुडे अन्य विवरण की जानकारी भक्तजनों को अब वेबसाइट पर उपलब्ध है। इससे जुड़ी जानकारी श्रद्धालुओं एस.एम.एस से भी प्राप्त कर सकते हैं। सबरीमाला को सबसे लोकप्रिय तीर्थस्थलों में से एक माना जाता है, यहां तक कि प्रमुख तीर्थस्थलों की वैश्विक सूची में भी उसे जगह मिलती है, जहां वेटिकन और कुंभ जगह साझा करते हैं। यहां तक कि फोर्ब्स ट्रेवेलर भी इस जगह को ह्यविश्व के दस सर्वाधिक लोकप्रिय धार्मिक तीर्थस्थलह्न की सूची में रखता है। यहां सालाना करीब छह करोड़ देशी-विदेशी सैलानी आते हैं।

> ऐसा माना जाता है कि इन्होंने अपने लक्ष्य को पूरा किया था और सबरीमाल में इन्हें दिव्य ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। यहां विराजते हैं भगवान अय्यप्पा। इनकी कहानी भी बहुत अनूठी है। अय्यप्पा का एक नाम ह्यहरिहरपुत्रह्न है हरि यानी विष्णु और हर यानी शिव के पुत्र। हरि के मोहनी रूप को ही अय्यप्पा की मां माना जाता है। सबरीमाला का नाम शबरी के नाम पर पड़ा है। जी हां, वही रामायण वाली शबरी जिसने भगवान राम को जूठे फल खिलाए थे।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने यह नहीं सोचा होगा कि सत्ता प्राप्ति का माध्यम होगा आरक्षण

जितेन्द्र कुमार सिन्हा, पटना

स्वतंत्र भारत का संविधान तैयार करते समय डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर ने यह कल्पना भी की थी कि पिछड़े वर्ग को अन्य वर्गों की बराबरी में लाने की भावना का देश के राजनेता धजियाँ उड़ाकर सत्ता प्राप्ति का माध्यम आरक्षण को बना लेंगे।

डॉक्टर अम्बेडकर ने संविधान में देश के पिछड़े वर्ग को अन्य वर्गों की बराबरी में लाने के लिए सिर्फ पन्द्रह वर्षों की समय सीमा लागू की थी। इसका अर्थ यह हुआ कि 26 जनवरी, 1950 को लागू हुए संविधान में आरक्षण का प्रावधान सिर्फ 26 जनवरी, 1965 तक के लिए ही किया गया था। ऐसी स्थिति में 26 जनवरी, 1965 के बाद देश से संवैधानिक रूप से आरक्षण का प्रावधान समाप्त हो जाना चाहिए था।

हमारे देश के राजनेताओं ने तो इतनी होशियारी दिखाई कि आरक्षण को संवैधानिक रूप से समाप्त करने के बजाए, अपनी-अपनी सरकारों को चलते रहने के लिए डॉक्टर अम्बेडकर द्वारा बनाये गये आरक्षण प्रावधानों को पार्टी की बहुमत के बल पर आरक्षण की समय सीमा बढ़ाते गये।

आजादी के कुछ ही वर्षों बाद राजनीतिक पार्टियों के लिए आरक्षण सत्ता प्राप्ति का मुख्य माध्यम बन गया और आरक्षण वोट की राजनीति के दायरे में आ गया। अब तो स्थिति यह हो गई है कि राज्यों में आरक्षण का प्रतिशत बढ़ाने की स्पर्धा शुरू हो गई है। देखा जाय तो अब मराठों ने भी महाराष्ट्र में आरक्षण देने की माँग कर रहे है, और महाराष्ट्र में मराठों को आरक्षण देने का भरसक प्रयास भी किया जा रहा है।

अब तो राज्यों में ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई है कि आरक्षण की सीमा को लेकर मची राजनीति खींचतान से सर्वोच्च न्यायालय भी परेशान है। सर्वोच्च न्यायालय ने इंदिरा सहनी मामले में 29 जनवरी,1992 को फैसला दिया था कि आरक्षण की सीमा पचास फिसदी तक ही रखी जाय। लेकिन सत्ता के लोभी की राजनीति दलों ने आरक्षण संबंधी करीबन तीन दशक पूर्व के इस फैसले को पुराना व मौजूदा स्थिति के अनुकूल नही मानते हुए, आरक्षण सीमा बढ़ाने की माँग कर रहे हैं। वर्तमान में सर्वोच्च न्यायालय में मराठा आरक्षण को लेकर बहस जारी है।

केन्द्र सरकार आरक्षण संबंधित मसलों पर विचार के लिए दो बार पिछड़ा वर्ग आयोग का गठन कर चुकी है। पहला आयोग 1953 में काका केलकर की अध्यक्ष में गठित किया गया था। यह आयोग सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े जातियों की संख्या 2399 बताया था। केन्द्र सरकार ने 1961 में इस आयोग की रिपोर्ट को खारिज कर दिया था। बाद में दूसरा आयोग का गठन तत्कालीन प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई के मंत्रिमंडल की अध्यक्षता में 1979 में किया गया था, इस आयोग ने लगभग 3743 जातियों की पहचान कर के उन्हें पिछड़ा घोषित किया था और इस आयोग ने ओबीसी के लिए अलग से 26 फिसदी कोटा तय किया था। किन्तु इस आयोग की सिफारिशों पर तात्कालिक सरकारों ने कोई विशेष ध्यान नही दिया। जबकि मंडल आयोग सबसे अधिक चचाओं में भी रहा, इसके बावजूद सर्वोच्च न्यायालय का इंदिरा सहनी मामले का फैसला सर्वाधिक सर्वमान्य रहा। यह फैसला आज भी देश में लागू है।

वर्तमान में सत्ताभोगी राजनीतिक वंशजों में संतुष्ट नही है और इस फैसले को मोजुदा हालतों में गया गुजरा (आउट ऑफ डेट) बताकर सर्वोच्च न्यायालय से आरक्षण की इस सीमा को बढ़ाने की माँग कर रहे हैं। अब यहाँ एक गम्भीर सवाल यह उठता है कि आरक्षण के माध्यम से सत्ता की कुर्सी तक पहुँचने का प्रयास करने वाले सामान्य वर्ग के राजनेताओं ने कभी देश के उस मतदाताओं की चिंता नहीं की, जो आरक्षण की सीमा से बाहर है (अर्थात सामान्य वर्ग (जेनरल कोटे) में है)।

अब देश की गंभीर समस्या बेरोजगारी हो गई है और इस समस्या का भी हमारे राजनेता चुनाव के समय लाखों या करोड़ों में नौकरी देने की झाँसा देकर सामान्य वर्ग के मतदाताओं का वोट प्राप्त करने का प्रयास करते है। देश का आरक्षण कोटा के लोग अब इसी कारण से अपने आपको असुरक्षित महसूस करने लगे है। इसका मूल कारण गैर आरक्षित वर्ग के होने के कारण न तो उनके पढ़े लिखे होनहार बच्चों को नौकरी मिल पा रही है और न ही इस बढ़ती महंगाई के दौर में वह अपना जीवन यापन ठीक से कर पा रहे हैं। दुखद बात यह है कि आज के राजनीतिक दलों एवं उनके नेताओं की सत्ता प्राप्ति की भूख भूखे-नंगे गैर आरक्षित वर्ग के सदस्यों से भी अधिक बढ़ती जा रही है। देश की इस स्थिति का सर्वोच्च न्यायालय को भी भान है, इसलिए सर्वोच्च न्यायालय स्वयं भी आरक्षण को लेकर गम्भीर चिंता व्यक्त कर रही है।

> “ डॉक्टर अम्बेडकर ने संविधान में देश के पिछड़े वर्ग को अन्य वर्गों की बराबरी में लाने के लिए सिर्फ पन्द्रह वर्षों की समय सीमा लागू की थी। इसका अर्थ यह हुआ कि 26 जनवरी, 1950 को लागू हुए संविधान में आरक्षण का प्रावधान सिर्फ 26 जनवरी, 1965 तक के लिए ही किया गया था। ऐसी स्थिति में 26 जनवरी, 1965 के बाद देश से संवैधानिक रूप से आरक्षण का प्रावधान समाप्त हो जाना चाहिए था।

ज्यादा कारगर प्रतीत होता है कोरोना का टीका 'कोवैक्सीन'

जितेन्द्र कुमार सिन्हा, पटना

18 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों को वैक्सीन देने की मंजूरी देने के बाद इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च ने अच्छी खबर दी है। इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च ने कहा है कि कोवैक्सिन डबल म्यूटेंट कोरोना वैरिएंट को भी खत्म कर देती है। इंस्टीट्यूट ने अपनी स्टडी के आधार पर बताया है कि ब्राजील वैरियंट, यूके वैरियंट और साउथ अफ्रीकन वैरियंट पर भी यह वैक्सीन असरदार है और उन्हें भी यह समाप्त कर देती है।

वैक्सीन के ट्रायल में स्वदेशी कोवैक्सिन का नतीजा काफी बेहतर निकला है। फेज-3 के क्लिनिकल ट्रायल के आखरी नतीजे के अनुसार यह वैक्सीन 81 फिसदी असरदार साबित हुआ है। इस वैक्सीन को सरकार ने जनवरी के पहले सप्ताह में इमरजेंसी अप्रुवल दिया था। सरकार का यह फैसला फेज -3 के नतीजे देखे बिना ही इमरजेंसी अप्रुवल थी, इसके के खिलाफ विशेषज्ञ थे।

सीरम इंस्टीट्यूट और भारत बायोटेक को केन्द्र सरकार ने टीका उत्पादन बढ़ाने के लिए साढ़े चार हजार करोड़ रुपये देने और विदेशी टीकों के आयत पर सीमा शुल्क में दस फिसदी छूट देने का संकेत भी दिया था। ये दोनों निर्णय टीकों की कमी दूर करने के लिहाज से महत्तवपूर्ण था। इसमें कोई संदेह नही कि देश में टीकों की भारी कमी है और इससे टीकाकरण प्रभावित हो रहा है। पिछले हफ्ते के आँकड़े इस बात की पुष्टि भी करते है।

सीरम इंस्टीट्यूट ने कोविशील्ड वैक्सीन के नये रेट फिक्स कर दिए है, जिसमें प्राइवेट अस्पतालों को कोविशील्ड वैक्सीन 600 रुपये में और अन्य अस्पतालों को 250 रुपये में दी जा रही है। वहीं राज्यों के लिए वैक्सीन का दाम 400 रुपये और केन्द्र सरकार को पहले की तरह 150 रुपये में मिल रही है।

देश में टीका करण इस वर्ष 16 जनवरी को शुरू हुआ था। उस समय से अब तक लगभग 15 करोड़ लोगों को टीके लग चुके हैं। दुनियाँ में सबसे तेज टीकाकरण बाले देशों में भारत पहले नम्बर पर है। लेकिन अभी तक कुल आबादी के लगभग 9 फीसदी हिस्से का ही टीकाकरण हो सका है। भूटान जैसे देश में टीकाकरण की प्रतिशत 60 से अधिक हो गया है। अमेरिका में 57 प्रतिशत और ब्रिटेन में 60 प्रतिशत है।

विशेषज्ञ का कहना है कि देश में प्रतिरोधी क्षमता हासिल करने के लिए 75 फिसदी आबादी का टीकाकरण जरुरी है। इस कार्य के लिए अभी से औसतन 32 लाख टीके रोज लग रहे है, इसे और ज्यादा बढ़ाने की जरुरत है। कोरोना वैक्सीन के लिए 1 मई से लगने बाले वैक्सीन केलिए 18 साल से ऊपर के लोगों ने पहले दिन कोविन ऐप पर 1 करोड़ से ज्यादा लोगों ने रजिस्ट्रेशन किया है। इसके लिए 28 अप्रील (बुधवार) से कोविन और आरोग्य सेतु ऐप पर ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन शुरू हो गये है।

प्रकृति में संतुलन बनाये रखने के लिए वन क्षेत्रों के साथ-साथ सार्वजनिक भूमि पर फलदार पेड़ लगाने का अभियान चलायें ताकि परिंदे- पक्षियों की भी अस्तित्व बचे

जितेन्द्र कुमार सिन्हा

आज पूरा विश्व समुदाय को कोरोना महामारी दूसरी लहर झकझोर दिया है, वहीं हमारे देश के कुछ राज्यों में है। आमतौर पर इंसानी बस्तियों एवं सुदूर जंगलों में बरगद-पीपल जैसे बड़े- बड़े पेड़ो पर आशियाना बनाने वाले कौओं सहित अन्य पक्षियों की दिनोदिन हो रही कमी भी झकझोर रही है। प्रायः देखा जा रहा है कि कई राज्यों में प्रवासी पक्षियों की तादात बहुत कम हो गई है। इसका मूल कारण पेड़ के कटने से पक्षियों के प्राकृतिक आवास नष्ट हो रहे हैं और पक्षियों को अब मानव निर्मित कृत्रिम आवासों पर निर्भर होना पड़ रहा है।

सर्वविदित है कि जंगल मानव सहित सभी जीवों को जीवन देता है। लेकिन जंगलों से बड़े एवं फलदार पेड़ों के नष्ट होने से वन्यजीवों व पक्षियों पर इसका स्पष्ट दिखाई देने लगा है। जंगलों में फलदार पेड़ों के नहीं रहने से वानर व लंगूर बस्तियों में आने को विवश हो रहे है, यही हाल परिंदे-पक्षियों की भी है। जंगलों से बरगद, पीपल, गूलर, रेणी, आम, सहजन, गुरजन, तेंदू, बीजा, महुआ, इमली, केंत, गूंदी, नीम, कटहल, खजूर, पलाश, पारस पीपल, जामुन, अर्जुन, जंगल जलेबी, अमलतास, देशी बबूल व बिल्व-पत्र जैसे महत्वपूर्ण पेड़ों की अवैध कटाई होने के कारण लुप्त प्राय हो रहे है। इसका असर राष्ट्रीय पक्षी मोर, कौआ, उल्लू, तौते, मैना सहित कई प्रजातियों पर दिखाई पड़ने लगा है। जबकि सबलोग जानते है कि जैव-विविधता के संरक्षक होते है बड़े एवं फलदार पेड़।

पशु-पक्षियों की कई प्रजातियों के लिए प्राकृतिक आवास बड़े पेड़ हीं होते है, जिनके सहारे मौसम की विषम परिस्थितियों में भी जीवित रहता है। उचित तो यही होगा कि हमलोगों को मिलकर वन क्षेत्रों के साथ-साथ चारागाह एवं सार्वजनिक भूमि पर फलदार पेड़ लगाने का अभियान शुरू उसे संरछित करना चाहिए ताकि समय रहते स्थिति को संभाला जा सके। हमलोग जानते हैं कि प्रकृति में संतुलन के लिए हर जीव-जन्तु और वनस्पति का महत्वपूर्ण स्थान एवं अहम भूमिका होती है। छोटे जीव चींटी से लेकर बड़े जानवर हाथी तक का जीवन चक्र एक संतुलित खाद्य श्रंखला पर निर्भर रहता है। किसी एक जीव के समाप्त होने पर इसका सीधा असर पूरी जैव-विविधता पर पड़ती है और इससे मानव भी नहीं बच सकता है। शहरों में शहरीकरण की बढ़ती रफ्तार और बड़े वृक्षों की तेजी से कम होने के कारण भी परिंदे-पक्षियों के साथ-साथ सभी जीवों पर प्रतिकूल असर पड़ने लगा है। वहीं खेती-बाड़ी में रासायनिक खाद्यों और कीटनाशकों का दिनोदिन अत्यधिक इस्तेमाल होने के कारण भी जीवों की कई प्रजातियाँ या तो नष्ट हो गया है और इसका असर बड़े जीव-जन्तुओं पर भी पड़ रहा है। अब तो इंटरनेट और इलेक्ट्रोनिक सामानों का दायरा भी इतना बढता जा रहा है कि जीवों के लिए घातक तो है ही, मनुष्यों के लिए भी घातक सिद्ध होने लगा है। यदि समस्या का समाधान समय रहते प्रभावी ढंग से नहीं निकाला गया तो आने वाले समय में पूरी जैव-विविधता के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न हो सकता है।

देश की विदुषी साहित्यकार कवयित्री पद्मश्री डा.शांति जैन नहीं गई , गीति-धारा की एक पुण्य सलीला ,जीवंत शाखा सूख गई : डा.अनिल सुलभ

...निधन पर पूरे साहित्य जगत मर्माहत, बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन,पटना में शोकसभा

बिन्देश्वर प्रसाद गुप्ता

" अपनी मूल्यवान साहित्यिक सेवाओं के लिए भारत सरकार के पद्म अलंकरण से विभूषित विदुषी कवयित्री पद्मश्री डा. शांति जैन के निधन से साहित्य जगत को एक कठोर आघात लगा है।

संपूर्ण साहित्यिक-समाज मर्माहत है। ....वस्तुतः शांति जी नहीं गईं, वो तो अपनी रचनाओं में सदा जीवित हैं, किंतु उनके निधन से गीति-धारा की एक पुण्य-सलीला शाखा सूख गई है। लोक-संगीत, लोक-कला और लोक-जीवन पर अपने चिर स्मरणीय कार्यों के कारण वो सदा ही हमारी स्मृतियों में विराजमान रहेंगी।-"

उपरोक्त बातें अपने शोकोद्गार में बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डा. अनिल सुलभ ने कही।

डा. सुलभ ने कहा कि शांति जैन संस्कृत की विदुषी प्राध्यापिका तथा हिन्दी की विशिष्ट कवयित्री थीं। हिन्दी काव्य की गीति-धारा को उनसे स्तुत्य ऊर्जा मिली है। वे एक सफल मंच संचालिका, गायिका, उद्घोषिका, रेडियो वार्ताकार, बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन की कार्यसमिति की सदस्य, बिहार की हिन्दी प्रगति समिति की उपाध्यक्ष और सुरांगन की अध्यक्ष भी थीं। उनके निधन से जो क्षति पहुँची है, वह कभी पूरी नही हो सकती।

डा. सुलभ ने कहा कि शांति जी ने अविवाहित रह कर साहित्य की एकनिष्ठ साधना की तथा पिया की हवेली, छलकती आँखें समय के स्वर, चंदनबाला, चैती, कजरी, ऋतुगीत लोकगीतों के संदर्भ और आयाम जैसी दर्जनों पुस्तकों का सृजन कर हिन्दी-साहित्य को धनाढ्य किया। वे भारत की राष्ट्रपति प्रतिभा देवी पाटिल द्वारा राष्ट्रीय देवी अहिलया सम्मान से भी विभूषित हुईं। वो केके बिडला फाउंडेशन के प्रतिष्ठित शंकर सम्मान समेत अनेक सम्मानों से विभूषित थीं।

शोक व्यक्त करने वालों में , सम्मेलन के वरिष्ठ कवयित्री डा. शेफालिका वर्मा, डा. शांति सुमन, पं. बुद्धिनाथ मिश्र, सम्मेलन के उपाध्यक्ष मृत्युंजय मिश्र करुणेश, नृपेंद्र नाथ गुप्त, डा. शंकर प्रसाद, डा. शिववंश पाण्डेय, डा. भूपेन्द्र कलसी, डा. ध्रुब कुमार, डा. अर्चना त्रिपाठी, डा. शिव नारायण, जियालाल आर्य, प्रो. अमरनाथ सिन्हा, भगवती प्रसाद द्विवेदी, पत्रकार बिन्देश्वर प्रसाद गुप्ता , उपदेश सिंह ह्यविदेहह्ल, प्रो. रास बिहारी प्रसाद सिंह, डा. मधु वर्मा, डा. कल्याणी कुसुम सिंह, डा. सागरिका राय, योगेन्द्र प्रसाद मिश्र, साँझाबाती के संपादक हेमंत कुमार, डा. ओम् प्रकाश पाण्डेय ह्यप्रकाशह्ल, कुमार अनुपम, डा. शालिनी पाण्डेय, सुरांगन के सचिव जीतेन्द्र सिंह, प्रो. सुशील झा, डा. लक्ष्मी सिंह, अंजुला सिन्हा, आराधना प्रसाद, शमा कौसर, जूही समर्पिता,मुकेश प्रत्युष, डा. सुलक्ष्मी कुमारी, डा. अशोक प्रियदर्शी, डा. पल्लवी विश्वास, किरण सिंह, नीरव समदर्शी, पूनम आनंद, डा. रीता सिंह, संजू शरण, डॉक्टर प्रतिभा सहाय, प्रभात धवन, अभिलाषा कुमारी, रागिनी भारद्वाज, चितरंजन लाल भारती, पंकज प्रियम, डा मनोज गोवर्द्धनपुरी, कहकसां तौहीद, नीलम चौधरी, पं. भवनाथ झा, डा. रीता सिंह, माधुरी भट्ट के नाम सम्मिलित हैं।

स्मरणीय है कि शनिवार की मध्य रात्रि में, आयु के ७५वें वर्ष में, डा. शांति जैन का निधन लोहानीपुर स्थित गिरि अपार्टमेंट के अपने फ़्लैट में हो गया। वे अविवाहिता थीं। अकेली रहती थीं। विगत कुछ दिनों से खांसी-बुखार से पीड़ित थीं, यद्यपि कि उन्होंने कोरोना का दोनों ही टीका लगवा लिया था। भोजन पकाने वाली सेविका को रात ९ बजे विदा कर अगली सुबह आने को कहा था। वह तो आई, पर आप सदा के लिए जा चुकी थी। सुबह फल देने वाला लड़का पहुँचा था। कई बार फोन लगाया, दरवाजे पर थपकियाँ भी लगाई, पर कोई उत्तर नहीं मिला। अनहोनी की आशंका पर दरवाजा तोड़ा गया। वह अपनी शैय्या पर निःशब्द - निःश्वास लेटी थी। प्राण-पखेरू सातवें आसमान के लिए उड़ चला था। सूचना मिलते ही, सम्मेलन अध्यक्ष डा. अनिल सुलभ और कवयित्री डा. अर्चना त्रिपाठी उनके आवास पर पहुँच कर पुष्पांजलि अर्पित की। तब तक उनकी भतीजी कल्पना और उसके पति मनोज जैन और जयंत वहाँ पहुँच चुके थें। आज तीसरे पहर आरा से उनके भतीजे तथा अन्य परिजन पहुँचे। गुल्बी घाट पर पार्थिव देह का अग्नि-संस्कार संपन्न हुआ। उनके भतीजे सुनील जैन ने मुखाग्नि दी।

> संपूर्ण साहित्यिक-समाज मर्माहत है। ....वस्तुतः शांति जी नहीं गईं, वो तो अपनी रचनाओं में सदा जीवित हैं, किंतु उनके निधन से गीति-धारा की एक पुण्य-सलीला शाखा सूख गई है। लोक-संगीत, लोक-कला और लोक-जीवन पर अपने चिर स्मरणीय कार्यों के कारण वो सदा ही हमारी स्मृतियों में विराजमान रहेंगी। उपरोक्त बातें अपने शोकोद्गार में बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डा. अनिल सुलभ ने कही।

डॉक्टर चतुर्भुज स्मृति ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव तथा अन्य नाटकों का सफल मंचन

पत्रकारिता सम्मान से दीपक प्रियदर्शी सम्मानित

विन्देश्वर प्रसाद गुप्ता, वरिष्ठ पत्रकार

कला जागरण एवं मगध कलाकार द्वारा संयुक्त रूप से राज्य के चर्चित व सुप्रतिष्ठित नाट्यकार व निदेशक डाक्टर चतुर्भुज की स्मृति में 2 - 4 मार्च को 12 वाँ तीन दिवसीय डाक्टर चतुर्भुज स्मृति ऐतिहासिक नाट्य महोत्सव स्थानीय कालिदास रंगालय में आयोजित किया गया, जिसमें पहले दिन कला जागरण(पटना)का डॉक्टर चतुर्भुज लिखित व सुमन कुमार परिकल्पित और निर्देशित 'अरावली का शेर '(महाराणा प्रताप), दूसरे दिन, बिहार आर्ट थियेटर का सतीश कुमार मिश्र लिखित व उपेन्द्र कुमार निर्देशित ' बुद्धम शरणम गच्छामि ' तथा तीसरे दिन , पुण्यार्क कला निकेतन (पंडारक) का डाक्टर चतुर्भुज लिखित व विजय आनंद निर्देशित नाटक ' मुद्राराक्षस ' का मंचन हुआ।

इस वर्ष डाक्टर चतुर्भुज पत्रकारिता सम्मान- 2021 से पत्रकार दीपक प्रियदर्शी को सम्मानित किया गया। कहना न होगा , महोत्सव में मंचित सारे नाटक मौर्यकालीन राजनैतिक स्थितियों की झांकी प्रस्तुत करने के साथ-साथ प्राचीन भारत के सामाजिक राजनीतिक इतिहास से रूबरू कराता है।

6 मार्च को कान्टेस्ट-2021 के अंतर्गत 18 वाँ नेशनल थियेटर महोत्सव में प्रांगण (पटना) द्वारा डा. किशोर सिन्हा लिखित व सोमा चक्रवर्ती निर्देशित ' ' 'चारूलता ' का मंचन किया गया ।

जहाँ विगत 28 फरवरी को प्रवीण सांस्कृतिक मंच, पटना का जयशंकर प्रसाद लिखित अविजित चक्रवर्ती नाट्य रूपांतरित व विजयेन्द्र कुमार टाक परिकल्पित एवं निर्देशित ' गुंडा ' तथा इसके पूर्व नुक्कड़ नाटक 'एक और अंधायुग '(निदेशक राज कपूर) का मंचन स्थानीय प्रेमचंद रंगशाला में हुआ, वहीं 1-3 मार्च को इमैजिनेशन , क्रिएशन ,बोधिसत्व सोसायटी एवं नाट्य विभाग , कला संस्कृति प्रकोष्ठ , भाजपा, बिहार के संयुक्त तत्वावधान में तीन दिवसीय 'जननायक नाट्य महोत्सव ' का प्रेमचंद रंगशाला में ही आयोजन किया गया, जिसमें ' क्रिएशन ' , पटना का शाहिर अनवर लिखित व उत्तम कुमार निर्देशित " कालकोस ", प्रवीण सांस्कृतिक मंच द्वारा मृत्युंजय प्रसाद निर्देशित " प्रपोजल

" , दूसरे दिन, कलर व्हील एंड थियेटर यूनिट, दरभंगा का आदम गोंडावी' लिखित व श्याम कुमार सहनी निर्देशित ' चमारों की गली में ' नुक्कड़ नाटक- 'पहला पन्ना' , तीसरे दिन , नटवंगम का अज्ञेय लिखित ,रजनीश मन्नी निर्देशित ' अंतराल 'तथा नुक्कड़ नाटक - "जनतागिरी " का मंचन प्रेमचंद रंगशाला में ही हुआ। -- क्रमशः ।

> इस वर्ष डाक्टर चतुर्भुज पत्रकारिता सम्मान- 2021 से पत्रकार दीपक प्रियदर्शी को सम्मानित किया गया। कहना न होगा , महोत्सव में मंचित सारे नाटक मौर्यकालीन राजनैतिक स्थितियों की झांकी प्रस्तुत करने के साथ-साथ प्राचीन भारत के सामाजिक राजनीतिक इतिहास से रूबरू कराता है। 6 मार्च को कान्टेस्ट-2021 के अंतर्गत 18 वाँ नेशनल थियेटर महोत्सव में प्रांगण (पटना) द्वारा डा. किशोर सिन्हा लिखित व सोमा चक्रवर्ती निर्देशित ' ' 'चारूलता ' का मंचन किया गया ।

दिल्ली में कांग्रेस का विकल्प बन सकती है आम आदमी पार्टी

दिल्ली नगर निगम के उपचुनाव में आम आदमी पार्टी यानी आप का जादू चल गया है। उपचुनाव में आप ने पांच में से चार सीटों पर अपना कब्जा जमा लिया है। एक सीट कांग्रेस के खाते में गयी है और भाजपा के हिस्से शून्य आया है। नगर निगम के पांच वार्ड के लिए 28 फरवरी को उपचुनाव हुए थे। जिसमें आप ने भाजपा की राजनीतिक जमीन हिला दी है। मजेदार बात यह है कि दिल्ली निकाय चुनाव का रिजल्ट आने के बाद आप कार्यकर्ता हो गया काम, जय श्री राम का नारा लगाते दिखाई दिए, जिससे भाजपाई काफी जलभुन गये।

केजरीवाल की पार्टी के उम्मीदवारों को कल्याणपुरी, रोहिणी-सी, शालीमार बाग (नॉर्थ) और त्रिलोकपुरी में प्रशंसनीय जीत मिली है, जबकि चौहान बांगर सीट कांग्रेस के खाते में गई है। यह चुनाव परिणाम भाजपा के लिए बड़े झटके से कम नहीं है। क्योंकि, आप ने उससे शालीमार बाग (नॉर्थ) (महिला सीट) की सीट छीन ली है। यहां पर आम आदमी पार्टी की प्रत्याशी सुनीता मिश्रा ने भाजपा की सुरभी जाजू को 2,705 वोटों से हराया है। अभी दिल्ली की तीनों निगमों पर भारतीय जनता पार्टी का कब्जा है और ऐसे में उपचुनाव में एक सीट भी गंवाना उसके लिए गहरे धक्के की बात है।

बीते एक हफ्ते में आम आदमी पार्टी के लिए दो राज्यों से भी अच्छी खबर आई है। एक तरफ गुजरात में उसने कांग्रेस की जमीन खिसका दी है तो दूसरी ओर सूरत में वह भाजपा के मुकाबले मुख्य विपक्षी पार्टी के तौर पर उभरी है। दिल्ली और गुजरात के निकाय चुनावों के परिणामों ने आम आदमी पार्टी के नेताओं और कार्यकताओं को अगले साल होने वाले दिल्ली नगर निगम और विभिन्न राज्यों की विधानसभा चुनावों के लिए भरपूर जोश से लबरेज कर दिया है। आप का बढ़ता कद जहाँ भाजपा के लिए खतरे की घंटी है तो वहीं देश की जनता के सामने कांग्रेस का विकल्प प्रस्तुत कर रहा है।

दिल्ली निकाय में उपचुनाव की जीत से उत्साहित दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने कहा, झ पांच में से चार सीटें हमें मिलना बहुत बड़ी जीत है। भाजपा के 15 साल के शासन से दिल्ली की जनता तंग आ चुकी है और चाहती है कि झाड़ू लगाकर भाजपा को नगर निगम से पूरी तरह साफ कर दिया जाए। अगले साल होने वाले नगर निगम चुनावों में भी भाजपा का सूपड़ा साफ होगा। वहीं आप नेता गोपाल राय का कहना है कि झ दिल्ली नगर निगम में लंबे समय से भाजपा के पार्षदों द्वारा भ्रष्टाचार किया जा रहा है। भजपा के कब्जे वाले निगम ने दिल्ली की जनता को काफी परेशान किया है। एमसीडी में काम करने वाले लोगों को वेतन नहीं मिल रहा है।

पूरी दिल्ली में गलियों, सड़कों को गंदा कर के रखा गया है। जहां देखो वही भ्रष्टाचार हो रहा है। भाजपा शासित साउथ एमसीडी के पास कर्मचारियों को वेतन देने के लिए पैसे नहीं, फिर भी पार्षदों को एक करोड़ और चेयरमैन, वाइस चेयरमैन को 1।5 करोड़ रुपए फण्ड दिया गया। साउथ एमसीडी ने अपने बजट में पार्षद फण्ड को 50 लाख से बढ़ाकर 1 करोड़ कर दिया है, जबकि चेयरमैन, वाइस

“बीते एक हफ्ते में आम आदमी पार्टी के लिए दो राज्यों से भी अच्छी खबर आई है। एक तरफ गुजरात में उसने कांग्रेस की जमीन खिसका दी है तो दूसरी ओर सूरत में वह भाजपा के मुकाबले मुख्य विपक्षी पार्टी के तौर पर उभरी है। दिल्ली और गुजरात के निकाय चुनावों के परिणामों ने आम आदमी पार्टी के नेताओं और कार्यकताओं को अगले साल होने वाले दिल्ली नगर निगम और विभिन्न राज्यों की विधानसभा चुनावों के लिए भरपूर जोश से लबरेज कर दिया है।

चेयरमैन को 50 लाख का अतिरिक्त पैकेज देकर उनका फण्ड 1।5 करोड़ कर दिया है, यह दिल्ली वालों के घाव पर नमक छिड़कने जैसा है। भाजपा को समझ में आ गया है कि एमसीडी में उसके सिर्फ एक साल ही बचे हैं, इसलिए भाजपा अब लूट योजना पर काम कर के एमसीडी को लूटने में लगी है। पिछले 5 साल में जिस तरह से उनका निकम्मापन सामने आया है, जिस तरह निगम के तहत काम करने वाले लोगों की तनख्वाहें कई-कई महीनों से नहीं दी गयी हैं। जिस तरह निगम के स्कूलों में अध्यापक छह-छह महीने बिना तनख्वाह के पढ़ा रहे हैं, उसके बाद यह तो होना ही था। दिल्ली की जनता ने एक बड़ा संदेश दिया है वह भाजपा की करतूतों से उकता चुकी है और दिल्ली नगर निगम में अब बदलाव चाहती है।

उल्लेखनीय है कि निगम चुनाव के प्रचार के दौरान आम आदमी पार्टी ने साफ-सफाई और फंड का मुद्दा जोर-शोर से उठाया था। इस चुनाव को पार्टी साल 2022 में होने वाले एमसीडी चुनाव से पहले सेमीफाइनल के तौर पर देख रही है।

गुजरात निगम चुनाव में भी आप मुख्य विपक्षी दल के तौर पर उभरी है। पिछले हफ्ते ही गुजरात में 6 नगर निगम के चुनाव में आम आदमी पार्टी ने धमाकेदार एंट्री की है। पाटीदारों के दबदबे वाले सूरत नगर निगम में उसने कांग्रेस को मुख्य विपक्षी पार्टी की हैसियत से भी बेदखल कर दिया है और 27 सीटें जीत कर आयी है। यहां कांग्रेस एक भी सीट नहीं जीत पायी है। गुजरात में जिला पंचायतों, नगरपालिकाओं और तालुकाओं के भी चुनाव परिणाम आ चुके हैं और इसमें भी आम आदमी पार्टी ने जो कुल 2,097 उम्मीदवार उतारे थे, उनमें से 42 को कामयाबी मिली है।

आने वाले चंद महीनों में देश के पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं। ऐसे में निकाय चुनाव के परिणाम के उत्साहित आम आदमी पार्टी ने देश भर में भाजपा से टक्कर लेने का मन बना लिया है। भाजपा सरकार के खिलाफ गोवा में सक्रिय आम आदमी पार्टी को स्थानीय निकाय चुनाव में कुछ कामयाबी मिली है। यहां 2022 में विधानसभा चुनाव होने हैं। पार्टी का वहां अपना पहले से बना बनाया संगठन है और वह पिछला चुनाव लड़ भी चुकी है। उसके निगम पार्षदों ने अब वहां भी दिल्ली की तरह सत्ता में आने पर फ्री सेवाएं देने के वादे करने शुरू कर दिए हैं। उल्लेखनीय है कि दिल्ली में फ्री बिजली-पानी का फायदा हजारों गरीब और माध्यम वर्गीय परिवारों को लम्बे समय से मिल रहा है।

गोवा में आम आदमी पार्टी एक वीज आंदोलन भी चला रही है। गोवा में आप ने ऐलान किया है कि अगर राज्य में उनकी पार्टी सत्ता में आती है तो 48 घंटे में 200 यूनिट तक बिजली मुफ्त कर देगी। वह वहां पर टैक्सी और रिक्शा ड्राइवरों को भी दिल्ली जैसी फ्री सुविधाएं देने की बात कर रही है। पार्टी दिल्ली में मुफ्त बिजली और पानी के मुद्दे को देश भर में खूब भुना रही है। साथ ही महिलाओं के लिए मुफ्त ट्रांसपोर्ट सेवा की बात कहना भी नहीं भूलती है।

दिल्ली, पंजाब, गोवा और गुजरात के बाद अब आम आदमी पार्टी की नजर उत्तर प्रदेश पर भी जा टिकी है। पार्टी 2022 में उत्तर प्रदेश विधानसभा का चुनाव लड़ने का ऐलान कर चुकी है। यहां वह भारतीय जनता पार्टी को टक्कर देने के लिए किसान आंदोलन को अपना जरिया बनाने की कोशिशों में जुटी है। तीन दिन पहले मेरठ में हुई किसान महापंचायत में पार्टी सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल खुद को किसान का बेटा और छोटा भाई बता आए हैं। वैसे भी किसान आंदोलन की शुरूआत से ही आम आदमी पार्टी दिल्ली की सीमाओं पर धरने पर बैठे किसानों की जरूरतों को पूरा करने का भरसक प्रयास करती आ रही है। उनके लिए पानी के टैंक भिजवाने, बिजली की व्यवस्था करने, शौचालयों की व्यवस्था करने में उसने बढ़चढ़ कर काम किया है। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल हर वह मुद्दा उठाने की कोशिश कर रहे हैं जो दिल्ली से सटे पश्चिमी उत्तर प्रदेश के लोगों के दिलों को छू सकता है।

गौरतलब है कि अभी तक देश में दो ही पार्टियों को बड़ी पार्टी के रूप में देखा जाता था झ कांग्रेस और भाजपा। लेकिन बीते दस सालों के दौरान तमाम अड़ंगों को झेलते हुए भी आम आदमी पार्टी के कार्यों ने जिस तरह जनता का दिल जीता है, वह भाजपा के सामने कांग्रेस के विकल्प के रूप में देखी जाने लगी है। कांग्रेस अपने पुराने घाघ नेताओं के कारण अब टूट की कगार पर है। अध्यक्ष पद को लेकर जारी खींच तान ने पार्टी का तानाबाना उधेड़ दिया है। ऐसे में अरविन्द केजरीवाल का यह दावा कि भाजपा को वही हरा सकते हैं, हकीकत बन कर जमीन पर उतर आये तो कोई आश्चर्य नहीं है। हाल के कुछ स्थानीय निकाय चुनावों से ही पार्टी का मनोबल काफी ऊंचा हो गया है। आम आदमी पार्टी के विधायक और उम्मीदवार पद यात्रा और डोर टू डोर अभियान के तहत जिस तरह प्रचार में जुटे हैं, पार्टी गुजरात, गोवा और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में कांग्रेस के विकल्प के तौर पर जरूर उभर सकती है।

“आने वाले चंद महीनों में देश के पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं। ऐसे में निकाय चुनाव के परिणाम के उत्साहित आम आदमी पार्टी ने देश भर में भाजपा से टक्कर लेने का मन बना लिया है। भाजपा सरकार के खिलाफ गोवा में सक्रिय आम आदमी पार्टी को स्थानीय निकाय चुनाव में कुछ कामयाबी मिली है। यहां 2022 में विधानसभा चुनाव होने हैं। पार्टी का वहां अपना पहले से बना बनाया संगठन है ।

मदर्स डे : पालती ही नहीं, भविष्य भी बनाती है माँ

सुरेश गांधी

दुनिया में सिर्फ एक ही प्यारी माँ है ...और वह हर बच्चे के पास है। उसकी आंखें ऐसी हैं कि बंद दरवाजे के उस पार भी देख लेती हैं कि बच्चा क्या कर रहा है। इतनी शक्तिशाली नजरें कि वो देखती ही नहीं सुनती भी हैं। वो बच्चे के शब्द बिना कहे चेहरा देखकर सुन लेती है। उसके मन में ऐसी शक्ति है कि वो अपना इलाज खुद कर लेती है। उसकी दुआ में ऐसा जादू है कि चूमने भर से बच्चे के हर दर्द को दूर कर देती है। उसकी समझ ऐसी है कि जब उसे ठंड लगती है तो वो पहले बच्चे को स्वेटर पहना देती है। वह अपनी हर बात आंसुओं से कहती है- इन्हीं से अपनी खुशी, डर, दुख, दर्द, अकेलापन, पीड़ा, गुस्सा, गर्व प्रकट करती है। संसार के सारे सुखों की शुरूआत और अंत मां के प्रेम में ही है

मां दुनिया के हर बच्चे के लिए सबसे खास, सबसे प्यारा रिश्ता। उस मां को सम्मानित करने के लिए मई माह के दुसरे रविवार को विशेष दिवस मनाया जाता है। कहा जाता है कि रब से उपर भी एक रिश्ता है, वह मां का। जीवन को नाम देती है। मुस्कान देती है। सपनों को पंख देती है। हौसलों को उंचाई देती है। दर्द होने पर सारा कुछ सह लेती हैं। लेकिन बच्चे की तकलीफ नहीं दे सकती। मतलब साफ है जीवन में किसी भी तरह की तकलीफ आएं, चाहे उन्हें अपने ममत्व भाव के लिए कितनी ही मुश्किलें झेलनी पड़े। लेकिन इन तमाम परेशानियों का असर मां अपने बच्चों पर नहीं पड़ने देती। मां दुनिया में इसलिए ही महान कहलाती है, उसकी छाया ही हममें नया आत्मविश्वास जगाती है और उसके आशीर्वाद से जीवन की दशा और दिशा तय होती है। यही वजह है कि हर समाज में मां की भूमिका अतुलनीय है। हमारे देश में मां की पूजा शुरू से ही हो रही है। शास्त्रों में मां को देवी स्वरूप माना गया है। नारियों को यथोचित सम्मान देकर ही भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखा जा सकता है।

मां तेरे दूध का हक मुझसे अदा क्या होगा। तू है नाराज तो खुश मुझसे खुदा क्यों होगा।। जब तक रहा हूं धूप में चादर बना रहा, मैं अपनी मां का आखिरी जेवर बना रहा। किसी को घर मिला हिस्से में या कोई दुकां आई, मै घर में सबसे छोटा था मेरे हिस्से में मां आई। कहते हैं भगवान मां को अपने प्रतिरूप में सबके पास भेजते हैं क्योंकि वे हर किसी के साथ नहीं रह सकते हैं। इस सत्य से कोई भी इनकार नहीं कर सकता है। सच कहें तो मैं भी खुद अपनी वजूद को मां के बिना सोच नहीं सकता। मां एक ऐसी सहारा है जो हर मुश्किल के समय आपके साथ देकर आपके पथ को प्रशस्त करती रहती हैं। किसी ने क्या खूब कहा है उस दिन एक अजीब सी आहट हुई थी, जिसे सुनकर मुझे घबराहट हुई थी, ना जाने फिर क्या हुआ, मुझे कुछ एहसास नहीं। जब आंख खुली तो देखा तू मेरे पास नहीं, अब तेरे हर स्पर्श, हर सांस को तरस रही थी, मुझे एहसास हुआ की मैं अब किसी और दुनिया में थी, जहां न कोई बेटा था, न बेटी थी।

पर मां आखिर मेरी क्या यही गलती थी, की मैं इस पुरुष समाज में एक बेटी थी, लेकिन मां मैं तो तेरी बेटी थी। बच्चों के अस्तित्व को कायम रखने और उन्हें सुनिश्चित दिशा प्रदान करने में मां की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। मां की गोद में बच्चों को जन्नत का सुख मिलता है। मां अपार कष्ट सहकर बच्चों को हर सुख पहुंचाना चाहती है। बच्चों के व्यक्तित्व को निखारने व चरित्र निर्माण में मां का योगदान अतुलनीय है। आज के भौतिकवादी परिवेश में मां के प्रति बच्चों का दायित्व कम हो गया है। बच्चों को समझना चाहिए कि इस संसार में मां से बढ़कर कुछ भी नहीं है। क्योंकि मां बेटे के इस नाता से बड़ा कोई दुसरा नाता नहीं है। पूत कपूत तो होते देखे, माता नहीं कुमाता। बच्चों की हर शिसकी पर उठ जाती है माता, गीले में खुद सोती है सूखे में उसे सुलाती है। यही वजह है कि ईश्वर ने भी मां को इस दुनिया जहान में सर्वोच्च स्थान दिया है। दुनिया में मां का ऐसा रिश्ता है जिसकी जगह और कोई रिश्ता नहीं ले सकता। मां पानी की तरह है जो हर रंग और हर हाल में घुल जाती है। संसार को चलाने में कभी दुर्गा, सरस्वती, काली मां का रूप धारण करती है। यही नहीं मां ही बच्चे की प्राथमिक शिक्षक है। मां वह तपो भूमि है जिसकी सुगंधित छाया से बच्चा पथ प्रदर्शक बनकर देश को उन्नति की ओर अग्रसर करता है।

मां निराशा में आशा की किरण है

दुनिया में मां ही अकेली है जिसे आज तक कोई भी शब्दों में बांध नहीं सका है। मां....जो बच्चे के मुख से निकला पहला शब्द होता है और शायद अंतिम भी। मां हर रोज सुबह को जगाती है और शाम को चादर दे सुला देती है। मां हर कुछ में है लेकिन ऐसा व्यक्त करती है मानो कुछ में भी न हो। मां...पिता का संबल है, बेटे की जिद्द है और बेटी की रीढ है। मां निराशा में आशा की एक किरण है। चोट में मलहम है, धूप में गीली मिट्टी है और ठण्ड में हल्की सी धूप है। मां और कुछ नहीं, बस मां है... बस मां!! मां...खुद में हीं बेपनाह है। मां बच्चे की हर चोट पर सिसकी है। हमारे जीवन का हर दिन मां के नाम समर्पित होना चाहिए। क्योंकि वो ही हमारे जीवन का आधार है। रिश्तों के नाम पर दिन मनाना भारत की परम्परा नहीं है। मगर विश्व के ज्यादातर देशों में आज का दिन मां के नाम पर समर्पित

> मां आखिर मेरी क्या यही गलती थी, की मैं इस पुरुष समाज में एक बेटी थी, लेकिन मां मैं तो तेरी बेटी थी। बच्चों के अस्तित्व को कायम रखने और उन्हें सुनिश्चित दिशा प्रदान करने में मां की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। मां की गोद में बच्चों को जन्नत का सुख मिलता है। मां अपार कष्ट सहकर बच्चों को हर सुख पहुंचाना चाहती है।

किया जाता है। मां का स्थान हर यौनी में इन्सान, पशु-पक्षी, पृथ्वी-आकाश, पाताल सभी में सर्वोच्य है। जब तक पृथ्वी पर जिंदगी है। जब तक इन्सान इस धरा पर है। मां प्रथम पूज्यनीय है। मां नाम की ताकत का अंदाजा आप सिर्फ इस बात से ही लगा सकते हैं कि आज तक इस धरती पर जो भी इंसान पैदा हुआ उसके मुंह से सर्वप्रथम मां शब्द ही निकला, ना पापा और ना पिता, निकला तो सिर्फ और सिर्फ मां का नाम।

बेटे के संस्कार की जननी है मां

जीवन का हर सुख - दुःख सहते हुए मां अपने कर्तव्य पथ से कभी नहीं हटती। सब कुछ सहते हुए अपने कर्तव्यों का पालन करती है। जब एक बच्चा अपनी मां की कोख में आता है, ठीक उसी दिन से एक मां की जिम्मेदारियां शुरू हो जाती हैं। जब तक बच्चा जन्म नहीं लेता और अपने पैरों पर चलना नहीं सीख लेता और ठीक तरह से खड़ा नहीं हो जाता। बच्चों को जीवन में आगे बढ़ने के लिए सभी संस्कार अपनी मां से ही मिलते हैं। या यूं कहे मां संस्कारों की जननी है। क्योंकि एक बच्चा सबसे ज्यादा करीब और अपना ज्यादा से ज्यादा समय अपनी मां के साथ बिताता है। मां जीवन के हर पथ पर उसको आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। जीवन जीने की कला उसे अपनी मां से ही सीखने को मिलती है। कहा जा सकता है इस जग में मां की ममता का कोई मोल नहीं है। मां की ममता के लिए तो ईश्वर ने कई बार इस धरती पर इंसान के रूप में जन्म लिया। मयार्दा पुरुषोत्तम श्रीराम, भगवान श्रीकृष्ण इसके सबसे सटीक उदहारण हैं। कितना प्रेम था कौशल्या के राम और यशोदा के श्याम में, यह बताने की जरुरत नहीं। दोनों सब कुछ मां कि ममता को पाने के लिए आतुर रहते थे। तभी तो कहा जाता है कि अगर इंसान जीवन भर मां के चरणों को धोकर भी पियेगा तब भी हम उसकी ममता, प्यार, और आशीर्वाद का कर्ज नहीं चुका सकते।

रिश्ते कई हैं, मां एक है!

मातृ देवो भव, अर्थात मां ही देवता है। मां के जो गुण हैं उनमें सृजन की क्षमता है, उसके साथ पालन और पोषण भी महत्वपूर्ण अंग है। क्योंकि मनुष्य का बच्चा बहुत असहाय जन्मता है, कोई पशु इतना असहाय नहीं होता, बहुत जल्दी आत्म निर्भर बनता है। लेकिन यह हुआ जैविक, बायोलोजिकल रूप जो कि नैसर्गिक मातृ शक्ति है। एक और मातृ शक्ति है जो आध्यात्मिक है। मानवीय मां की दो संभावनाएं हैं, एक जैविक और दूसरी आत्मिक। जैविक मातृत्व तो प्रकृति ने दिया है जो सभी प्रजातियों में मौजूद है। लेकिन आत्मिक मां बनने के लिए स्त्री को बहुत तपस्या करनी पड़ेगी। बच्चे पैदा करने से ही कोई मां नहीं बनती। हृदय के विकसित होने के बाद मातृत्व की ऊर्जा पैदा होती है, फिर उसके अपने बच्चे हों या न हों। दया, क्षमा, शांति, प्रेम, करुणा सब आत्मिक मां के गुण हैं। जो आत्मिक मां है वह सिर्फ अपने बच्चों से प्रेम नहीं करेगी, किसी का भी बच्चा हो, वह उसके प्रति प्रेम ही अनुभव करेगी। यह प्रेम वासनामय नहीं होगा, स्वार्थी नहीं होगा, इसमें कोई अपेक्षा या पकड़ नहीं होगी, इसमें दूसरों के कल्याण की ही भावना होगी।

गुस्से में भी टपकता है मां का प्यार

मां हमेशा से ही सभी के लिए वन्दनीय रही है, और रहेगी। कहा जा सकता है मां का कोई दिन नहीं होता। उसका ध्यान तो हमें हर वक्त रखना चाहिए। शायद हम उसको एक पल के लिए भूल भी जाएं पर मां कभी अपनी संतान को नहीं भूलती। फिर संतान अच्छी हो या बुरी वह हर हाल में उसे याद रखती है। भले ही उसकी संतान ने उससे नाता तोड़ दिया हो। मां के मुंह हर वक्त बस एक ही बात निकलती है, जीते रहो मेरे बेटे.....,सदा खुश रहो। जैसे जैसे समय गुजर रहा है पाश्चात्य संस्कृति हमारे ऊपर हाबी होती जा रही है। जैसे - जैसे हम आधुनिकता की चकाचैंध में खोते जा रहे है। वैसे - वैसे आज हम अपनों का मान-सम्मान करने का भाव खोते जा रहे हैं। आज हम भूलते जा रहे हैं रिश्तों की असली परिभाषा, फिर रिश्ता चाहे मां-बेटे का हो या मां-बेटी का। आज सब कुछ धीरे धीरे बदल रहा है या बदल चुका है। इस बदलाव को हम सब ने पूरी तरह से महसूस किया है। और महसूस कर रही है आज की मां। मां तो पहले भी बच्चों को प्रेम और स्नेह देती थी और आज भी उतना ही करती है। और जो नहीं करती उनके अंदर शायद मां की ममता नहीं है। क्योंकि आजकल कई घटनाएं हमारे सामने ऐसी आती हैं और कई घटनाएं घट चुकी है जो कहीं ना कहीं हमें मां और उसके महत्त्व से दूर कर देती हैं। किन्तु इस तरह की घटनाएं तो अपवाद हैं जो होते रहते हैं कभी कभी।

सिर्फ मदर्स डे पर ही नहीं हर दिन याद आएं मां

एक सत्य ये भी है कि आज सिर्फ पढ़ा लिखा और जाग्रत युवा ही जानता है कि मदर्स डे क्या होती है? यह दिन क्यों और किसको समर्पित होता है? शायद एक वर्ग पढ़ा लिखा और अनपढ़ वर्ग ऐसा भी है जिसे तो यह भी नहीं मालूम की यह दिन कब आता है? क्या होता है इस दिन? मां को याद कर लो मां में सम्मान में दो। चार बड़ी - बड़ी और अच्छी - अच्छी बातें करके। बस हो गया मदर्स डे। हिंदुस्तान में एक बहुत बड़ा तबका ऐसा हैं जिसे अपनी मां का जन्मदिन तक याद नहीं। लेकिन इसके आलावा उसे सारे दिन याद हैं। मसलन आज का इंसान, इंसान को पूरी तरह भूल चुका है तो क्या मायने रखता है उसके लिए कोई भी दिन। आज एक प्रश्न है हम सबके लिए आज मां को जो सम्मान मिलना चाहिए क्या वो उसे आज मिल रहा है? क्या हमें मदर्स डे पर ही अपनी मां को याद करना चाहिए? क्या आज की अति आधुनिक्तावादी और पाश्चत्य संस्कृति में डूबी हमारी युवा पीढ़ी भी समझती है मदर्स डे का मतलब। कभी वह अपनी मां के सम्मान में भी कुछ करती हैं। मां तो सिर्फ इतना चाहती हैं कि उसके बच्चे उसे कभी ना भूलें जब तक वह जीवित है। बस थोडा सा सम्मान जो उसे मिलना चाहिए और जो उसका हक है। इसके अलावा वह कभी भी कुछ नहीं चाहती और ना कभी चाहेगी। लेकिन हम सभी को मदर्स डे पर ही नहीं अपितु जीवन भर उसका मान - सम्मान करना चाहिए। वो अच्छी हो या बुरी पर मां तो मां होती है। क्योंकि उसका एक ऐसा कर्ज होता है हम सब के ऊपर जो हम मरकर भी नहीं उतार सकते। क्योंकि वो हमारी जन्म-दात्री है। जिसके कारण हम यह संसार देख पाए। और देख पाए दुनिया भर की नेमतें जो उसने हजारों कष्ट सहकर हम सब को दी।

बच्चे संग मां की भी पुर्नजन्म

जब कोई महिला किसी बच्चे को जन्म देती है, तब एक मां का भी जन्म होता है। यह बच्चे और मां के बीच अनूठा बंधन है। दरअसल, मां शब्द बच्चों द्वारा मां को दिया गया है। क्योंकि दुनिया की लगभग सभी भाषाओं में बच्चे जो पहला शब्द बोलते हैं उसका उच्चारण मां या मा मा जैसा होता है। इसलिए अंग्रेजी में मां को मॉम कहा जाता है। स्पेनिश में मामा, चाइनिज भाषा में भी मां को मामा कहा जाता है। हिन्दी में मां, वियतनामिज भाषा में मी कहा जाता है। बच्चों द्वारा मां का उच्चारण किए जाने की वजह से ही जन्म देनी वाली महिलाओं को मां या मदर कहा जाता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था कि खरे सोने को और भी बेहतर किया जा सकता है। लेकिन कोई भी अपनी मां को और सुंदर नहीं बना सकता। महात्मा गांधी ने ठीक कहा था क्योंकि पूरी दुनिया में मां से सुंदर और संवेदनशील कोई और नहीं होता। मां ही एक ऐसी शख्सियत है जो बच्चे को छूने मात्र से ही बता देती है कि बच्चा बड़ा होकर कैसा इंसान बनेगा? मां बेटे के अनूठे बंधन का सबसे सटीक उदाहरण महाभारत है, जिसमें अर्जुन के बेटे अभिमन्यु द्वारा चक्रव्यूह में घुसने की कला मां के गर्भ में रहते हुए सीखी थी। उनके पिता अर्जुन, जब सुभद्रा को चक्रव्यूह भेदकर बाहर निकलने का तरीका बता रहे थे, तो सुभद्रा सो गईं थी। इसलिए अभिमन्यु चक्रव्यूह में घुसने का तरीका तो सीख गए, मगर उससे निकलने का नहीं। आखिर में अभिमन्यु की मौत चक्रव्यूह में घिरकर हुई।

मां हमेशा से ही सभी के लिए वन्दनीय रही है, और रहेगी। कहा जा सकता है मां का कोई दिन नहीं होता। उसका ध्यान तो हमें हर वक्त रखना चाहिए। शायद हम उसको एक पल के लिए भूल भी जाएं पर मां कभी अपनी संतान को नहीं भूलती। फिर संतान अच्छी हो या बुरी वह हर हाल में उसे याद रखती है। भले ही उसकी संतान ने उससे नाता तोड़ दिया हो। मां के मुंह हर वक्त बस एक ही बात निकलती है।

साएं जैसा है मां बेटे का संबंध

युनिवर्सिटी आफ कालेज लंदन और इसेस यूनिवर्सिटी द्वारा 16 वर्षों तक 3 से 7 वर्ष के बच्चों पर की गयी रिसर्च में वैज्ञानिकों ने पता लगाया कि अगर मां अपने बच्चों के साथ दिन भर में 30 मिनट भी बिताती है। तो बच्चे का विकास बहुत तेजी से होने लगता है। वैज्ञानिकों का दावा है कि जो माएं दिन भर में सिर्फ 30 मिनट भी अपने बच्चों के साथ रहती हैं उनके बच्चे पढ़ाई लिखाई के मामले में अव्वल आते हैं। और बच्चों के सीखने की क्षमता बेहतर होती है। अगर माएं पेंटिंग, सिंगिंग और वाकिंग जैसी एक्टिविटीज में हिस्सा लेती हैं तो बच्चे सामाजिक रूप से ज्यादा मजबूत बनता है। कोलंबिया में 20 वर्षों तक नवजात बच्चों पर वैज्ञानिकों द्वारा किए गए रिसर्च में ऐसे बच्चे शामिल थे जिनका वजन जन्म के वक्त कम था, या फिर ये बच्चे समय से पहले पैदा हो गए थे। ऐसे बच्चों को प्री टर्म चाइल्ड कहा जाता है। इसमें पाया गया कि जो माएं प्री टर्म या कम वजन वाले बच्चों को कंगारू केयर देती हैं। उनके बच्चों में इनफेक्शन का खतरा कम हो जाता है। और बड़े होने पर भी उनका स्वास्थ्य बेहतर रहता है। कंगारू केयर एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें बच्चे के पैदा होने के बाद मां उसे सीने से लगाकर रखती है। इसे ठीक वैसे ही किया जाता है जिस तरह मादा कंगारू अपने बच्चो को अपने पेट के पास बनी थैली में रखती है।

कोख में ही बच्चे सीख जाते है सबकुछ

यूनिवर्सिटी ऑफ बार्सिलोना में वैज्ञानिकों द्वारा की गयी रिसर्च में दावा किया गया है कि गर्भावस्था के दौरान मां के दिमाग का एक विशेष हिस्सा सक्रिय हो जाता है। वैज्ञानिक इसे बेबी ब्रेन कहते हैं। ये बेबी ब्रेन बच्चे के पैदा होने के 2 वर्ष बाद तक भी सक्रिय रहता है। मां अपने दिमाग के इसी विशेष हिस्से के जरिए बच्चे के साथ भावनात्मक संबंध स्थापित करती है। और बिना कहे उसकी जरूरतों का पता लगा लेती है। वैज्ञानिकों की मानें तो मातृत्व के दौरान मां के शरीर में ऑक्सी-टोकिन नामक हार्मोन सक्रिय हो जाता है इसे कडल हार्मोन भी कहा जाता है। इसी हार्मोन की वजह से ही माओं में बच्चे को सीने से लगाने की भावना पैदा होती है। और माएं बच्चे के रोने या थोड़ी सी भी आवाज करने पर सचेत हो जाती हैं। इतना ही नहीं माओं और बच्चों के बीच कोशिकाओं का भी आदान-प्रदान होता है। ये आदान-प्रदान यानी गर्भनाल के जरिए होता है। एक अन्य रिसर्च में वैज्ञानिकों ने एक मां के शरीर में उसके बच्चे की कोशिकाओं का पता लगाया था। हैरानी की बात ये है कि तब उसके बच्चे की उम्र 27 वर्ष हो चुकी थी। यानी मातृत्व का असर दशकों तक रहता है। माना जाता है कि इंसान का शरीर 45 डेल तक का दर्द होता है। साल कमस तक का दर्द बर्दाश्त कर सकता है। जबकि बच्चे के जन्म के वक्त मां को 57 डेल तक का दर्द होता है। ये शरीर की 20 हड्डियों के एक साथ टूट जाने जितना दर्द है। आपको बता दें कि डेल दर्द मापने की यूनिट है, हालांकि प्रसव के दौरान होने वाले दर्द को लेकर वैज्ञानिकों के बीच मतभेद हैं। लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है, कि ये ताकत प्रकृति ने सिर्फ मां को ही दी है।

इसलिए मां को गर्भावस्था में दी जाती है नसीहत

वैज्ञानिकों का कहना है कि खान-पान, स्वाद, आवाज, जबान जैसी चीजें सीखने की बुनियाद हमारे अंदर तभी पड़ गई थीं, जब हम मां के पेट में पल रहे थे। यही वजह है कि गर्भवती महिलाओं को अक्सर नसीहतें दी जाती है कि ज्यादा मसालेदार चीजें न खाओ। ये न खाओ, वो न पियो। ऐसा न करो, वैसा न करो। वरना बच्चे पर बुरा असर पड़ेगा। मगर, तमाम तजुर्बों से ये बात सामने आई है कि गर्भवती महिलाएं, प्रेगनेंसी के दौरान जो कुछ भी खाती-पीती हैं, उसकी आदत उनके बच्चों को भी पड़ जाती है। इसकी वजह भी है। जो भी वो खाती हैं, वो खून के जरिए बच्चे तक पहुंचता ही है। तो जैसे-जैसे वो बढ़ता है, वैसे-वैसे मां के स्वाद की आदत उसे लगती जाती है। उत्तरी आयरलैंड की राजधानी बेलफास्ट की यूनिवर्सिटी के पीटर हेपर का दावा है कि बच्चे में जो भी संस्कार, खान-पान, चलने-फिरने व व्यवहार के गुण होते है, वह उसे मां से ही मिलती है। इसकी पुष्टि के लिए उन्होंने कुछ गर्भवती महिलाओं पर रिसर्च की। इन महिलाओं में से कुछ ऐसी थीं, जो लहसुन खाती थीं। और कुछ ऐसी भी थीं, जो लहसुन नहीं खाती थीं। उनका रिसर्च सिर्फ 33 बच्चों पर था। लेकिन, हेपर के इस रिसर्च में एक बात साफ हो गई कि जो महिलाएं गर्भ के दौरान लहसुन खाती थीं, उनके बच्चों को भी लहसुन खूब पसंद आता था।

एक जैसा होता है मां व बच्चों का स्वाद

पीटर हेपर के मुताबिक गर्भ के दसवें हफ्ते से भ्रूण, मां के खून से मिलने वाले पोषण को निगलने लगता है। यानी उसे उसी वक्त से मां के स्वाद के बारे में एहसास होने लगता है। लहसुन के बारे में तो ये खास तौर से कहा जा सकता है, क्योंकि इसकी महक देर तक हमारे बदन में बनी रहती है। कुछ इसी तरह के दावे पेन्सिल्वेनिया यूनिवर्सिटी, अमेरिका के भी वैज्ञानिकों का दावा है। उनके मुताबिक जो महिलाएं प्रेगनेंसी के दौरान गाजर खूब खाती थीं। उनके बच्चों को भी पैदाइश के बाद अगर गाजर मिला बेबी फूड दिया गया, तो वो स्वाद उन्हें ज्यादा पसंद आया। यानी गाजर के स्वाद का चस्का उन्हें मां के पेट से ही लग गया था। इंसान ही क्यों, कई और स्तनपायी जानवरों में भी ऐसा देखा गया है। पीटर हेपर कहते हैं कि पैदा होने के फौरन बाद बच्चे मां का दूध इसीलिए आसानी से पीने लगते हैं क्योंकि उसके स्वाद से वो गर्भ में रूबरू हो चुके होते हैं। हेपर के मुताबिक ये लाखों साल के कुदरती विकास की प्रक्रिया से आई आदत है। मां, बच्चों की परवरिश करती है। उनकी रखवाली करती है। इसलिए बच्चों को उससे ज्यादा अच्छी बातें कौन सिखा सकता है? खाने के मामले में खास तौर से ये कहा जा सकता है। दुनिया में आने पर कोई नुकसानदेह चीज न अंदर चली जाए, इसीलिए कुदरत बच्चों को मां के पेट में ही सिखा देती है कि क्या चीजें उसके लिए सही होंगी। ये बात खास तौर से उन जानवरों पर लागू होती है, जिनकी पैदाइश से ही उन पर खतरा मंडराने लगता है।

कब मिलेगा मां होने का सम्मान

मां, मम्मी, मुंहबोली मां तो कभी किसी दोस्त की मां में भी अपनी मां नजर आती है। लेकिन इन सब के बीच एक ऐसी मां है जिसे अभी पहचान नहीं मिल पाई है। हालांकि, कोई धर्म इंसानियत को पाप नहीं बताता लेकिन जब इंसानियत और निःस्वार्थ सेवा व्यवसाय बन जाता है तो घृणा का पात्र हो जाता है। कहने का अभिप्राय है कि भारत में सरोगेसी यानी किराए की कोख की, जो बच्चे को जन्म देती है, लेकिन मां का दर्जा नहीं पाती। जबकि उनके त्याग-बलिदान की तुलना किसी से की ही नहीं जा सकती। क्योंकि वह सबकुछ खोकर उस मां के जीवन में खुशियां बिखेरती है जो मां बन ही नहीं सकती। जबकि हर औरत का शादी के बाद एक ही ख्वाहिश होती है कि उसकी गोद में संतान खेले, लेकिन इसे कर्मों का फल कहें या विधाता की मर्जी, कुछ महिलाओं को यह सुख नहीं मिल पाता। समाज के तानों और आत्मग्लानि की आग में जलती ऐसी औरतों के लिए विज्ञान ने रास्ता निकाला और दुनिया के सामने आया सरोगेट मदर का कंसेप्ट। एक ऐसा माध्यम जिसकी मदद से कोई भी दंपति अपनी संतान के सपने को पूरा कर सकते हैं। जहां एक तरफ यह नाउम्मीदों के लिए उम्मीद बनकर आया है वहीं इसका व्यवसायीकरण भी जमकर हुआ। आज कुछ महिलाएं जहां दूसरों की जिंदगी खुशी से भरने के लिए अपनी कोख किराए पर देतीं हैं वहीं कुछ इसकी मदद से अपने बच्चों का पेट भरने के लिए रास्ता निकालतीं हैं। ऐसी माताएं एक-दो नहीं सैकड़ों में होती है, जिन्होंने दूसरे की मदद या फिर अपने बच्चों के लालन-पालन के लिए अपनी कोख किराए पर दी। हालांकि, कानून और नियमों के अनुसार सरोगेट मदर को बाकायदा काउंसलिंग दी जाती है कि यह बच्चा उसका नहीं है साथ ही बच्चे के जन्म के बाद वो उससे दूर हो जाता है लेकिन 9 महीने

“ यूनिवर्सिटी ऑफ बार्सिलोना में वैज्ञानिकों द्वारा की गयी रिसर्च में दावा किया गया है कि गर्भावस्था के दौरान मां के दिमाग का एक विशेष हिस्सा सक्रिय हो जाता है। वैज्ञानिक इसे बेबी ब्रेन कहते हैं। ये बेबी ब्रेन बच्चे के पैदा होने के 2 वर्ष बाद तक भी सक्रिय रहता है। मां अपने दिमाग के इसी विशेष हिस्से के जरिए बच्चे के साथ भावनात्मक संबंध स्थापित करती है। और बिना कहे उसकी जरूरतों का पता लगा लेती है।

अपनी कोख में उसे पालने वाली मां के लिए क्या ये सब इतना आसान होता होगा? देश में सरोगेसी को लेकर विवाद जारी है लेकिन अगर इसे समाज और देश पूरी तरह अपनाता है तो ऐसी मांओ की भी समाज में तब शायद वही जगह होगी जो एक मुह बोली मां की होती है।

दुनियाभर में है मां का ममत्व

सुबह हो या शाम, सर्दी हो या गर्मी, घर हो या बाहर। मां कभी थकती या रुकती है भला! वह रुक जाएं तो सृष्टि थम न जाएं। उसमें तो इतना सामर्थ्य है कि वह खुद के बुखार से पीडित में अपना फर्ज निभा लें। तपती दोपहर में जलती सड़क पर चलते हुए भी अपने जिगर के टुकडे को तपन का अहसास न होने दें। हाथ एक खाली हो और बच्चे दो हों तो एक को हाथ से, दुसरे को निगाहों से सुरक्षित करती चलें। ऐसे ममतामयी मां को याद करने के लिए मातृ दिवसह्न प्रत्येक वर्ष मई माह के दूसरे रविवार को मनाया जाता है। बेशक, मां को खुशियां और सम्मान देने के लिए पूरी जिंदगी भी कम होती है। फिर भी विश्व में मां के सम्मान में मातृ दिवस मनाया जाता है। मदर्स डे अलग-अलग तारीखों पर अलग-अलग तरीके से दुनिया के लगभग 46 देशों में मनाया जाता है। परन्तु मई माह के दूसरे रविवार को सर्वाधिक महत्त्व दिया जाता है। ये सभी के लिये एक बड़ा उत्सव है जब लोगों को अपनी मां का सम्मान करने का मौका मिलता है। जहां तक इसकी शुरूवात की बात है तो इसका इतिहास सदियों पुराना एवं प्राचीन है। यूनान में बसंत ऋतु के आगमन पर रिहा परमेश्वर की मां को सम्मानित करने के लिए यह दिवस मनाया जाता था। बताते हैं कि 16वीं सदी में इंग्लैण्ड का ईसाई समुदाय ईशु की मां मदर मेरी को सम्मानित करने के लिए यह त्योहार मनाने लगा। इसके बाद से दुनिया के कई देशों में मदर्स डे मनाया जाने लगा। यूके, चाईना, भारत, यूएस, मेक्सिको, डेनमार्क, इटली, फिनलैण्ड, तुर्की, ऑस्ट्रेलिया, कैनेडा, जापान और बेल्जियम आदि में बड़े ही धूमधाम से इस दिन माओं को कार्यक्रमों के जरिए याद किया जाता है। भारत में, इसे हर साल मई महीने के दूसरे रविवार को मनाया जाता है।

अन्ना जारविस हैं मदर्स डे की संस्थापक

फिरहाल, मदर्स डे मनाने का मूल कारण समस्त माओं को सम्मान देना और एक शिशु के उत्थान में उसकी महान भूमिका को सलाम करना है। इसको आधिकारिक बनाने का निर्णय पूर्व अमरीकी राष्ट्रपति वूडरो विलसन ने 8 मई, 1914 को लिया। 8 मई, 1914 में अन्ना जारविस की कठिन मेहनत के बाद तत्कालीन अमरीकी राष्ट्रपति वुडरो विल्सन ने मई के दूसरे रविवार को मदर्स डे मनाने और मां के सम्मान में एक दिन के अवकाश की सार्वजनिक घोषणा की। इसीलिए उन्हें मातृ दिवस के संस्थापक के रुप में भी जाना जाता है। यद्यपि वो अविवाहित महिला थी और उनको बच्चे नहीं थे। अपनी मां के प्यार और परवरिश से वो अत्यधिक प्रेरित थी और उनकी मृत्यु के बाद दुनिया की सभी मां को सम्मान और उनके सच्चे प्यार के प्रतीक स्वरुप एक दिन मां को समर्पित करने के लिये कहा। इसके बाद मदर्स डे की शुरूआत अमेरिका से हुई। वहां एक कवयित्री और लेखिका जूलिया वार्ड होव ने 1870 में 10 मई को मां के नाम समर्पित करते हुए कई रचनाएं लिखीं।

वे मानती थीं कि महिलाओं की सामाजिक जिम्मेदारी व्यापक होनी चाहिए। यही वजह है कि अमेरिका में मातृ दिवस (मदर्स डे) पर राष्ट्रीय अवकाश होता है। अगाथा क्रिस्टी के शब्दों में, एक शिशु के लिए उसकी मां का लाड़-प्यार दुनिया की किसी भी वस्तु के सामने अतुलनीय है। इस प्रेम की कोई सीमा नहीं होती और ये किसी कानून को नहीं मानता।

कई रुपों में होता है मदर्स डे

पूर्व में, ग्रीक के प्राचीन लोग वार्षिक वसंत ऋतु त्योहारों के खास अवसरों पर अपनी देवी माता के लिये अत्यधिक समर्पित थे। ग्रीक पौराणिक कथाओं के अनुसार, रिहिह (अर्थात बहुत सारी देवियों की माताओं के साथ ही क्रोनस की पत्नी) के सम्मान के लिये इस अवसर को वो मनाते थे। प्राचीन रोमन लोग हिलैरिया के नाम से एक वसंत ऋतु त्योंहार को भी मनाते थे जो सीबेल (अर्थात एक देवी माता) के लिये समर्पित था। उसी समय, मंदिर में सीबेल देवी मां के सामने भक्त चढ़ावा चढ़ाते थे। पूरा उत्सव तीन दिन के लिये आयोजित होता था जिसमें ढ़ेर सारी गतिविधियां जैसे कई प्रकार के खेल, परेड और चेहरा लगाकर स्वांग रचना होता था। कुंवारी मैरी (ईशु की मां) को सम्मान देने के लिये चैथे रविवार को ईसाईयों के द्वारा भी मातृ दिवस को मनाया जाता है। 1600 ईसवी में इंग्लैण्ड में मातृ दिवस मनाने उत्सव का एक अलग इतिहास है। ईसाई कुंवारी मैरी की पूजा करते हैं। उन्हें कुछ फूल और उपहार चढ़ाते हैं और उन्हें श्रद्धांजलि देते हैं। चर्च में इस दिन खास पूजा की जाती है। कुछ लोग तो उन्हें ग्रीटिंग कार्ड और बिस्तर पर नाश्ता देने के दौरान बच्चे अपनी मां को आश्चर्यजनक उपहार देते हैं। इस दिन, बच्चे अपनी मां को सुबह देर तक सोने देते हैं। उन्हें तंग नहीं करते। उनके लिये लजीज व्यंजन बनाकर खुश करते हैं। कुछ बच्चे अपनी मां को खुश करने के लिये रेडीमेड उपहार, कपड़े, पर्स, सहायक सामग्री, जेवर आदि खरीदते हैं। रात में सभी अपने परिवार के साथ घर या रेस्टोरेंट में अच्छे पकवानों का आनन्द उठाते हैं।

स्कूलों में भी होता है कार्यक्रम

शिक्षकों द्वारा स्कूल में मातृ दिवस पर एक बड़ा उत्सव आयोजित किया जाता है। इस उत्सव का हिस्सा बनने के लिये खासतौर से छोटे बच्चों की माताओं को आमंत्रित किया जाता है। इस दिन, हर बच्चा अपनी मां के बारे में कविता, निबंध लेखन, भाषण करना, नृत्य, संगीत, बात-चीत आदि के द्वारा कुछ कहता है। कक्षा में अपने बच्चों के लिये कुछ कर दिखाने के लिये स्कूल के शिक्षकों के द्वारा माताओं को भी अपने बच्चों के लिये कुछ करने या कहने को कहा जाता है। आमतौर पर मां अपने बच्चों के लिये नृत्य और संगीत की प्रस्तुति देती हैं। उत्सव के अंत में कक्षा के सभी विद्यार्थियों के लिये माताएं भी कुछ प्यारे पकवान बना कर लाती हैं और सभी को एक-बराबर बांट देती हैं। बच्चे भी अपनी मां के लिये हाथ से बने ग्रीटींग कार्ड और उपहार के रुप में दूसरी चीजें भेंट करते हैं। इस दिन को अलग तरीके से मनाने के लिये बच्चे रेस्टोरेंट, मॉल, पार्क आदि जगहों पर अपने माता-पिता के साथ मस्ती करने के लिये जाते हैं।

भारत में है मदर्स डे का खासा महत्व

मां परिवार की धुरी है जिसका किरदार भारतीय परिवेश में घर की सार-संभाल, बच्चों को परवरिश, उनकी शादी-ब्याह फिर पोते-पोतियों के लालन-पालन तक ही सीमित माना जाता है। लेकिन आज के दौर में सुखद यही है कि मांए वे सब कर रही हैं जो उन्हें संपूर्ण बनाएं। कहीं वे अपनी शख्सियत से लोगों के लिए प्रेरणा बन रही है तो कहीं अपने बच्चों की खास परवरिश से उन्हें दुनिया के लिए आदर्श बना रही है। यही वजह है कि भारत में हाल के सालों में मदर्स डे मनाने का चलन तेजी से बढ़ा है। फेसबुक, ट्वीटर, वाट्स्प से अपनी मां के साथ साथ दुसरे माताओं-बहनों को भी बधाईयां देने का सिलसिला सुबह से ही चालू हो जाता है।आधुनिकता के दौर में अब यह समाज के लिये बहुत बड़ा जागरुकता कार्यक्रम बन चुका है। सभी अपने तरीके से इस उत्सव में भाग लेते हैं और इसे मनाते हैं। इसकी बड़ी वजह यह है कि भारत एक महान संस्कृति और परंपराओं का देश है जहां लोग अपनी मां को पहली प्राथमिकता देते हैं। इसलिये, हमारे लिये मातृ दिवस का उत्सव बहुत मायने रखता है। ये वो दिन है जब हम अपनी मां के प्यार, देखभाल, कड़ी मेहनत और प्रेरणादायक विचारों को महसूस करते हैं। हमारे जीवन में वो एक महान इंसान है जिसके बिना हम एक सरल जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। वो एक ऐसी व्यक्ति हैं जो हमारे जीवन को अपने प्यार के साथ बहुत आसान बना देती है।

“ सुबह हो या शाम, सर्दी हो या गर्मी, घर हो या बाहर। मां कभी थकती या रुकती है भला! वह रुक जाएं तो सृष्टि थम न जाएं। उसमें तो इतना सामर्थ्य है कि वह खुद के बुखार से पीडित में अपना फर्ज निभा लें। तपती दोपहर में जलती सड़क पर चलते हुए भी अपने जिगर के टुकडे को तपन का अहसास न होने दें। हाथ एक खाली हो और बच्चे दो हों तो एक को हाथ से, दुसरे को निगाहों से सुरक्षित करती चलें।

ब्रह्माण्ड के प्रथम पत्रकार देवऋषि नारद

कुमुद रंजन सिंह

नारायण नारायण नारायण..

यह शब्द सुनते ही हमारे मन में छवि बनती है देवर्षि नारायण की जो हाथ में वीना लिए भगवान विष्णु का नाम लेते हुए एक जगह से दूसरे जगह भ्रमण करते रहते हैं। नारद मुनि को एक संचारकर्ता के रुप में जाना जाता है। संचार जीवन के लिए बहुत आवश्यक है। संचार के माध्यम से ही एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से जुड़ सकता है। यदि जीवन में संचार ना हों तो जीवन शून्य हो जाएगा। आज मनुष्य के पास संचार के कई साधन उपलब्ध है। रेडियो, टेलिविजन, समाचार पत्र, एवं इंटरनेट के जरिए आज एक क्षण में सारी दुनिया की खबर एक साथ पता चल जाती है। किन्तु धरती पर और परलोक में सर्वप्रथम संचार करने का श्रेय नारद मुनि को ही जाता है। उन्हें सृष्टि का पहला संवाददाता कहा जाता है। जो अपना काम एक पत्रकार के रुप में पूरी लगन, ईमानदारी के साथ संपूर्ण करते थे। संचार हर जीवित जीवन के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। संचार के कुछ माध्यमों के माध्यम से विचारों, विचारों और जानकारी को एक-दूसरे के साथ साझा करना संभव है। पूर्व-ऐतिहासिक काल से संचार प्रक्रिया प्रचलित रही है। न केवल इंसान बल्कि पौधे और जानवर भी अपनी भाषा में संवाद करते हैं। नारद मुनी संचार का अग्रणी माना जाता है। देवर्षि नारद ने इस लोक से उस लोक में परिक्रमा करते हुए संवादों के आदान-प्रदान द्वारा पत्रकारिता का प्रारंभ किया। इस प्रकार *देवर्षि नारद पत्रकारिता के प्रथम पुरुष भी हैं।* जो इधर से उधर घूमते हैं तो संवाद का सेतु ही बनाते हैं। दरअसल देवर्षि नारद भी इधर और उधर के दो बिंदुओं के बीच संवाद का सेतु स्थापित करने के लिए संवाददाता का कार्य करते हैं। नारद जी के जन्म के उपलक्ष्य में ही नारद जयंती मनाई जाती है। हिन्दू मान्यताओं के अनुसार नारद मुनि का जन्म सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा जी की गोद से हुआ था। देवताओं के ऋषि, नारद मुनि की जयंती प्रत्येक वर्ष ज्येष्ठ महीने की कृष्णपक्ष द्वितीया को मनाई जाती है। उन्हें ब्रह्मदेव के मानस पुत्र के रूप में भी जाना जाता है। कहा जाता है कि कठिन तपस्या के बाद नारद को ब्रह्मर्षि का पद प्राप्त हुआ था। नारद बहुत ज्ञानी थे और इसी वजह से राक्षस हो या देवी-देवता सभी उनका बेहद आदर और सत्कार करते थे। देवर्षि नारद को महर्षि व्यास, महर्षि बाल्मीकि और महाज्ञानी शुकदेव का गुरु माना जाता है। कहते हैं कि नारद मुनि के श्राप के कारण ही भगवान राम को देवी सीता से वियोग सहना पड़ा था। नारद मुनि, ब्रह्मा के सात मानस पुत्रों में से एक है। उन्होने कठिन तपस्या से ब्रह्मर्षि पद प्राप्त किया था। वे भगवान विष्णु के अनन्य भक्तों में से एक माने जाते है। इस वर्ष नारद जयंती मई 27 (गुरुवार) को मनाई जाएगी।

ब्रम्हा ने दिया था नारद मुनि को श्राप

नारद मुनि को अक्सर इधर की बात उधर करने के रुप में जाना जाता है। नारद मुनि ही केवल ऐसे देवता थे जो कभी भी, किसी भी क्षण देवी-देवता, ऋषि,मुनि, असुर दैत्यों, स्वर्ग, नरक, धरती, आकाश सर्वत्र जा सकते थे। उन्हें कभी किसी से आज्ञा लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। वो ब्रहमचारी और ज्ञानी थे उन्होंने कई ऋषि-मुनियों के ज्ञान देकर धन्य किया है। मान्यता है कि देवर्षि नारद भगवान विष्णु के परम भक्त हैं। श्री हरि विष्णुध को भी नारद अत्यंत प्रिय हैं। नारद हमेशा अपनी वीणा की मधुर तान से विष्णु जी का गुणगान करते रहते हैं। वे अपने मुख से हमेशा नारायण-नारायण का जाप करते हुए विचरण करते रहते हैं। यही नहीं माना जाता है कि नारद अपने आराध्यन विष्णु के भक्तों की मदद भी करते हैं। मान्याता है कि नारद ने ही भक्त प्रह्लाद, भक्त अम्बरीष और ध्रुव जैसे भक्तों को उपदेश देकर भक्तिमार्ग में प्रवृत्त किया। किन्तु अपने ही पिता के श्राप के कारण वे आजीवन कुंवारे रहे। शास्त्रों के अनुसार ब्रह्माजी ने नारद जी से सृष्टि के कामों में हिस्सा लेने और विवाह करने के लिए कहा लेकिन उन्होंने अपने पिता की आज्ञा का पालन करने से मना कर दिया। तब क्रोध में बह्माजी ने देवर्षि नारद को आजीवन अविवाहित रहने का श्राप दे दिया था। पुराणों में ऐसा भी लिखा गया है कि राजा

“ नारद मुनि को अक्सर इधर की बात उधर करने के रुप में जाना जाता है। नारद मुनि ही केवल ऐसे देवता थे जो कभी भी, किसी भी क्षण देवी-देवता, ऋषि,मुनि, असुर दैत्यों, स्वर्ग, नरक, धरती, आकाश सर्वत्र जा सकते थे। उन्हें कभी किसी से आज्ञा लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। वो ब्रहमचारी और ज्ञानी थे उन्होंने कई ऋषि-मुनियों के ज्ञान देकर धन्य किया है। मान्यता है कि देवर्षि नारद भगवान विष्णु के परम भक्त हैं। श्री हरि विष्णुध को भी नारद अत्यंत प्रिय हैं।

प्रजापति दक्ष ने नारद को श्राप दिया था कि वह दो क्षण से ज्यादा कहीं रुक नहीं पाएंगे। यही वजह है कि नारद अक्सर यात्रा करते रहते थे। कहते हैं राजा दक्ष की पत्नी आसक्ति से 10 हजार पुत्रों का जन्म हुआ था। लेकिन इनमें से किसी ने भी दक्ष का राज पाट नहीं संभाला क्योंकि नारद जी ने सभी को मोक्ष की राह पर चलना सीखा दिया था। बाद में दक्ष ने पंचजनी से विवाह किया और इनके एक हजार पुत्र हुए। नारद जी ने दक्ष के इन पुत्रों को भी सभी प्रकार के मोह माया से दूर रहकर मोक्ष की राह पर चलना सीखा दिया। इस बात से क्रोधित दक्ष ने नारद जी को श्राप दे दिया कि वह सदा इधर उधर भटकते रहेंगे एक स्थान पर ज्यादा समय तक नहीं टिक पाएंगे।

नारद मुनि की जन्म कथा

ब्रहमा के पुत्र होने से पहले नारद मुनि एक गंधर्व थे। पौराणिक कथाओं के अनुसार अपने पूर्व जन्म में नारद 'उपबर्हणह्ल नाम के गंधर्व थे। उन्हें अपने रूप पर बहुत ही घमंड था। एक बार स्वर्ग में अप्सराएँ और गंधर्व गीत और नृत्य से ब्रह्मा जी की उपासना कर रहे थे तब उपबर्हण स्त्रियों के साथ वहां आए और रासलीला में लग गए। यह देख ब्रह्मा जी अत्यंत क्रोधित हो उठे और उस गंधर्व की श्राप दे दिया कि वह 'शूद्र योनिह्ल में जन्म लेगा। बाद में गंधर्व का जन्म एक शूद्र दासी के पुत्र के रूप में हुआ।

दोनों माता और पुत्र सच्चे मन से साधू संतो की सेवा करते। नारद मुनि बालक रुप में संतों का जूठा खाना खाते थे जिससे उनके ह्रदय के सारे पाप नष्ट हो गए। पांच वर्ष की आयु में उनकी माता की मृत्यु हो गई। अब वह एकदम अकेले हो गए। माता की मृत्यु के पश्चात नारद ने अपना समस्त जीवन ईश्वर की भक्ति में लगाने का संकल्प लिया। कहते हैं एक दिन वह एक वृक्ष के नीचे ध्यान में बैठे थे तभी अचानक उन्हें भगवान की एक झलक दिखाई पड़ी जो तुरंत ही अदृश्य हो गई। इस घटना के बाद उस उनके मन में ईश्वर को जानने और उनके दर्शन करने की इच्छा और प्रबल हो गई। तभी अचानक आकाशवाणी हुई कि इस जन्म में उन्हें भगवान के दर्शन नहीं होंगे बल्कि अगले जन्म में वह उनके पार्षद के रूप उन्हें पुनः प्राप्त कर सकेगें। समय आने पर यही बालक(नारद मुनि) ब्रह्मदेव के मानस पुत्र के रूप में अवतीर्ण हुए जो नारद मुनि के नाम से चारों ओर प्रसिद्ध हुए। देवर्षि नारद को श्रुति-स्मृति, इतिहास, पुराण, व्याकरण, वेदांग, संगीत, खगोल-भूगोल, ज्योतिष और योग जैसे कई शास्त्रों का प्रकांड विद्वान माना जाता है। देविर्षि नारद के सभी उपदेशों का निचोड़ है- सर्वदा सर्वभावेन निश्चिन्तितैः भगवानेव भजनीयः। अर्थात सर्वदा सर्वभाव से निश्चित होकर केवल भगवान का ही ध्यान करना चाहिए।

नारद जयंती उत्सव और पूजा विधि

नारद मुनि भगवान विष्णु को अपना आराध्य मानते थे। उनकी भक्ति करते थे इसलिए नारद जयंती के दिन भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी का पूजन करें। इसके बाद नारद मुनि की भी पूजा करें। गीता और दुर्गासप्त शती का पाठ करें। इस दिन भगवान विष्णु के मंदिर में भगवान श्री कृष्ण को बांसुरी भेट करें। अन्न और वस्त्रं का दान करें। इस दिन कई भक्त लोगों को ठंडा पानी भी पिलाते हैं। ऋषि नारद आधुनिक दिन पत्रकार और जन संवाददाता का अग्रदूत है। इसलिए दिन को 'पत्रकार दिवस' भी कहा जाता है और पूरे देश में इस रूप में मनाया जाता है। उन्हें संगीत वाद्य यंत्र वीना का आविष्कारक माना जाता है। उन्हें गंधर्व के प्रमुख नियुक्त किया गया है जो दिव्य संगीतकार थे। उत्तर भारत में इस अवसर पर बौद्धिक बैठकें, संगोष्ठियों और प्रार्थनाएं आयोजित की जाती हैं। इस दिन को आदर्श मानकर पत्रकार अपने आदर्शों का पालन करने, समाज के लोगों के प्रति दृष्टिकोण और जन कल्याण की दिशा में लक्ष्य रखने का प्रण करते है ।

ज्येष्ठ माह के कृष्ण पक्ष की द्वितीया को नारद जयंती के रुप में मनाई जाती है. हिन्दू शास्त्रों के अनुसार नारद को ब्रह्मा के सात मानस पुत्रों में से एक माना गया है. नारद को देवताओं का ऋषि माना जाता है. इसी वजह से उन्हें देवर्षि भी कहा जाता है. मान्यता है कि नारद तीनों लोकों में विचरण करते रहते हैं.

देवर्षि नारद व लोक कल्याण भावना

नारद मुनि भगवान श्री विष्णु के भक्त और सदैव नारायण नारायण नाम का स्मरण करते हुए एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करते रहते हैं. देवर्षि नारद भक्ति और शक्ति का अदभुत समन्वय रहे हैं. यह सदैव लोक कल्याण के प्रचार और

प्रसार को अविरल गति से प्रवाहित करने वाले एक महत्वपूर्ण ऋषि भी हैं.

शास्त्रों के अनुरुप सृष्टि में एक लोक से दूसरे लोक में विचरण करते हुए नारद मुनि सभी के कष्टों को प्रभु के समक्ष रखते हैं. सभी जन की सहायता करते हैं. देवर्षि नारद देव और दैत्यों सभी में पूजनीय स्थान प्राप्त करते हैं. सभी वर्ग इनका उचित सम्मान करते हैं. क्योंकि ये किसी एक पक्ष की बात नहीं करते हैं, अपितु सभी वर्गों को साथ में लेकर चलने की इनकी अवधारणा ही इन्हें सभी का पूजनीय भी बनाती है. वेद एवं पुराण में ऋषि नारद जी के संदर्भ में अनेकों कथाएं प्राप्त होती है. हर स्थान में इनका होना उल्लेखनिय भूमिका दशार्ता है. शिवपुराण हो या विष्णु पुराण, भागवद में श्री विष्णु स्वयं को नारद कहते हैं. रामायण के संदर्भ में भी इन्हीं की भूमिका सदैव प्रमुख रही. देवर्षि नारद धर्म को एक बहुत ही श्रेष्ठ प्रचार रुप में जाना गया है.

नारद मुनि का वीणा गान और ग्रंथों के निर्माता

नारद मुनी के पास उनका प्रमुख संगीत वाद्य वीणा है.इस वीणा द्वारा वह सभी जनों के दुखों को दूर करते हैं. इस वीणा गान में वह सदैव नारायण का पाठ करते नजर आते हैं. अपनी वीण के मधुर स्वर से वह सभी के कष्टों को दूर करने में वह सदैव ही अग्रीण रहे. नारद जी को ब्रह्मा से संगीत की शिक्षा प्राप्त हुई थी. नारद अनेक कलाओं और विद्याओं में निपुण रहे. नारद मुनी को त्रिकालदर्शी भी बताया जाता है. ब्रह्मऋषि नारद जी को शास्त्रों का रचियता, आचार्य, भक्ति से परिपूर्ण, वेदों का जानकार माना गया. संगीत शास्त्र में भी इनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही है.

नारद मुनि द्वारा किये गए कार्य

नारद मुनी के अनेकों कार्यों का वर्णन मिलता है जो सृष्टि के संचालन में महत्व रखता है. श्री लक्ष्मी का विवाह विष्णु के साथ होना, भगवान शिव का देवी पार्वती से विवाह संपन्न कराना, उर्वशी और पुरुरवा का संबंध स्थापित करना. महादेव द्वारा जलंधर का विनाश करवाना. वाल्मीकि को रामायण की रचना निर्माण की प्रेरणा देना. व्यासजी से भागवत की रचना करवाना. इत्यादि अनेकों कार्यों को उन्हीं के द्वारा संपन्न होता है. हरिवंश पुराण अनुसार जी दक्ष प्रजापति के हजारों पुत्रों बार-बार संसार से मुक्ति एवं निवृत्ति देने में नारद जी की अहम भूमिका रही. उन्हीं के वचनों को सुनकर दक्ष के पुत्रों ने सृष्टि को त्याग दिया. मैत्रायी संहिता में नारद को आचार्य के रूप में स्थापित किया गया है।

> “नारद मुनि भगवान विष्णु को अपना आराध्य मानते थे। उनकी भक्ति करते थे इसलिए नारद जयंती के दिन भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी का पूजन करें। इसके बाद नारद मुनि की भी पूजा करें। गीता और दुर्गासप्त शती का पाठ करें। इस दिन भगवान विष्णु के मंदिर में भगवान श्री कृष्ण को बांसुरी भेट करें। अन्न और वस्त्रं का दान करें। इस दिन कई भक्त लोगों को ठंडा पानी भी पिलाते हैं। ऋषि नारद आधुनिक दिन पत्रकार और जन संवाददाता का अग्रदूत है।

कोरोनिल : बाबा रामदेव के सफेद झूठ

क्या रामदेव योग गुरु के रूप में पहले देश और दुनिया भर में नामचीन हो चुके रामदेव झूठ बोलते हैं?

क्या एक संत ऋषि का चोला पहने हुए बाबा रामदेव ने झूठ के सहारे हजारों करोड़ रुपए का आर्थिक साम्राज्य पतंजलि खड़ा किया हैङ्क क्या रामदेव ने दुनिया भर में भय और संत्रास के प्रतीक बन चुके कोरोना कोविड-19 के भय का लाभ उठाने का प्रयास और कोरोनिल दवा को बना और बेचकर नहीं किया है?

सभी प्रश्नों का एक ही जवाब है बीते दिनों जब बाबा रामदेव ने भारत सरकार के दो महत्वपूर्ण मंत्री नितिन गडकरी व डाक्टर हर्षवर्धन के साथ मंच से यह घोषणा की उन्होंने कोरोना की बनाई गई दवाई कोरोनिल डब्ल्यूएचओ यानी विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा फार्मास्यूटिकल प्रोडक्ट (सी ओ पी पी)का प्रमाण पत्र मिल गया है और अब कोरोनिल दुनिया के 158 देशों में पतंजलि द्वारा निर्यात की जा सकेगी।

सवाल सिर्फ इतना है कि क्या देश की संविधानिक सरकार के दो मंत्रियों की मौजूदगी में उनकी जानकारी के बगैर, सहमति के बिना रामदेव ने कोरोनिल दवाई के संदर्भ में झूठ बोला है तो ऐसे में रामदेव पर भारत सरकार क्या कठोर एक्शन लेने जा रही है।

कोरोना जैसा कि सर्वज्ञात है दुनिया भर में एक तबाही का प्रतीक महामारी मान ली गई है। और उसके संबंध में किसी भी प्रकार की दवा बिना प्रमाणन, अनुज्ञा के वितरित वार्षिक बिक्री नहीं की जा सकती। तब रामदेव ऐसी क्या हस्ती हैं जो अपनी हांक कर देश और दुनिया को सीधे-सीधे खतरे में डाल कर लोगों को काल कवलित करने का काम कर रहे हैं। कथित रूप से उनके द्वारा घोषणा की जा रही है कि उनके द्वारा निर्मित कोरोनिल कोरोनावायरस के लिए एक प्रभावी दवा है। मगर आई एम ए और डब्ल्यूएचओ ने जब सवाल उठा दिया है तो रामदेव पर सरकार को सख्त कार्रवाई करनी चाहिए और मंत्रियों से भी देश और कानून को पूछना चाहिए कि उन्होंने ऐसा किस प्रभाव में किया है जिसके कारण लोगों के स्वास्थ्य और पैसों की क्षति की संभावना है

कोरोना बना कमाई का जरिया

एक तरफ कोविड-19 से देश दुनिया हलकान परेशान है दूसरी तरफ बाबा रामदेव सत्ता के संरक्षण में कोरोनिल बना कर जमकर रुपए कमा रहे हैं ऐसा काम कोई और करता तो क्या हुआ जेल की चीजों के पीछे नहीं होता? रामदेव योग गुरु के रूप में एक सम्मानित नाम बन चुके हैं।एक समय था जब सत्ता हो या विपक्ष सारी नामधारी हस्तियां रामदेव के योग की पाठशाला में हाजिरी लगाती थी।

“क्या एक संत ऋषि का चोला पहने हुए बाबा रामदेव ने झूठ के सहारे हजारों करोड़ रुपए का आर्थिक साम्राज्य पतंजलि खड़ा किया हैङ्क क्या रामदेव ने दुनिया भर में भय और संत्रास के प्रतीक बन चुके कोरोना कोविड-19 के भय का लाभ उठाने का प्रयास और कोरोनिल दवा को बना और बेचकरनहीं किया है? सभी प्रश्नों का एक ही जवाब है बीते दिनों जब बाबा रामदेव ने भारत सरकार के दो महत्वपूर्ण मंत्री नितिन गडकरी व डाक्टर हर्षवर्धन के साथ मंच से यह घोषणा की उन्होंने कोरोना की बनाई गई।

रामदेव कभी हरिद्वार में साइकिल चलाते थे। मगर योग ने उन्हें सम्मान और पैसा सब कुछ दिया था मगर ऐसा क्या हो गया कि उन्हें और पैसों की चाहत में एक उद्योगपति के रूप में सामने आना पड़ा और आज कोरोना की दवा बनाकर रातों-रात स्वयंभू लोगों के रक्षक बनकर कोरोनिल दवाई का इजाद करके स्वयं घोषणा करनी पड़ रही है कि यह कोरोनावायरस से बचाव में परम सहायक है और विश्व स्वास्थ संगठन डब्ल्यूएचओ ने इसे स्वीकृति प्रमाणन दिया है।

कहते हैं समझदार आदमी झूठ ऐसा बोलता है कि पकड़ा ना जाए।और बेशर्म आदमी झूठ बोलकर पकड़े जाने पर होङ्ग हो।। कर हंसता है और कहता है वह तो मजाक कर रहा था। रामदेव बाबा क्या दूसरी श्रेणी में रखे जा सकते हैं। मंत्रियों के समक्ष देश की मीडिया को संबोधित करके सफेद झूठ का वितंडा खड़ा करने का प्रयास पर से पर्दा उठ गया है। ऐसे में यह योगी का बाना पहनने वाले रामदेव को देश और मानवता से माफी मांगनी चाहिए और तत्काल कोरोनिल को बेचना बंद करना चाहिए।

भारत सरकार को भी चाहिए कि ऐसे झूठ समाज में और ना फैले दूसरे लोग भी रामदेव के रास्ते पर चल पड़े इसलिए कानून का डंडा चलाएं।

मानवता के प्रति गंभीर अपराध

कहते हैं सारे अपराधों में स्वास्थ्य के साथ किए जाने वाला अपराध सबसे गंभीर घातक और अक्षम्य होता है। जब सारी दुनिया की सरकारें मिलकर कोरोना वैक्सीन ढूंढ रही थी और माना जा रहा था कि कोरोना वायरस की वैक्सीन को एक 2 साल का लंबा वक्त लगेगा।

ऐसे में बाबा रामदेव ने आनन-फानन में कोरोनिल को भारत में लांच कर दिया। कथित रूप से भारत सरकार के स्वास्थ्य विभाग से भी कोई अनुमति नहीं ली गई। बात जब बढ़ी तब ना-नुकुर के बाद सरकार की अनुमति मिल गई और राम बाबा की बल्ले-बल्ले हो गई। पतंजलि के सारे स्टोर्स में दवा धड़ल्ले से बिकने लगी। हमारे देश में भेड़ चाल ऐसे ही नहीं चल पड़ती रामदेव की कोरोनिल की दवा भी धड़ल्ले से विकी और स्वयं बाबा के प्रवक्ता के अनुसार 500 करोड़ रुपए की कोरोनिल उन्होंने बेची है। और अब उनकी निगाह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रशंसा कर उनका कृपा पात्र बन के दुनियाभर में दवाई बेचने की थी। दो मंत्रियों के साथ प्रेस कॉन्फ्रेंस करके अश्वमेघ का घोड़ा छोड़ने ही वाले थे कि डब्लू एच ओ और आइएमए ने उनके घोड़े की रास पकड़ ली है।

इधर महाराष्ट्र की उद्धव सरकार उनके स्वास्थ्य मंत्री देशमुख ने बाबा रामदेव की कोरोनिल को महाराष्ट्र में बिकने से प्रतिबंधित कर दिया है।और सार्वजनिक रूप से कहा है कि केंद्र के दो मंत्रियों को बाबा रामदेव के साथ मंच साझा नहीं करना चाहिए था। आईएमए ने भी उंगली उठाई इसके बाद यह स्पष्ट है कि बाबा रामदेव ने कोरोना संबंधी दवाई के बारे में देश की आवाम के समक्ष झूठ बोला है।

आने वाले समय में देश के अन्य राज्य भी बाबा रामदेव की कोरोना वायरस दवाई पर प्रतिबंध लगाएंगे। और हो सकता है मामले मुकदमे में उलझ कर रामदेव का पतंजलि का यह किला ढहने भी लगे।

> “कहते हैं समझदार आदमी झूठ ऐसा बोलता है कि पकड़ा ना जाए।और बेशर्म आदमी झूठ बोलकर पकड़े जाने पर होङ्ग हो।। कर हंसता है और कहता है वह तो मजाक कर रहा था। रामदेव बाबा क्या दूसरी श्रेणी में रखे जा सकते हैं। मंत्रियों के समक्ष देश की मीडिया को संबोधित करके सफेद झूठ का वितंडा खड़ा करने का प्रयास पर से पर्दा उठ गया है। ऐसे में यह योगी का बाना पहनने वाले रामदेव को देश और मानवता से माफी मांगनी चाहिए।

टीएमसी ने पश्चिम बंगाल में निकाला जिन्न

जितेन्द्र कुमार सिन्हा

कोरोना संक्रमण की दूसरी लहर के बीच देश के 5 राज्यों यथा पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, असम, केरल, और पुडुचेरी में विधानसभा आम चुनाव सम्पन्न हुआ है। इस चुनाव के लिए सभी पार्टियाँ अपनी-अपनी नैया पार करने में पूरी ताकत लगाई थी। सर्वे करने बाले अपनी-अपनी अटकल भी लगाये थे। पश्चिम बंगाल में टीएमसी की वापसी तय मानी जा रही थी, लेकिन सीटों की नजरिया और भारतीय जनता पार्टी के धुआधार चुनाव प्रचार से बहुत बड़ा फैदा भारतीय जनता पार्टी को होते दिख रहा था। ऐसी स्थिति में यह कहना मुस्किल हो रहा था कि पश्चिम बंगाल में इसबार किसकी सरकार बनेगी।

चुनाव परिणाम 02 मई (रविवार) को आई। परिणाम और चुनाव प्रचार को देखने से ऐसा लगता है कि बिहार के लालू प्रसाद की सरकार में जिस प्रकार से जिन्न निकलता था ठीक उसी प्रकार से टीएमसी ने पश्चिम बंगाल में जिन्न निकाला है। ऐसे देखा जाय तो पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी ने 10 वर्षों से सरकार चला रही है। यह चुनाव तीसरी पारी यानि हैट्रिक की पारी थी, इसलिए ममता बनर्जी ने अपनी हैट्रिक पारी शुरू करने के संक्लप के साथ चुनाव मैदान में थी, तो वहीं भाजपा पश्चिम बंगाल से ममता बनर्जी की सरकार को उखाड़ फेकने के लिए अपने लछ्य और दावे के साथ चुनाव मैदान में थी। मतगणना का परिणाम से यह स्पष्ट हो गया है कि पश्चिम बंगाल में 292 सीटों पर मतदान हुआ था उसमें से टीएमसी ने 215 सीटें, बीजेपी ने 76 सीटें और अन्य को 01 सीटें मिली।

टीएमसी ने बड़ी जीत दर्ज की है, इसमें कोई संसय नही है, लेकिन अब प्रश्न यह उठता है कि इतनी बड़ी जीत के बावजूद ममता बनर्जी ने अपनी सीट नहीं बचा पायी और अपना सीट, शुभेंदु अधिकारी के हाथों 1957 वोटों से हार गई।यह हार उन्हें रिकाउंटिंग में मिली, जबकि रिकाउंटिंग से पहले ममता बनर्जी को विजय होने की घोषणा की गई थी। जब ममता बनर्जी ने मुख्यमंत्री रहते अपनी सीट से हार गई तो अन्य सीटों पर उनकी पार्टी की इतनी बड़ी जीत कैसे मिली, कहीं जिन्न तो नही निकली?

पश्चिम बंगाल में मतगणना के दौरान नंदीग्राम सीट पर ममता बनर्जी और सुवेंदु अधिकारी के बीच कांटे की टक्कर रही। इस दौरान कभी ममता बनर्जी आगे तो कभी सुवेंदु अधिकारी, लेकिन आखिरी राउंड की काउंटिंग में पासा पलटा और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी आगे हो गईं। ममता बनर्जी की जीत की घोषणा होने के बाद सुवेंदु अधिकारी ने आपत्ति दर्ज की इसके बाद नंदीग्राम सीट पर रिकाउंटिंग में ममता बनर्जी को हार का सामना करना पड़ा। इस हार के बाद ममता बनर्जी ने नंदीग्राम सीट के नतीजों पर अब आपत्ति उठा रही हैं। ममता बनर्जी ने कहा है कि वे इन नतीजों के खिलाफ अदालत का दरवाजा खटखटाएंगी।

पश्चिम बंगाल में सिर्फ एक बार को छोड़कर जो भी पार्टी सत्ता पर काबिज हुई उसे 200 से अधिक सीटें मिलतो रही है। इस बार की चुनाव में भी यह रिकार्ड बरकार रही और ळटउ को 200 से अधिक सीटें मिली। 49 वर्षों में 1972 से अब तक बंगाल की यह 11वां चुनाव था। ळटउ ने वर्ष 2016 में 211 सीटें और वर्ष 2011 में 228 सीटें जीती थीं। उससे पहले 7 बार लगातार लेफ्ट पार्टी ने चुनाव जीता था। सिर्फ एक बार 2001 में लेफ्ट को 200 से 4 सीटें कम यानि 196 सीटें मिलीं। बाकी चुनावों में लेफ्ट को भी हमेशा 200 सीटों से ज्यादा सीटें मिलती रही थी।

तमिलनाडु में चुनाव के समय सत्ताधारी एआईडीएमके और बीजेपी गठबंधन

भारी पड़ता दिख रहा था, जबकि जीत के लिए डीएमके और कांग्रेस गठबंधन भी अपनी पूरी ताकत लगाए हुए था। अब चुनाव परिणाम आ गया है और इस परिणाम में तमिलनाडु की 234 सीटों पर चुनाव हुए थे, उसमें से डीएमके को 150 सीटें,

> चुनाव परिणाम 02 मई (रविवार) को आई। परिणाम और चुनाव प्रचार को देखने से ऐसा लगता है कि बिहार के लालू प्रसाद की सरकार में जिस प्रकार से जिन्न निकलता था ठीक उसी प्रकार से टीएमसी ने पश्चिम बंगाल में जिन्न निकाला है। ऐसे देखा जाय तो पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी ने 10 वर्षों से सरकार चला रही है। यह चुनाव तीसरी पारी यानि हैट्रिक की पारी थी।

एआईडीएमके को 70 सीटें, एमएनएम+ को 01 सीट और अन्य को 13 सीटें मिली है। यहाँ एआईडीएमके और बीजेपीइखढ गठबंधन की सरकार थी जिसे हार को देखना पड़ा, जबकि यहाँ डीएमके+ ने बड़ी जीत दर्ज की है।

असम में भारतीय जनता पार्टी फिर से अपनी सरकार बनायेगी, यह साफ-साफ दिख रहा था, लेकिन कुछ सीटों का नुकसान भाजपा को होने की सम्भानाएँ थी। असम में 126 सीटों में से बीजेपी को 75, कांग्रेस को 50 और अन्य को 01 सीटें मिली है। इस प्रकार असम में भाजपा ने अपनी जीत बरकरार रखा।यहाँ सरकार गठन के लिए 64 सीटों की बहुमत आवश्यक थी।

केरल में चुनाव के समय सत्ताधारी एलडीएपफ की सरकार की पुनः वापसी करती दिख रही थी।चुनाव परिणाम के बाद केरल की 140 सीटों में से एलडीएपफ को 91 सीटें, यूडीएफ को 42 सीटें और अन्य को 07 सीटें मिली है। इस प्रकार केरल की सत्ताधारी पार्टी ने अपनी जीत बरकरार रखी।

पुडुचेरी में कांग्रेस-डीएमके गठबंधन को बड़ी नुकसान होता दिख रहा था और यहाँ भारतीय जनता पार्टी गठबंधन की सरकार बनने की पूरी संभावना थी। चुनाव परिणाम के अनुसार पुडुचेरी की 30 सीटों में से एनडीए को 15 सीटें, कांग्रेस-डीएमके को 09 सीटें और अन्य को 06 सीटें मिली है।यहाँ एनडीए ने अपनी जीत दर्ज की है।

पांच राज्यों के विधान सभा चुनाव से भाजपा को काफी उम्मीद थी।लेकिन पश्चिम बंगाल में बीजेपी को निराशा मिली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह समेत कई केन्द्रीय मंत्रियों ने पश्चिम बंगाल में मोर्चा सम्भाले हुए थे, लेकिन चुनाव परिणाम ने सभी को धराशायी कर दिया। बीजेपी ने चुनाव आयोग, केन्द्रीय पुलिस बलों, ईवीएम सेटिंग, पैसे के बल पर नेताओं व मतदाताओं को खरीदने, मिडिया के इस्तेमाल जैसे तमाम तिकड़मों की बदनामी सहने के बाद भी पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और केरल विधानसभा चुनावों में भाजपा की जीत नही हो सकी।

पश्चिम बंगाल में वर्ष 2011 में मुस्लिम मतदाताओं की संख्या 27 प्रतिशत थी, जो अब बढ़ कर 30 प्रतिशत बतायी जा रही है। 2011 और पुनः 2016 में ममता बनर्जी को बंगाल की सत्ता में लाने में इन मुस्लिमों ने बड़ी भूमिका रही थी। इसी वोट बैंक की राजनीति के चलते ममता बनर्जी आँखे बन्दकर मुस्लिमों की पछधर हो गई थी। परिणामस्वरूपपश्चिम बंगाल के स्कूलों में साम्प्रदायिक कृत बनाकर सरस्वती पूजा पर रोक लगाई गई। दुर्गा प्रतिमाओं के विसर्जन पर इस लिए रोक लगाई गई कि उसी दिन मूहरम का जुलूस था। ऐसा कहा जाता है कि बंगलादेशी मुस्लिमों और रोहिंग्या मुस्लिमों को बंगाल में आने की खुली छूट दी गई, वोट की दृष्टि से उन्हें मतदाता भी बना लिया गया। नतीजा यह हुआ की देखते देखते दस हजार बंगाल की सीमावर्ती गाँव हिन्दू विहीन हो गये। जहाँ हिन्दू अल्पमत में थे वहाँ उन पर तरह तरह के अत्याचार किये गये, पर वोट बैंक की राजनीति के चलते ममता बनर्जी की सेहत में कोई फर्क नही पड़ा।

> “ पश्चिम बंगाल में मतगणना के दौरान नंदीग्राम सीट पर ममता बनर्जी और सुवेंदु अधिकारी के बीच कांटे की टक्कर रही। इस दौरान कभी ममता बनर्जी आगे तो कभी सुवेंदु अधिकारी, लेकिन आखिरी राउंड की काउंटिंग में पासा पलटा और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी आगे हो गईं। ममता बनर्जी की जीत की घोषणा होने के बाद सुवेंदु अधिकारी ने आपत्ति दर्ज की इसके बाद नंदीग्राम सीट पर रिकाउंटिंग में ममता बनर्जी को हार का सामना करना पड़ा।

'प्रयास ' का पाँच दिवसीय नौवाँ नाट्य मेला

प्रयास नाट्य संस्था के निदेशक मिथिलेश कुमार सिंह के द्वारा बिहार के उपमुख्यमंत्री तारकेश्वर प्रसाद तथा मणिपुर के कलाकारों को सम्मानित करते हुए ।

बिन्देश्वर प्रसाद गुप्ता

कोरोना संकट काल में गुजर रहे देश के बावजूद कोरोना को अंगूठा दिखाते हुए, प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी लोकचेतना का प्रगतिशील कला मंच 'प्रयास ' (पटना) ने 5 - 9 मार्च को पांच दिवसीय नौ वाँ राष्ट्रीय प्रयास नाट्य मेला का आयोजन स्थानीय कालिदास रंगालय में धूमधाम से किया।

इस वर्ष की विशेषता यह थी कि प्रत्येक दिन मंचीय नाटक होने के अतिरिक्त , नुक्कड़ नाटक लोक गीत , संगीत ,नृत्य, मुखौटा नृत्य ,कठपुतली ,जादू का खेल तथा कवि सम्मेलन की प्रस्तुति विभिन्न नाटक दलों द्वारा की गई। साथ ही, प्रत्येक दिन पटना शहर के विभिन्न स्थलों के साथ-साथ नुक्कड़ मंच पर थांगा टा, मणिपुर के मार्शल आर्ट की भी प्रस्तुति हुई , जो मेला का प्रमुख आकर्षण बना।

जहाँ 5 मार्च को नाट्य मेला के प्रथम सत्र का उद्घाटन 'प्रयास' संस्था के उपाध्यक्ष बाँके बिहारी साव ने किया, वहीं द्वितीय सत्र का उद्घाटन महेश गोयल,मुख्य अतिथि सीजीएम, भारतीय स्टेट बैंक ऑफ इंडिया , विशिष्ट अतिथि राजकुमार नाहर , आलोक राज , आई.पी.एस ,निर्देशक संजय उपाध्याय एवं 'प्रयास' के अध्यक्ष पद्मश्री प्रोफेसर श्याम शर्मा तथा महासचिव मिथिलेश सिंह , सचिव रूपा सिंह के द्वारा सामूहिक दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन किया गया।

इन पाँच दिनों में, पहले दिन 'प्रयास ' ,पटना का मगही नाटक देवेंद्र मिसिर , दूसरे दिन,आशीर्वाद रंगमंडल , बेगूसराय का ' मकबरे का रखवाला ' , तीसरे दिन मगही अंतर्राष्ट्रीय परिषद , जनकपुर धाम (नेपाल) ,का नाटक - 'लत ', चौथे दिन - 'रूपवाणी '

प्रयास नाट्य संस्था के अध्यक्ष पद्मश्री श्याम शर्मा द्वारा नाट्य निर्देशक व लेखक पद्मश्री रतन थियाम को सम्मानित करते हुए।

प्रयास नाट्य मेला में नाटक मकबरे का रखवाला का एक दृश्य

वाराणसी ,का ' राम की शक्ति पूजा' तथा अंतिम पांचवें दिन , कोरस रिपेर्टरी थियेटर , इंफाल (मणिपुर) का " सॉग्स ऑफ द निम्फ्स " नाटक की प्रस्तुति की गई । उल्लेखनीय है, तीसरे दिन 7 मार्च को मगही नाटक 'लत ' के मंचन के बाद , कवि सम्मेलन का भी आयोजन हास्य कवि शंभू शिखर , दिल्ली की अध्यक्षता में किया गया , जिसमें अभय निर्भीक, पद्मिनी शर्मा , हेमंत पांडेय , कमल आग्नये, महेंद्र प्रसाद देहाती, राम कुमार प्रेमी ने काव्य-पाठ किया।

चौथे दिन, नाटक के बाद भोजपुरी गायिका ्नेहा सिंह राठौड़ , मगही गायिका खुशबू उत्तम एवं मैथिली गायक अमर आनंद तथा गायिका प्रिया राज की जोड़ी द्वारा लोक गीत प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर नुक्कड़ नाटकों- बिहार पुलिस, पटना का ' अभी पिया से बना के रखे दूरी ' (लेखक व निर्देशक -मिथिलेश सिंह) , वो वूमनिया, पटना का 'ओ री चिरैया ' (लेखक व निर्देशक- रूबी खातून), सक्षम , पटना का ' हम हैं सक्षम ' (लेखक- मिथिलेश सिंह ,निर्देशक- उदय कुमार), सवेरा जन उत्थान सामाजिक संस्थान , पटना का ' परंपरा हाट ' (लेखक- आदर्श वैभव, निर्देशक- निखिल रंजन) , लोक गीत मैथिली -अमर आनंद , भोजपुरी - नेहा सिंह राठौर, मगही- खुशबू उत्तम , और अंतिम दिन 9 मार्च को नृत्य एवं संगीत , कठपुतली (किलकारी, पटना), मुखौटा (ओम प्रकाश) , सुगम संगीत (डा.सुनैना कुमारी) , लौंडा डांस (कुमार उदय सिंह) की भी प्रस्तुति की गई।

पूरे नाट्य मेला के आयोजन में पद्मश्री रतन थियाम, इंफाल (मणिपुर) की नाट्य संस्था ' कोरस रिपेटेर्री थिएटर ' का पद्मश्री रतन थियाम लिखित व निर्देशित ' अप्सराओं का गीत ' - "सॉन्ग ऑफ द निम्फ्स") 'का भावपूर्ण मंचन तथा नुक्कड मंच पर मणिपुर के ' मार्शल आर्ट ' की प्रस्तुति नाट्य मेला का मुख्य आकर्षण बना जो इस मेला की विशेष उपलब्धि रही।

समापन समारोह में हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी रंग निर्देशक , ' योगेश चंद्र श्रीवास्तव सम्मान- 2021' सुविख्यात श्री थवई थियाम , इंफाल (मणिपुर) को प्रदान किया गया । वरिष्ठ रंगकर्मी महावीर सिंह आजाद सम्मान-2021 ख्याति प्राप्त चित्रकार एवं रंग जगत की शख्सियत सुमन कुमार,पटना (बिहार) तथा युवा रंगकर्मी आर.के.गोल्डी सम्मान 2021 , नाट्य कलाकार समीर कुमार, पटना, बिहार को प्रदान किया गया।

सम्मानित करने वाले थें, वरिष्ठ रंगकर्मी संजय उपाध्याय, कवि आलोक धन्वा एवं कथाकार ह्रषिकेश सुलभ। प्रयास नाट्य संस्था के अध्यक्ष श्याम शर्मा ने मणिपुरी नाटक "सॉन्ग ऑफ द निम्फ्स " -' अप्सराओं का गीत ' के लेखक व निर्देशक वरिष्ठ रंगकर्मी पद्मश्री रतन थियाम को सम्मानित किया।

यह नाटक हमारे संस्कारों और परंपराओं के सामने आने वाली कई चुनौतियों को समझने की कोशिश करता है जो हमारे पूर्वजों से विरासत में मिली ।हमारी संस्कृति की पहचान होती है । इस नाटक की विषय वस्तु आधुनिकता की नहीं , अतीत ,0वर्तमान और भविष्य के संगम के रूप में कार्य करती है।

प्रयास नाट्य मेला का समापन, बिहार के उपमुख्यमंत्री तारकेश्वर प्रसाद , मुख्य अतिथि के द्वारा हुआ। कार्यक्रम को सुश्री तबस्सुम ने संचालित किया। मणिपुर से आये मार्शल आर्ट - ' थांग टा ' के कलाकारों ने जबर्दस्त प्रस्तुति की । टीम लीडर ने बताया कि इस तरह के परफॉर्मेंस तैयार करने में वर्षों का वक्त लग जाता है।

प्रयास नाट्य मेला में इंफाल , मणिपुर की नाट्य संस्था कोरस रेपेर्टरी थियेटर द्वारा मंचित नाटक साँग ऑफ द निम्फ्स का दृश्य।

एनएसए के दुरुपयोग को लेकर सवालों में यूपी सरकार, हाईकोर्ट ने 120 में 94 केस किए रद्द

एक बार फिर यूपी सरकार ठरअ के दुरुपयोग को लेकर सवालों के घेरे में है। इलाहाबाद हाई कोर्ट ने उत्तर प्रदेश की योगी सरकार को झटका दिया है। योगी सरकार की तरफ से दर्ज कराए गए राष्ट्रीय सुरक्षा कानून (ठरअ) के तहत 120 मामलों में से 94 मामलों को कोर्ट ने रद्द कर दिया है। कोर्ट ने 120 मामलों की सुनवाई में यह फैसला दिया है।

दरअसल यूपी में जनवरी 2018 से लेकर दिसबंर 2020 तक एनएसए के तहत 120 मामले दर्ज कराए गए थे। जिनमें से 94 मामलें रद्द कर दिए गए। रद्द किए गए 94 मामलों में से 32 मामले डीएम की तरफ से दर्ज कराए गए थे। बता दें कि, इन मामलों में कोर्ट ने कैद किए गए लोगों को भी छोड़ने के आदेश दिए हैं। अंग्रेजी अखबार इंडियन एक्सप्रेस ने कोर्ट में दर्ज रासुका के मामलों का अध्ययन किया। जिसमें सभी मामलों में एक खास पैटर्न नजर आया है।

गौहत्या के आरोप सबसे ऊपर

जिन मामलों में रासुका लगाया गया है उनमें गौहत्या के मामले सबसे ज्यादा हैं। कुल 41 मामले ऐसे हैं जिनमें गौहत्या का आरोप लगाया गया है, ये हाईकोर्ट पहुंचे कुल मामलों के एक तिहाई के बराबर हैं। इन सभी मामलों में जिन्हें आरोपी बनाया गया है वो अल्पसंख्यक समुदाय के हैं। इन पर गौहत्या के लिए एफआईआर दर्ज की गई और इन्हें जिलाधिकारी के आदेश पर हिरासत में लिया गया।

बता दें कि, इनमें से 30 मामलों में हाई कोर्ट ने यूपी प्रशासन को तगड़ी फटकार लगाते हुए आदेश को रद्द कर दिया और याची को फौरन रिहा करने के आदेश दिए। बाकी बचे 11 मामले में से भी सिर्फ एक मामला ऐसा था जिसमें हिरासत बरकरार रह सकी। उसमें भी लोवर कोर्ट और बाद में हाईकोर्ट ने यह कह कर जमानत दे दी कि आरोपी को न्यायिक हिरासत में रखने का कोई आधार नहीं है। इस पड़ताल में कुछ मुख्य बातें जो सामने आई हैं वो कुछ इस तरह हैः-

> यूपी में जनवरी 2018 से लेकर दिसबंर 2020 तक एनएसए के तहत 120 मामले दर्ज कराए गए थे। जिनमें से 94 मामलें रद्द कर दिए गए। रद्द किए गए 94 मामलों में से 32 मामले डीएम की तरफ से दर्ज कराए गए थे। बता दें कि, इन मामलों में कोर्ट ने कैद किए गए लोगों को भी छोड़ने के आदेश दिए हैं। अंग्रेजी अखबार इंडियन एक्सप्रेस ने कोर्ट में दर्ज रासुका के मामलों का अध्ययन किया। जिसमें सभी मामलों में एक खास पैटर्न नजर आया है।

झ 11 मामलों में, अदालत ने आदेश पारित करते हुए डीएम द्वारा दिमाग का सही इस्तेमाल नहीं करने का हवाला दिया है।

13 मामलों में, अदालत ने कहा कि हिरासत में लिए गए शख्स को एनएसए को चुनौती देने के लिए सही ढंग से प्रतिनिधित्व करने का अवसर से वंचित किया गया था। सात केस में, अदालत ने कहा कि ये मामले कानून और व्यवस्था के दायरे में आते हैं और एनएसए लागू करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

6 मामलों में कोर्ट ने पाया कि हिरासत में लिए गए आरोपी की कोई आपराधिक पृष्ठभूमि नहीं थी।

कॉपी-पेस्ट की कहानी

इन सभी एफआईआर को देखकर ऐसा लग रहा था कि मानों इन्हें कट-पेस्ट किया गया हो। करीब 9 मामलों में, एफआईआर के आधार पर एनएसए लगाया गया था जिसमें दावा किया गया था कि गो हत्या को लेकर अज्ञात मुखबिर की खबर के आधार पर पुलिस ने कार्रवाई की थी।13 मामले उन एफआईआर के आधार पर थे, जिनमें दावा किया गया था कि गो हत्या कथित तौर पर खुले कृषि क्षेत्र या एक जंगल में हुआ था। 9 मामलों में, डीएम ने एफआईआर पर भरोसा करते हुए कहा कि कत्ल कथित तौर पर एक निजी आवास की चार दीवारी के अंदर हुआ था और पांच मामले में, डीएम ने एफआईआर पर भरोसा किया जिसमें कहा गया था कि एक दुकान के बाहर कथित रूप से गो हत्या हुई थी। इन सभी में एक बात और गौर करने वाली थी जिसमें एफआईआर में लिखी गई बात ही नहीं, यहां तक कि एनएसए लगाने के आदेशों में डीएम द्वारा बताए गए आधार भी करीब-करीब एक जैसे हैं। इन मामलों में गो हत्या से जुड़े सात मामलें में आरोप लगाते हुए, एनएसए आदेश में लिखा है कि भय और आतंक के माहौल ने पूरे क्षेत्र को घेर लिया है। साथ ही छह मामले ऐसे है जिनमें ठरअ के आदेशों में छह समान बातों का इस्तेमाल किया गयाः कुछ अज्ञात व्यक्ति मौके से भाग गए; घटना के कुछ मिनट बाद, पुलिस कर्मियों पर हमला किया गया; पुलिस पार्टी पर हमले के कारण, लोगों ने भागना शुरू कर दिया और स्थिति तनावपूर्ण हो गई; लोग सुरक्षित स्थान पर पहुंचने के लिए दौड़ने लगे; माहौल के कारण, लोग अपने रोज मर्रा के काम में शामिल नहीं हो रहे हैं; आरोपी के कार्य के कारण, क्षेत्र की शांति और कानून और व्यवस्था की स्थिति बहुत खराब हो गई थी।

क्या कहती है यूपी सरकार ?

इस पूरे मामले पर यूपी सरकार से भी सवाल किया गया है। इस खबर को लेखर विस्तृत सवाल उत्तर प्रदेश के मुख्य सचिव आर।के। तिवारी को भेजे गए। इनमें पूछा गया है कि जिलाधिकारियों द्वारा जारी किए गए आदेशों को हाईकोर्ट में रद्द किए जाने के बाद क्या कुछ सुधार किया गया है? मुख्य सचिव से यह भी पूछा गया है कि, कोर्ट के आदेश से यह नहीं लगता कि जिलाधिकारियों के रासुका लगाने के अधिकारों पर सख्त नजर रखी जाए? उनसे मामलों में सरकार द्वारा दोबारा अपील किए जाने के बारे में भी पूछा गया है। इन सभी सवालों का अखबार को कोई जवाब नहीं मिला है।

किस स्थिति में सरकार लगा सकती है ये कानून?

इस कानून राष्ट्रीय सुरक्षा को रासुका भी कहा जाता है, राष्ट्रीय सुरक्षा में बाधा डालने वालों लोगों पर नकेल कसने के लिए बनाया गया है। सीधे तौर पर राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम-1980, देश की सुरक्षा के लिए सरकार को अधिक शक्ति प्रदान करने से संबंधित ये कानून है। अगर सरकार को लगता कि कोई व्यक्ति कानून-व्यवस्था को सही तरीके से चलाने में उसके सामने बाधा उत्पन्न हो रही है तो वह उसे सरकार एनएसए कानून के तहत गिरफ्तार करने का आदेश दे सकती है। इसके अलावा किसी समय सरकार को ये लगता है कि कोई व्यक्ति आवश्यक सेवा की आपूर्ति में बाधा बन रहा है तो वह उसे एनएसए के तहत गिरफ्तार करवा सकती हैं।

2018 से देश भर कितने लोगों पर लगा ये कानून?

वर्ष 2018 में, देश भर में रासुका के तहत 697 लोगों को हिरासत में लिया गया जिसमें से 406 को समीक्षा बोर्डो द्वारा रिहा किया गया जबकि 291 हिरासत में हैं। मध्य प्रदेश में, वर्ष 2017 और वर्ष 2018 में एनएसए के तहत 795 लोगों को हिरासत में लिया गया था। समीक्षा बोर्डो द्वारा 466 लोगों को रिहा किया गया जबकि 329 हिरासत में हैं।

> “इन सभी एफआईआर को देखकर ऐसा लग रहा था कि मानों इन्हें कट-पेस्ट किया गया हो। करीब 9 मामलों में, एफआईआर के आधार पर एनएसए लगाया गया था जिसमें दावा किया गया था कि गो हत्या को लेकर अज्ञात मुखबिर की खबर के आधार पर पुलिस ने कार्रवाई की थी।

तीरथ सिंह बने मुख्यमंत्री ‘अपना पत्ता’ किया फिट

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री को हटा कर भाजपा ने अपने नेताओं को संदेश देने का काम किया है कि हर विद्रोह को दबाया जाएगा। कांग्रेस की तरह अब भाजपा में भी विद्रोही स्वरों को दबाने के लिए पार्टी नेताओं पर हाईकमान के फैसले थोपे जाने की शुरूआत हो गई है। उत्तराखंड में भाजपा नेताओं के बीच विद्रोह का प्रभाव अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव पर न पड़े, इस के लिए पार्टी हाईकमान ने स्थानीय नेताओं की राय जाने बिना अपने फैसले से नया मुख्यमंत्री चुना। स्थानीय नेताओं के गुस्से को दबाने के लिए ऐसा फामूर्ला 80 के दशक में कांग्रेस में अपनाया जाता था, जिस में कांग्रेस हाईकमान ताश के पत्तों की तरह मुख्यमंत्रियों को बदलता था। वर्ष 1982 में श्रीपति मिश्रा अचानक उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बनाए गए थे। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता थे। इस के पहले वे विधानसभा अध्यक्ष भी थे।

श्रीपति मिश्रा ने वाराणसी तथा लखनऊ विश्वविद्यालयों में पढ़ाई की थी। 1962 में वे पहली बार विधानसभा सदस्य के रूप में निर्वाचित हुए। कई महत्त्वपूर्ण पदों पर रहने के बाद भी उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री पद की दौड़ में कभी उन का नाम नहीं लिया गया। अचानक 19 जुलाई, 1982 को उस समय की कांग्रेस नेता इंदिरा गांधी ने श्रीपति मिश्रा को उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री बना दिया 2 अगस्त, 1984 तक वे उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे। श्रीपति मिश्रा को जिस दौर में मुख्यमंत्री बनाया गया उस समय मुख्यमंत्री पद की दौड़ में कांग्रेस के कई कद्दावर नेता थे। साल 2000 में श्रीपति मिश्रा से जब मेरी उन के लखनऊ स्थित सरकारी आवास में मुलाकात हुई थी तब सरस सलिल के लिए रिटायर मुख्यमंत्री के रूप में उन से बात की थी। उस समय उन्होंने कहा था, उन के नाम पर कोई विवाद नहीं था,

इस कारण हाईकमान उन को पंसद करता था। हाईकमान ने ही उन को

> “श्रीपति मिश्रा ने वाराणसी तथा लखनऊ विश्वविद्यालयों में पढ़ाई की थी। 1962 में वे पहली बार विधानसभा सदस्य के रूप में निर्वाचित हुए। कई महत्त्वपूर्ण पदों पर रहने के बाद भी उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री पद की दौड़ में कभी उन का नाम नहीं लिया गया। अचानक 19 जुलाई, 1982 को उस समय की कांग्रेस नेता इंदिरा गांधी ने श्रीपति मिश्रा को उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री बना दिया ।

मुख्यमंत्री बनाया था। 1980 के बाद जब इंदिरा गांधी ने कांग्रेस को अपने हिसाब से चलाना शुरू किया तो राज्यों में मुख्यमंत्री बनाने का काम विधायकों की जगह हाईकमान के हाथ में आ गया था। राज्यों के मुख्यमंत्रियों को अफसर की तरह बनाया और हटाया जाता था। कहावत थी कि मुख्यमंत्री ताश के पत्तों की तरह से फेंटे जाते थे। केवल उत्तर प्रदेश ही नहीं, कांग्रेसशासित हर राज्य में मुख्यमंत्री के चुनाव का काम हाईकमान करता था। कांग्रेस का हाईकमान तब इतना पावरफुल था कि उसे लगता था कि राज्यों में चुनाव उस के नाम पर जीता जाता है। ऐसे में उसे मनचाहे ढंग से मुख्यमंत्री चुनने का अधिकार है। कांग्रेस की इस सोच से दमदार नेताओं का पतन शुरू हो गया। परिणामस्वरूप एक दशक में ही पार्टी का राज्यों से जनाधार टूटने लगा। पार्टी सिमटने लगी। विरोध को दबाने के लिए उत्तराखंड से निकला संदेश श्रीपति मिश्रा का जिक्र उत्तराखंड में बनाए गए नए मुख्यमंत्री तीरथ सिंह रावत के संदर्भ में कर रहे हैं। ताश के पत्तों की तरह फेंटे जाने की कांग्रेसी बीमारी भारतीय जनता पार्टी के वर्तमान ताकतवर हाईकमान को भी लग चुकी है।

साल 2000 में उत्तराखंड को उत्तर प्रदेश से अलग राज्य बनाया गया। 21 सालों में 10 मुख्यमंत्री कुरसी पर बैठ चुके हैं। यह हालत तब हुई जब उत्तराखंड में सत्ता कभी कांग्रेस और कभी भाजपा के साथ रही। दोनों ही दलों ने मुख्यमंत्री के नाम पर अपनेअपने नेताओं को ताश के पत्तों की तरह फेंटा। उत्तराखंड में त्रिवेंद्र सिंह रावत की जगह पर पौड़ी गढ़वाल से लोकसभा सांसद तीरथ सिंह रावत को मुख्यमंत्री बनाया गया है। वे राज्य के 10वें मुख्यमंत्री हैं। भाजपा विधायक मंडल दल की मीटिंग में नए नेता के रूप में सब से पहले तीरथ सिंह रावत का नाम चुना गया। तीरथ सिंह रावत के नाम पर हाईकमान की मोहर पहले ही लग चुकी थी, इस कारण विधायक मंडल दल की मीटिंग में कोई हंगामा या विरोध नहीं हुआ। केंद्रीय पर्यवेक्षक के रूप में रमन सिंह और प्रदेश प्रभारी दुष्यंत कुमार गौतम पूरे प्रकरण पर नजर रखे थे। अगले साल उत्तराखंड विधानसभा का चुनाव होना है। इस फेरबदल से विधायकों की नाराजगी को कम करने का प्रयास किया जा रहा है। त्रिवेंद्र सिंह रावत की जगह उत्तराखंड के मुख्यमंत्री बनने की रेस में पूर्व मुख्यमंत्री और केंद्रीय शिक्षामंत्री रमेश पोखरियाल, राज्यमंत्री धन सिंह रावत, सत्यपाल महाराज, अजय भट्ट और राज्यसभा सदस्य अनिल बलूनी जैसे कई नाम दावेदार के रूप में देखे जा रहे थे।

सांसद तीरथ सिंह रावत का नाम चर्चा से बाहर था। इस के बाद भी जब उन को मुख्यमंत्री बनाया गया तो सभी को हैरानी हुई। ऐसे में यह चर्चा होने लगी कि तीरथ सिंह रावत इतने ताकतवर कैसे हो गए कि भाजपा ने उन को मुख्यमंत्री बना कर अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव का सेनापति बना दिया। तीरथ सिंह रावत संघ यानी आरएसएस के प्रमुख सदस्य रहे हैं। संघ की विचारधारा का उन पर बहुत असर है। संघ परिवार के करीबी पौड़ी जिले के सीरों गांव के रहने वाले तीरथ सिंह रावत 1992 में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के सदस्य के रूप में गढ़वाल विश्वविद्यालय के अध्यक्ष बने। 1997 में वे उत्तर प्रदेश की विधानपरिषद के सदस्य बने। साल 2000 में जब अलग उत्तराखंड का गठन हुआ तो अंतरिम सरकार में वे पहले शिक्षामंत्री बने। 2007 में भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष और 2012 के विधानसभा चुनाव में विधायक चुने गए। गुटबाजी के चक्कर में 2017 के विधानसभा चुनाव में सिटिंग विधायक होने के बाद भी उन का टिकट काट दिया गया।

2019 में लोकसभा का टिकट पा कर सांसद बने। मुख्यमंत्री के रूप में किसी भी सियासी चर्चा में इन का नाम नहीं आया था। तीरथ सिंह रावत का नाम संघ और संगठन के मेहनती नेता के रूप में लिया जाता था। यही वह गुण था जिस की वजह से उन्हें मुख्यमंत्री बनाया गया। तीरथ सिंह रावत उत्तराखंड विधानसभा के सदस्य नहीं हैं। ऐसे में वे लोकसभा की अपनी सीट से इस्तीफा देंगे और फिर उत्तराखंड विधानसभा की किसी सीट को खाली करा कर विधानसभा का चुनाव लड़ेंगे। तीरथ सिंह रावत ने मीडिया के साथ अपनी पहली बातचीत में कहा, केंद्रीय नेतृत्व से बात कर के कैबिनेट का गठन होगा। इस बयान से भी साफ है कि हाईकमान का कितना प्रभाव है। यही कुछ फामूर्ला उत्तराखंड के बड़े भाई कहे जाने वाले उत्तर प्रदेश में पहले किया जा चुका है। 2017 के विधानसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश में भाजपा ने बहुमत से सरकार बनाई।

मुख्यमंत्री का नाम चुनने में भाजपा के नेताओं को दरकिनार कर के गोरखपुर

के सांसद योगी आदित्यनाथ को मुख्यमंत्री बना दिया गया। वह फैसला भी हाईकमान का था। योगी को मुख्यमंत्री बनाने के पीछे की सब से बड़ी वजह यह थी कि उन को भाजपा धर्म का ब्रैंड बनाना चाहती थी। आज भाजपा हर प्रदेश के चुनाव में योगी का प्रयोग धर्म के चेहरे के रूप में कर रही है। विवादों से निबटने की जुगत चुने गए विधायकों की जगह पर हाईकमान द्वारा थोपे जाने वाले नेताओं को कुरसी पर बैठाने के पीछे प्रदेश के नेताओं में होने वाले विवाद हैं। कांग्रेस में भी 1980 के बाद ऐसे विवाद शुरू हो गए थे। 2014 में लोकसभा चुनाव जीत कर भाजपा ने जब केंद्र में सरकार बनाई तो कई प्रदेशों में उस ने ऐसे नेता चुने जिन की कोई खास पहचान न थी। नए चेहरों को आगे लाने का काम भाजपा ने हर स्तर पर शुरू किया।

हालांकि, ज्यादातर ऐसे चेहरे सफल नहीं हुए। इस से पार्टी के अंदर बगावत तेज होने लगी। उत्तर प्रदेश में 100 से अधिक विधायकों ने विधानसभा में ही धरना दिया था। ऐसे में अब भाजपा हाईकमान ने अपने मन से फैसले करने शुरू कर दिए हैं। या यों कहें कि कांग्रेस की तरह अब भाजपा ने भी हाईकमान स्तर पर फैसले थोपने शुरू कर दिए हैं। छत्तीसगढ़ में रमन सिंह जब मुख्यमंत्री थे तब उन के खिलाफ भाजपा में विद्रोह था। भाजपा ने चुनाव के पहले अपने 3 बार के मुख्यमंत्री रमन सिंह को हटाना उचित न सम झा, परिणामस्वरूप रमन सिंह के नेतृत्व में भाजपा वहां चुनाव हार गई। अब भाजपा विद्रोह करने वाले अपने नेताओं की नाराजगी को खत्म करने के लिए हाईकमान स्तर पर फैसले लेने लगी है। भाजपा अप्रत्याशित रूप से ऐसे नेताओं का चयन करने लगी है जो विवादों से निबटने में सफल होते हैं। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री को हटा कर भाजपा हाईकमान ने अपने नेताओं को कड़ा संदेश दे दिया है कि उन के विद्रोह को दबा दिया जाएगा।

> “सांसद तीरथ सिंह रावत का नाम चर्चा से बाहर था। इस के बाद भी जब उन को मुख्यमंत्री बनाया गया तो सभी को हैरानी हुई। ऐसे में यह चर्चा होने लगी कि तीरथ सिंह रावत इतने ताकतवर कैसे हो गए कि भाजपा ने उन को मुख्यमंत्री बना कर अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव का सेनापति बना दिया। तीरथ सिंह रावत संघ यानी आरएसएस के प्रमुख सदस्य रहे हैं।

मेष गुरु की कृपा से भाग्य की बृद्धि होगी।कर्म स्थान का शनि मेहनत के बाद ही सफलता देगा।शनिबार की संध्या में लड्डू गरीबों में बांटे।सेहत का ध्यान रखें।भगवान श्री सूर्यनारायण को अर्ध्य प्रदान करें। शुभ अंक 1 और शुभ रंग लाल है।

बृषभ मन खिन्न रहेगा।बहुत मेहनत के बाद सफलता मिलेगी।जीवन में आनंद का वातावरण बनाने के लिए दुर्गासप्तशती का पाठ करें।विद्यार्थी के लिए और प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अनुकूल अवसर हैं। शुभ अंक 2 और शुभ रंग सफेद या ऑफ वाइट।

मिथुन स्वास्थ्य का ध्यान रखें।प्रतिष्ठा तो मिलेगी।लेकिन धनागमन में थोड़ी परेशानी होगी।अष्टम शनि के लिए चांदी का टुकड़ा अपने पास रखें।दशम सूर्य आपके जीवन में विशेष कृपा बनाएगा।मा के महालक्ष्मी रूप की पूजा करें। शुभ अंक 3 रंग हरा और लाल।

कर्क सेहत का ध्यान रखना बहुत जरूरी है।घर के स्त्री पक्ष का सेहत चिंता का कारण बनेगा।प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अनुकूल समय है।हनुमान जी की आराधना करें।बजरंगबाण का पाठ करें। शुभ अंक 7। शुभ रंग- गुलाबी

सिंह मत्र के वेश में छुपे शत्रु से सावधानी की जरूरत है।श्री लुक्ष्मी नारायण की पूजा से धन लाभ होगा।संध्या प्रहर घी का चतुर्मुख दीपक अपने घर के मुख्यद्वार पर प्रतिदिन जलाए।उत्सव और मांगलिक कार्य की बातें करने का उपयुक्त समय है। शुभ रंग नीला। शुभ अंक 8।

कन्या पंचम शनि करियर के क्षेत्र में अच्छे अवसर देंगे।विद्या व बुद्धि से सफलता प्राप्त होंगे।गुरु के प्रभाव से लीवर या पेट की समस्या रहेगी। महामृत्युंजय मंत्र का जाप या श्रवण करें। शुभ रंग पीला। शुभ अंक 3।

बृश्चिक आपके आराध्य श्री लक्ष्मी नारायण की कृपा से धन आगमन का योग है।भाई के लिए समय अनुकूल नही है।बाएं सुर बाले पीले गणपति का तस्बीर घर में रखें।प्रतिष्ठा व सम्मान का योग है। शुभ रंग सफेद। शुभ अंक 5।

तुला भाग्य का राहु राजनीतिक व सामाजिक क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करेंगे।गुरु की कृपा से शत्रु व रोग का नाश होगा।शनि माता के स्वास्थ्य के लिए ठीक नही है।चांदी के पात्र से गाय का कच्चा दूध नदी में बहाएं।अनुकूलता बनी रहेगी। शुभ रंग लाल। शुभ अंक 4।

मकर जिद्द छोड़ना होगा।बाएं हाथ की कलाई में पीला धागा बांधने सेनुक्सान कम होगा।राहु अचानक व विचित्र परिणाम दे सकता है।कालभैरव जी की पूजा करें। शुभ रंग सफेद। शुभ अंक 7।

कुम्भ झूठ से नफरत होगी।झूठे लोगों से सामना होगा।लाभ होंगे लेकिन मन के अनुकूल नही।लेकिन मान सम्मान बढेगा।मंगल कार्य के लिए आगे बढ़े।आवश्यकता को कम करें।चोट चपेट से बचना होगा।हल्दी का गांठ अपने पर्स में रखें।ॐ नमो नारायणाय का जाप करें। शुभ रंग-गुलाबी। शुभ अंक 8।

धनु धन का आगमन होगा।लेकिन सूर्यास्त के बाद दूध व दही का सेवन नही करें।आत्मभिमान से बचना होगा।अहंकार को हावी नही होने दे।हनुमान चालीसा का पाठ करें। शुभ अंक 6। शुभ रंग हरा।

मीन सूर्य की कृपा से पद व प्रतिष्ठा की बृद्धि होगी।गुस्सा पर नियंत्रण रखें।दुश्मन से सचेत जरूरी है।नजर बचना होगा।घर की शांति राहु के कारण नियंत्रण में नही रहेगा। सफेद कपड़े में सिंधा नामक घर के मुख्य द्वार पर बांधे। शुभ रंग -हरा। शुभ अंक 9।

निजी अस्पतालों में ऑक्सीजन की समुचित व्यवस्था करें सरकार : डॉ संतोष कुमार

Dr. Santosh Kumar
Director

व्यवस्था की जा रही है तमाम चुनौतियों के बीच और हम इस बीमारी से लड़ने में सबका सहयोग कर रहे हैं लेकिन ऑक्सीजन की कमी से परेशानी पैदा हो रही है जिसे सरकार द्वारा समुचित व्यवस्था कर के दूर किया जाना चाहिए

शिव शंकर विक्रांत की रिपोर्ट

पटना फोर्ड हॉस्पिटल 90 फीट में कोविड मरीजों के बेहतर इलाज की व्यवस्था की गई है और जिलाधिकारी द्वारा घोषित 90 अस्पतालों की लिस्ट में यह अस्पताल भी शामिल है लेकिन अस्पताल को ऑक्सीजन की कमी का सामना करना पड़ा है ऑक्सीजन की आपूर्ति व्यवस्थित ढंग से नहीं होने के कारण यहां इलाज में बाधा आ रही है हालांकि सभी कर्मी पूरी तन्मयता से लगे हुए हैं अस्पताल के डायरेक्टर डॉक्टर संतोष कुमार ने बताया कि यहां बेडो की व्यवस्था है जहां पर मरीजों को इलाज दिया जा रहा है इसके अलावा भी सभी को सपोर्ट देने की कोशिश की जा रही है लेकिन ऑक्सीजन की सप्लाई नियमित रूप से नहीं मिल रही है और आवश्यकता के अनुरूप नहीं मिल रही है जिससे तमाम परेशानी आ रही हैं उन्होंने जिलाधिकारी समेत प्रशासन के तमाम लोगों से अनुरोध किया है कि इस बाधा को जल्द से जल्द दूर करें डॉ संतोष ने कहा कि उनकी यूनिट में सभी लोगों को बेहतर इलाज देने की

के.बी.पी.एल

बिहारवासियों को ईद उल की हार्दिक शुभकामनाएं

देश का डीजल

प्रदूषण मुक्त

सस्ता दाम

माइलेज ज्यादा

KBPL™

KRRISHAY BIOFUELS

(Registered by Govt. of India)

(AN ISO 9001:2015) CERTIFIED COMPANY)
(AN ISO 14001:2015) CERTIFIED COMPANY)
(AN ISO 45001:2018) CERTIFIED COMPANY)

Corporate Office :

318, Maharaja Kameshwar Complex, Fraser Road
Infront Budh Smriti Park, Patna-800001
Website : www.krrishaybiofuels.com
Email : krrishaybiofuels@gmail.com
Mob. No. : 7541086226, 9709707583

बिहारवासियों को ईद की हार्दिक बधाई

अखिलेश कु. जायसवाल

समाजसेवी
एवं संरक्षक
उभरता बिहार

बिहारवासियों को ईद की हार्दिक बधाई

डॉ. संतोष कुमार

लेप्रोस्कोपिक सर्जन
एवं
संरक्षक
उभरता बिहार

बिहारवासियों को ईद की हार्दिक बधाई

प्रो. आर. के. पी. रमण

कुलपति
भूपेन्द्र नारायण मंडल
विश्वविद्यालय
मधेपुरा

बिहारवासियों को ईद की हार्दिक बधाई

मनोज कुमार

पुलिस अधीक्षक
सुपौल

बिहारवासियों को ईद की हार्दिक बधाई

वीणा कुमारी जायसवाल

अधिवक्ता
पटना उच्च न्यायालय
पटना

बिहारवासियों को ईद की हार्दिक बधाई

डॉ. राकेश कुमार

आर्थो सर्जन
एवं
संरक्षक
उभरता बिहार

बिहारवासियों को ईद की हार्दिक बधाई

गणेश कुमार

भगत आयरन स्टोर्स
सिंगेश्वर
मधेपुरा

उभरता बिहार

परिवार की ओर से
बिहारवासियों को
ईद की हार्दिक बधाई

FORD HOSPITAL, PATNA

A NABH Certified Multi Super-Speciality Hospital

PATNA

A 105-Bedded Hospital Run by Three Eminent Doctors of Bihar

उत्कृष्ट एवं अपनत्व की अनुभूति

Dr. Santosh Kr.

Dr. B. B. Bharti

Dr. Arun Kumar

PATIENT SAFETY & QUALITY OF CARE

NABH

PRE ACCREDITED

Best Promising Multi Speciality Hospital 2018 Bihar.

हृदय रोग चिकित्सा के लिए बेहतरीन टीम

2nd Multi Speciality NABH Certified Hospital of Bihar

फोर्ड हॉस्पीटल में उपलब्ध सेवाएं

क्लीनिकल सर्विसेस

- कार्डियोलॉजी
- क्रिटीकल केयर
- न्यूरोलॉजी
- स्पाईन सर्जरी
- नेफ्रोलॉजी एवं डायलेसिस
- ऑर्थोपेडिक एवं ट्रॉमा
- ओब्स एवं गॉबनेकोलौजी
- पेडिएट्रिक्स
- पेडिएट्रिक सर्जरी
- साइचिरेट्री एवं साइकोलॉजी
- रेस्पिरेट्री मेडिसिन
- यूरोलॉजी
- सर्जिकल ऑन्कोलौजी

Empaneelled with CGHS, ECR, CISF, NTPS, Airport Authority, Power Grid & other Leading PSUs, Bank, Corp. & TPS

New Bypass (NH-30) Khemnichak, Ramkrishna Nagar, Patna- 27
Helpline ; 9304851985, 9102698977, 9386392845, Ph.: 9798215884/85/86
E-mail : fordhospital@gmail.com web. : www.fordhospital.org